राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 1] चतुर्थ विधान सभा के प्रथम सत्र, 1967 का चतुर्थ दिवस [संख्या 5

शनिवार

दिनांक 6 मई, 1967

विधान सभा की बैठक मध्यान्ह पूर्व 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री निरंजननाथ आचार्य, अध्यक्ष, पदासीन)

तारांकित प्रश्नोत्तर

(सिंचाई, विद्युत्, राजस्व, पंचायत, अकाल सहायता, सार्वजनिक निर्माण, कृषि एवं सहकारिता विभाग)

श्री अध्यक्ष : प्रश्न।

श्री केशरी सिंह।

काला भाटा बांध की योजना

10. श्री केशरीसिंह (हिण्डोली) : क्या सिंचाई मन्त्री यह बताने का कष्ट करेंगे:-

(1) तहसील हिण्डोली (जिला बूंदी) में काला भाटा बांध की योजना क्या सरकार के विचाराधीन है ?

(2) अगर नहीं, तो क्यों नहीं ? और अगर हां, तो इसका सर्वे कब तक हो जावेगा ?

उप मन्त्री, सिंचाई विभाग (श्री मनफूलसिंह) : (1) केवल स्थल निरीक्षण किया गया है।

(2) सर्वे कब तक हो जायेगा यह अभी निश्चित नहीं कहा जा सकता है।

श्री केशरीसिंह : क्या सरकार यह मुनासिब नहीं समझती कि वह क्षेत्र जब अकाल से पीड़ित है तो जल्दी से जल्दी निरीक्षण करवा कर काम चालू कराया जावे ताकि अकाल पीड़ित जनता को राहत भी मिल सके और सरकार का काम भी जल्दी समाप्त हो ?

श्री मनफूलसिंह : जैसा निवेदन किया, स्थल का निरीक्षण किया जा रहा है और इसके पूरा होने के बाद काम शुरू कर दिया जावेगा।

श्री केशरीसिंह : कब तक ?

श्री मनफूलसिंह : शीघ्र ही।

श्री केशरीसिंह : इस शीघ्र की अवधि क्या है ?

(प्रश्न संख्या 11)

श्री अध्यक्ष : श्री भीमसेन।

(अनुपस्थित : कृपया आगे देखिये)

(प्रश्न संख्या 12)

श्री भीमसेन।

(अनुपस्थित : कृपया आगे देखिए)

Page No. 2

ग्राम पीपल्या का स्कूल भवन

13. श्री केशरीसिंह (हिण्डोली) : क्या पंचायत मन्त्री यह बताने का कष्ट करेंगे:—

(1) जिला बूंदी, पंचायत समिति, नेनवा के ग्राम पीपल्या के स्कूल के निर्माण के लिए सरकार की ओर से कितनी धनराशि दी गई है और श्रमदान के रूप में कितनी रकम समिति दे चुकी है ?

(2) इसके लिए नेनवा पंचायत समिति कितनी रकम मंजूर कर चुकी है ?

(3) कितनी रकम समिति दे चुकी है ?

(4) क्या यह सही है कि इस स्कूल के भवन पर पट्टियां पड़ चुकी हैं, पर आगे का कार्य पूरा नहीं हुआ है ।

(5) क्या इसका काम वारिश से पहिले पूरा हो जायेगा ?

पंचायत मन्त्री : (श्री परसराम मदेरणा): (1) पंचायत समिति द्वारा तीन सौ रुपया दिया गया। श्रमदान लगभग दो हजार का हुआ है ।

(2) तीन सौ रुपये ।

(3) तीन सौ रुपये ।

(4) जी हां ।

(5) कार्य की अभी तक की प्रगति से वर्षा से पहले पूरा होना सम्भव है ।

श्री केशरीसिंह : क्या यह सत्य है कि उस पर पट्टियां पड़ गई हैं और बरसात से पूर्व काम पूरा नहीं हुआ तो उस छत के गिर पड़ने का डर है ?

श्री परसराम मदेरणा : यह सही है कि पट्टियां गिरी हुई हैं और छत पूरी नहीं हुई है ।

श्री केशरीसिंह : तो क्या मैं आशा करूं कि बरसात से पहले काम मुकम्मिल हो जावेगा ?

श्री परसराम मदेरणा : पंचायत समिति को जो धनराशि सी० डी० एक्ट के नीचे दी जाती है वह ऐसे कामों के लिए दी जाती है। राज्य सरकार के बजट में ऐसी रकम का बहुत कम प्रोवीजन है । कुछ अधूरे काम जो पड़े हैं इनके राज्य सरकार हजार, दो हजार, तीन हजार से ज्यादा पंचायत समितियों को नहीं दे सकती । विकास अधिकारी ने सरकार को सूचना दी है कि अगर ग्राम पंचायत इस भवन को पूरा करने की मांग करेगी तो मांग पर विचार किया जावेगा ।

श्री केशरीसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मन्त्री महोदय का ध्यान इस ओर आकर्षित करूंगा कि सात सौ रुपये मन्जूर भी इसके लिए हो चुके हैं मगर अभी तक यह रुपया दिया नहीं है पंचायत को ।

श्री परसराम मदेरणा : ऐसी इत्तला मेरे पास नहीं है ।

श्री केशरीसिंह : कृपया तलाश की जावे ।

श्री अध्यक्ष : श्री रघुनाथ विश्नोई ।

सांचोरी नस्ल की मवेशी के लिये चारे व पानी की व्यवस्था ।

14. श्री रघुनाथ विश्नोई (सांचोर) : क्या अकाल सहायता मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सत्य है कि सांचोर तहसील में अकाल होने से सांचोरी नस्ल की

(श्री रघुनाथ विश्नोई)
मवेशी राजस्थान के जिलों में मारी-मारी फिर रही है और सरकार की ओर से मवेशियों को बचाने के लिये कोई व्यवस्था नहीं की गई है ? अगर हां, तो ऐसे अमूल्य धन को बचाने के लिये सरकार द्वारा प्रयत्न क्यों नहीं किये गये ? तथा अगर कोई व्यवस्थाएं की गई हैं तो वे क्या क्या हैं ?

(2) सांचोरी नस्ल की मवेशियों के लिये चारे एवं पानी की मुफ्त व्यवस्था अन्य जिलों में, जहां जहां से होकर मवेशी बाहर जा रही हैं, क्या क्या की गई हैं, अगर ? नहीं की गई, तो अब शीघ्र ही क्या क्या व्यवस्थाएं की जा रही हैं ?

(3) सांचोरी नस्ल की कुल कितनी मवेशी सांचोर से बाहर गई हैं और किन किन जिलों में से होकर तथा अब भविष्य में मवेशी कहां कहां जावेंगी और उनको जिन्दा रखने के लिये सरकार द्वारा क्या क्या व्यवस्थाएं की जावेंगी ?

(4) गुजरात सरकार से सांचोरी नस्ल की मवेशी के लिए सुविधा प्रदान कराने के संबंध में सरकार ने क्या क्या प्रयत्न किये हैं ?

उप-मंत्री अकाल सहायता विभाग (श्री गंगाराम) : (1) सांचोर तहसील से मवेशी जोधपुर, पाली, सिरोही जिलों में गई है। वहां राज्य सरकार ने मवेशियों के लिये सस्ते चारे की दुकानें खोली हैं, जिन पर चारा 12) रु. प्रति क्विन्टल की रियायती दर से बिकवाने की व्यवस्था की गई है। जालोर जिले में भी इस प्रकार की 12 दुकानें सस्ते चारे की खोली गई हैं। अकाल सहायता विभाग द्वारा समस्त जिलाधीशों को निर्देश दिये गये हैं कि उनके जिलों में अभाव ग्रस्त क्षेत्रों से आने वाले पशुओं के लिये सस्ते चारे की व्यवस्था व अन्य सभी प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जायं।

(2) मुफ्त चारे की व्यवस्था की आवश्यकता न समझी जाने पर नहीं की गई। जिन जिन जिलों से होकर सांचोर तहसील से मवेशी बाहर गई उन जिलों से पशुओं के लिये पानी की व्यवस्था हेतु कोई मांग प्राप्त नहीं होने के कारण पानी के लिये कोई विशेष व्यवस्था नहीं की गई, चूंकि अभी हाल ही में हुई वर्षा से स्थिति ठीक हो गई है। अतः मुफ्त चारा व पानी उपलब्ध करवाने की व्यवस्था नहीं की जा रही है।

(3) सांचोर तहसील के 1,13,187 गायें, बैल व बछड़े सांचोर तहसील से बाहर गये हैं। ये मवेशी जोधपुर, पाली, सिरोही जिलों में से होकर गई हैं। अब परिस्थितियां बाहर जाने के प्रतिकूल हैं। अतः मवेशी बाहर जाने की सम्भावना नहीं है। सस्ते घास डिपो पर उपलब्ध करवाने के अलावा और कोई व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं है।

(4) वर्ष 66-67 में गुजरात सरकार द्वारा राजस्थान प्रदेश से गुजरात प्रदेश में मवेशियों को ले जाने का प्रतिरोध किया गया था। किन्तु फिर भी ऐसी सूचना प्राप्त हुई है कि सांचोर तहसील से कुछ पशुपालक अपनी मवेशियों को राज्य सरकार से अनुमति प्राप्त किये बिना ही गुजरात प्रदेश में ले गये हैं ऐसी सूचना मिलने पर एक अधिकारी को भेज कर गुजरात सरकार से समुचित व्यवस्था करने हेतु प्रयत्न किया गया। इसके अतिरिक्त इस संबंध में जिलाधीश जालोर द्वारा गुजरात प्रदेश में कुछ जगहों पर सांचोर से गये हुए पशुपालकों की कठिनाईयों को दूर करने व चारे इत्यादि का

(श्री गंगाराम)
प्रबन्ध करने हेतु जिलाधीश व तात्लुकेदार बनास कांटा से सम्पर्क स्थापित कर कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न किया गया ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : आपने फरमाया पाली, जोधपुर, सिरोही में सस्ते चारे की दुकानें खोली गईं और घास उनके द्वारा दिया गया । मगर वास्तव में खोली गई तो ये किस माह में खोली गई और कितना कितना घास, कब कब किन किन को दिया गया इसके आंकड़े बतावें ताकि सही जानकारी प्राप्त कर सकूं । यह तो ठीक एन्सर है कि घास की दुकानें खोली गईं । खोली गईं तो किस किस महीने में खोली गई और कितने कितने मवेशियों को कब कब कितना कितना घास दिया गया इन पर से, यह बताएं ।

राजस्व मंत्री (श्री बृजसुन्दर शर्मा) : वह व्यवस्था जब की गई है तो सहायता तो मिली ही होगी । न मिलने की शिकायत हमारे पास आई नहीं ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : सिरोही जिले में किसी को घास नहीं दिया गया, न पाली जिले में ही दिया गया और न जोधपुर जिले में । आपके पास निश्चित आंकड़े इसके हों तो आप बता दीजिये ।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : यह डिटेल्स तो उपलब्ध नहीं हैं । पर जहां जहां से मवेशियों सरकार की अनुमति से गई हैं वहां वहां व्यवस्था अवश्य की गई है । परम्परानुसार बगैर सूचना दिये ले गये तो, वहां सूचना मिलने पर व्यवस्था की गई है ।

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : किस अधिकारी से इसके लिये अनुमति ली जाती है ?

श्री रघुनाथ विश्नोई : जब कि अप्रैल, मई और श्रावण महीने बरसात के थे सांचोर तहसील में चारा उपलब्ध नहीं हुआ था और मवेशी तो बहुत पहले जा चुके थे तो जिस समय एक्यूट फेमिन था तो राजस्थान सरकार ने जबाब दिया था कि व्यवस्था कर रहे हैं । अब आपकी व्यवस्था की इन्तजार में मवेशी को मरने थोड़े ही देते कि आपकी इजाजत मिलती और फिर जाती ?

श्री बृजसुन्दर : व्यवस्था इस प्रकार की कई जगह ऐसा है कि परम्परानुसार फेमिन होते ही लोग मवेशियों को लेकर चले जाते हैं । इसके बाद परम्परानुसार जाते आते रहते हैं तो मांग होती नहीं । जब परम्परानुसार इजाजत नहीं होती और जाते हैं तो घास नहीं होती तो स्टेट गवर्नमेंट से इन्तजाम किया जाता है । अब गुजरात में परम्परानुसार गये और वहां पर दिक्कत हुई तो बनास कांटा जिले के अधिकारियों के पास अपने अधिकारियों को भेजकर सम्पर्क कराया गया और घास की व्यवस्था की गई ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : माननीय अध्यक्ष जी आफिसर्स को बाद में भेजा गया । जब वास्तविक स्थिति की फेमिन कमिश्नर से शिकायत की, जिलाधीश से की तो उनके निर्देशानुसार पता लगाया तो मालुम पड़ा कि हजारों की तादाद में मवेशी हैं । जब कि सांचोर में फसल होती है तो गुजरात से हमारे यहां भेड़ें और मवेशी आते हैं और हम उनको अलाऊ करते हैं तो जब हमारे यहां अकाल या तो मैंने राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित किया था कि गुजरात से संबंध स्थापित किये जायें, वहां पर अच्छा चारा है और सस्ती दरों पर चारे की वहां से व्यवस्था की जाये

Page No. 5

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

क्योंकि सांचोर गुजरात की बोर्डर से लगा हुआ है। लेकिन इस ओर सरकार द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसके विपरीत प्राईवेट लोगों ने अपने पैसों से व्यवस्था की तो राज्य सरकार भी कोशिश करती तो सांचोर में सस्ते चारे का डिपो खोल सकती थी और सस्ती दर पर चारा उपलब्ध कराया जा सकता था लेकिन राज्य सरकार का इस ओर ध्यान नहीं गया। और इसका नतीजा यह हुआ कि प्राईवेट तौर से वहां से संबंध स्थापित करके वहां मवेशी ले गए और लोगों को बड़ी दिक्कतें पैदा हुईं और यहां तक हालत हुई कि लोगों को, नाजायज लोगों को पैसे भी देने पड़े और यहां तक वहां के कलेक्टर और ताल्लुकेदार को दरख्वास्त दी कि वहां से चारा लाने की इजाजत दी जाये और इस तरह से चारा उपलब्ध कराने की कोशिश की। वहां से चारा लाने की रोक है जब कि हम हमेशा फेसेलिटीज उनको देते हैं तो राज्य सरकार को गुजरात सरकार से एग्रीमेन्ट करना चाहिए। जब वह हमको लिखते हैं तो हम हमेशा उनकी मदद करते हैं इस रूप में राज्य सरकार ने उनको कुछ नहीं लिखा और न किसी प्रकार का ध्यान दिया और राज्य सरकार ने लापरवाही बरती। इसका नतीजा यह हुआ कि हजारों की तादाद में मवेशी मर गए। इसके अलावा मैं यह भी बताना चाहता हूं कि दूसरे जिलों में भी चारे की कोई व्यवस्था नहीं की गयी। आप कृपया यह भी बता दें कि 1 लाख के करीब आपने मवेशियों की संख्या बताई थी और यह इतनी प्रेशस वैल्थ है सांचोरी नसल कि यह मवेशी एक विशेष प्रकार के इलाके में ही रहते हैं और पहाड़ी इलाके में नहीं जा सकते और अगर जाते हैं तो मर जाते हैं कई जारों वर्ष के बाद पिछली साल ही ऐसा अकाल रहा जिसकी वजह से मवेशियों को कठिनाइयां उपस्थित हुईं तो राज्य सरकार की तरफ से कोई योजना नहीं बनी इस वजह से दिक्कत पैदा हुई। जो मवेशी गये थे उसमें कितने खत्म हो गए, आप कृपया यह बतायें कि कितने उनमें से मर गए और कितने बाकी बचे हैं? आप कह रहे हैं कि वहां पर व्यवस्था करने की जरूरत ही नहीं है, यह बात सही नहीं है। लेकिन आप संख्या बतायें कि कितने मर गए? इससे पता लगता है कि राज्य सरकार की तरफ से कोई कोशिश नहीं की गयी।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : यह तो बाद में ही पता चल सकेगा उनके आने के बाद में कि कितने मर गए कितने बाकी हैं।

श्री रघुनाथ विश्नोई : अन्य जिलों के बारे में क्या व्यवस्था है यह तो आपके पास इनफर्मेशन होनी चाहिए।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : जितना मालूम है

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : गुजरात और राजस्थान की सीमा का प्रश्न है और उनके संबंधों का भी प्रश्न है। क्या सरकार इस संबंध में कोई गुजरात के साथ समझौता करने का नहीं सोचती? यह दोनों तरफ की ही सुविधाओं को देखकर शायद लाभदायक होगा।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : पुराने जमाने में इस प्रकार की व्यवस्था थी कि राजस्थान की जितनी राज्य सरकारें थीं उनके समझौते दूसरी सरकारों से हुए थे उसी के अनुसार वह परम्परागत उसी इलाके में जाते थे और उसी के अनुसार काम चलता था लेकिन आगे व्यवस्था के लिए दोनों ही सरकारें मिलकर विचार करेंगी।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : क्या करना, क्या नहीं करना लेकिन कोई भी समझौता हो सकता है लाभदायक तो मैं आशा करता हूँ कि सरकार इस पर विचार करेगी।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : वहां पर विचार किया जायेगा।

श्री केसरी सिंह : (हिण्डोली) : चारा किस दर पर दिया जाता है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : 12 रु० क्विण्टल।

श्री केशरीसिंह : किस दर से खरीदा जाता है ?

(कोई जवाब नहीं दिया गया)

श्री अध्यक्ष : श्री डागा।

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : जब गायों की निकासी राज्य सरकार द्वारा बन्द थी तो वह किस राज्य अधिकारी से परमीशन लेकर जाती थी और क्या तरीका था परमीशन लेने का ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा: गायों की निकासी तो अभी बन्द की गयी है और उससे पहले की यह मवेशी गई हुई है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, चारे की व्यवस्था अच्छी तरह से नहीं हो पाई है और राज्य सरकार को अपने अधिकारियों से बात करके कोई एफर्टस करने चाहिए क्योंकि वहां पर ट्रान्सपोर्टेशन चार्जेज ज्यादा होने की वजह से चारा नहीं आ पाता है और इसकी व्यवस्था राज्य सरकार को करनी चाहिए।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : अभी क्वेश्चन आवर के बाद आफिसर कन्सर्न्ड को मैंने बुलाया है और माननीय सदस्य भी उस समय आ जायें तो बात करके यह मसला तय कर लेंगे।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट।

श्री रघुनाथ विश्नोई

सांचोर रानीवाड़ा सड़क

15. श्री रघुनाथ विश्नोई (सांचोर) : क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सत्य है कि सांचोर रानीवाड़ा सड़क अब तक 10 मील पक्की डामर की बनाना बाकी है ? अगर हां, तो क्या सरकार इस बाकी टुकड़े को इसी साल सम्पूर्ण कराने का विचार रखती है ?

(2) क्या यह सत्य है कि दांता से सांचोर तक दस मील बाकी सड़क के खर्चे का तखमीना बनकर सरकार के समक्ष आ चुका है ? अगर हां, तो उसकी मंजूरी कब तक हो जायेगी और सड़क का कार्य कब तक शुरू करा दिया जावेगा ?

(3) क्या यह सत्य है कि रेल्वे स्टेशन से सांचोर को मिलाने वाली एक मात्र यही एक सड़क है तथा सुरक्षा की दृष्टि से भी यह सड़क महत्वपूर्ण है ? अगर हां, तो इसका बाकी कार्य कब तक सम्पूर्ण करा दिया जावेगा।

सार्वजनिक निर्माण मंत्री (श्री अमीनुद्दीन अहमद) : (1) जी हां, रुपयों की कमी से इस सड़क का काम इस साल पूरा होना मुमकिन नहीं है।

Page No. 7

(श्री अमीनुद्दीन अहमद)

(2) जी हां, अर्थाभाव के कारण अभी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

(3) जी हां, आशा है चौथी योजना में काम पूरा हो जायेगा।

श्री रघुनाथ विश्नोई : काम चल रहा है तो किस टाइप का काम चल रहा है ?

श्री अमीनुद्दीन अहमद : इसमें फेमिन की तरफ से कुछ काम चल रहा है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : इस रोड के अन्दर अगर कुछ पैसा विभाग की तरफ से खर्च करके भी कोशिश की जाये तो यह सड़क जो कि 10 मील का टुकड़ा रहता है यह जब तक सड़क से मिलता नहीं है तो 20 मील जो सड़क बनी हुई है वह भी बेकार है। क्या राज्य सरकार विशेष रूप से प्रयत्न करेगी ? फिर सुरक्षा की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण रोड है और इसके ऊपर विशेष रूप से ध्यान दिया जायेगा ?

श्री अमीनुद्दीन अहमद : मेरा खयाल है कि इस पर पूरी तवज्जोह दी जायेगी।

श्री अध्यक्ष : श्री खेतसिंह

राज्य में रबी की फसल

16. श्री खेतसिंह (शेरगढ़) : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) राज्य में इस वर्ष रबी की फसल कैसी रही है ?

(2) क्या यह सही है कि होली पर हुई वर्षा से रबी की फसल को काफी बड़ा नुकसान हुआ है ? यदि हां, तो कितना और कहां नुकसान हुआ है ?

(3) इस फसल को देखते हुए राज्य सरकार को कितना धान भारत सरकार से मंगाना पड़ेगा ?

(4) राज्य को अन्न के मामले में स्वावलम्बी होने में कितना समय लगने का है ?

(5) "अधिक अन्न उपजाओ" अभियान को बढ़ाने के लिये राज्य सरकार क्या कदम उठाने वाली है ?

कृषि मंत्री (श्री परसराम मदेरणा) : (1) इस वर्ष वर्षा के अभाव को देखते हुए रबी में अनुमानतः खाद्यान्न उपज 15 लाख टन की थी। परन्तु जिला कृषि अधिकारियों से प्राप्त सूचना के अनुसार उत्पादन में कमी होने की सम्भावना है। रबी में पहले वांछित वर्षा न होने के कारण बारानी गेहूं, जौ और चने की उपज में कमी आना सम्भावित है। इस प्रकार सिंचित गेहूं की उपज में भी खास तौर से चम्बल क्षेत्र, उदयपुर व जयपुर के इलाकों में कुछ कमी होने की रिपोर्ट प्राप्त हुई है। इस वर्ष रबी की फसल पिछले वर्ष के मुकाबले कम होगी।

(2) मार्च, 1967 में असामयिक वर्षा और ओलों से रबी की फसल को कहीं कहीं नुकसान हुआ है, विशेष कर नुकसान होने की रिपोर्ट भरतपुर, जालौर, अलवर और उदयपुर के इलाकों से प्राप्त हुई है।

(3) यदि भारत सरकार 50 हजार टन अनाज प्रतिमास अलॉट कर दे तो अभाव ग्रस्त क्षेत्रों में तथा खास खास शहरों में उचित मात्रा में अनाज वितरित किया जा सकता है।

Page No. 8

(श्री परसराम मदेरणा)

(4) राजस्थान अन्न में सरप्लस राज्य है। जो कमी इस समय नजर आ रही है यह पिछले तीन वर्षों से सूखा पड़ने के कारण है।

(5) अधिक अन्न देने वाली फसलों की ओर इस वर्ष राज्य की ओर से अधिक ध्यान दिया जा रहा है। सन् 1967-68 की बुवाई करने के लिये निम्न लक्ष्य रखे गये हैं:—

खरीफ	रकबा एकड़ों में
(1) हाइब्रिड बाजरा	80 हजार
(2) हाइब्रिड ज्वार	10 हजार
(3) हाइब्रिड मक्का	45 हजार
(4) हाइब्रिड ताईधान (चावल)	2 हजार
योग :	137 हजार

रबी	
(1) मैक्सीकन गेहूं	125 हजार

श्री रामकिशन (वैर) : यह जो आपने ओलों से फसल को नुकसान बताया है तो क्या आपके पास इसका कोई अनुमान है कि कि कितना नुकसान हुआ है?

श्री परसराम मदेरणा : यह तो अलग-अलग जिलों का अलग-अलग है। एक-एक जिले में कितना नुकसान हुआ है इसकी मेरे पास विस्तृत रिपोर्ट नहीं आई है लेकिन कुछ कृषि जिला अधिकारियों ने राज्य सरकार के पास में सूचना दी है कि इन-इन जिलों में इतना-इतना नुकसान है। यह कहीं पर पन्द्रह फी सदी, कहीं पर बीस, कहीं पर तीस और कहीं-कहीं पर तो चालीस फी सदी तक नुकसान होने का अनुमान है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : क्या कोई स्पेशल गिरदावरी कराई गई है? ओले गिरने से पहले ही गिरदावरी तो हो चुकी थी और उसके बाद में ओले पड़े। तो फसल को नुकसान होने से स्पेशल गिरदावरी कराने का क्या राज्य सरकार ने बन्दोबस्त किया है?

श्री नन्दलाल (किशनगंज) : आपने जो सूचना दी है उसके अन्दर कोटा जिले का नाम नहीं आया है।

श्री परसराम मदेरणा : कम्पलीट नाम नहीं दिये हैं अभी तक।

(श्री कृष्णकुमार गोयल और श्रीमती लक्ष्मीकुमारी साथ-साथ बोलने लगे)

(अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : श्रीमती लक्ष्मीकुमारी।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत (भीम) : जो गिरदावरी करने की बात है तो बरसात होने से पहले ही गिरदावरी हो चुकी थी और उसके बाद फसल को नुकसान हुआ है तो क्या आपने गिरदावरी दुबारा कराई है?

श्री परसराम मदेरणा : गिरदावरी से जो सही जानकारी मिलनी चाहिए वह तो अभी तक मेरे पास है नहीं। लेकिन जनरल तौर पर जो जिला डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर आफिसर्स ने अग्नि, बरसात और ओले पड़ने के कारण जो नुकसान का अनुमान लगाया है उसकी प्रिलिमिनरी रिपोर्ट भेजी है, उसके आधार पर ही मैंने आपको बताया है।

Page No. 9

श्री नत्थीसिंह (भरतपुर) : आपने यह कहा है कि हमने अधिक अन्न उत्पादन के लिए हाईब्रीड बीज को प्रोत्साहन देने के लिए योजना बनाई है। क्या आपको मालुम है कि पिछली बार भी आपके कृषि विभाग की अकर्मण्यता के कारण यह योजना असफल हुई और मैं आपसे फिर कहता हूं कि इस साल भी आपके कृषि विभाग ने कोआपरेटिव विभाग को, कोआपरेटिव बैंक्स को उन गांवों को सूची नहीं दी है जहां यह योजना चलाई है और इसके आधार पर जो रिजर्व बैंक से पैसा मिलने वाला है, वह पैसा भी नहीं मिल पायेगा और आपकी यह योजना इस साल भी असफल होने वाली है। इस सम्बन्ध में क्या आपको जानकारी प्राप्त है कि कार्यवाही की जा रही है या नहीं या योजनाएं इसी प्रकार कागजों में ही पड़ी रहेंगी?

श्री परसराम मदेरणा : यह दूसरा प्रश्न है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : जालोर जिले में कितना नुकसान हुआ है इसका आपने अनुमान लगाया है?

श्री नत्थीसिंह : यह अलग से प्रश्न कैसे है, यह तो अधिक अन्न उत्पादन से ही सम्बन्धित है। अगर इस प्रश्न को ही आप अलग से मानते हो तो फिर क्या अधिक अन्न उत्पादन करोगे?

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत : आप मंत्री महोदय, कृपया यह बतायें कि आप कितना अनाज बाहर से मंगाते हैं और मौजूदा हालत में कितना और मंगाना पड़ेगा?

श्री परसराम मदेरणा : मौजूदा हालत में चालीस हजार टन अनाज भारत सरकार अलॉट करती है, जिसमें से 38,000 टन तो राज्य सरकार को और दो हजार टन मिलस को अलॉट करती है।

श्री खेतसिंह : अध्यक्ष महोदय, सवाल तो मेरा है और सप्लीमेंट्री दूसरे कर रहे हैं।

(कई माननीय सदस्य बोलने लगे)

श्री अध्यक्ष : श्री खेतसिंह।

श्री खेतसिंह : मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगा कि जिन काश्तकारों का इस फसल में नुकसान हुआ है उसको गवर्नमेंट कोई सहूलियत देकर कम्पन्सेट करेगी या नहीं?

श्री परसराम मदेरणा : यह राजस्व विभाग का मामला है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : राजस्व विभाग का मामला है लेकिन जब आपका कृषि विभाग तखमीने बना कर भेजेगा तभी तो राजस्व विभाग सहायता देगा।

श्री परसराम मदेरणा : गिरदावरी से पता लग जाएगा।

श्री श्रवणलाल (हिन्डौन) : आपने यह कहा कि दो तीन जिलों में ही नुकसान है तो क्या और किसी जगह नुकसान नहीं हुआ है?

श्री परसराम मदेरणा : दो तीन जिलों का मैंने नहीं कहा है। मैंने तो यह कहा है कि नुकसान हुआ है और खास तौर से चम्बल क्षेत्र, उदयपुर और जयपुर के इलाकों में और जोधपुर में जालोर में खास तौर से अनुमानतः नुकसान ज्यादा हुआ है। यह इन्फोर्मेशन ही मैंने दी है, डिस्ट्रिक्टस वाईज इन्फोर्मेशन

(श्री परसराम मदेरणा)

नहीं दी है। इलाके से मेरा मतलब जयपुर से जयपुर डिविजन है, अब डिविजन में अलग-अलग डिस्ट्रिक्ट्स में कितना-कितना किस किस इलाके में नुकसान हुआ है इसकी विस्तृत जानकारी अभी मेरे पास नहीं है।

श्री पूनमचन्द विश्नोई (लूनी) : अध्यक्ष महोदय, भाग (5) की जानकारी पूरी नहीं मिली है। यह पूछा गया कि अधिक अन्न उपजाओ अभियान के लिये क्या कोशिश चल रही है ? इसके जवाब में मंत्री महोदय ने बताया कि शंकर बीज की योजना है। और इसके नीचे दो-तीन लाख एकड़ का सिर्फ हिसाब बताया। उसके अलावा कोई और योजना नहीं है क्या ?

श्री परसराम मदेरणा : अध्यक्ष महोदय, एग्रीकल्चर प्रोडक्शन को बढ़ाने के लिए कृषि विभाग की कई योजनाएं हैं। सिंचाई की योजनाएं हैं, भू-संरक्षण की योजना हैं, भूमि सुधार, रसायनिक खाद और दूसरे इम्प्रूव्ड सीड्स का वितरण और प्लाण्ट प्रोटेक्शन, हाईब्रीड बीज का प्रोग्राम है, इस तरह की कई योजनाएं हैं जिनसे प्रोडक्शन ज्यादा बढ़ता है और इसमें लाखों एकड़ को कवर करेंगे। बाकी और भी कई योजनाएं हैं।

श्री नत्थीसिंह : ओले और बरसात के कारण जो फसल को नुकसान हुआ है उसके बारे में तो आपने बता दिया लेकिन इससे पहले ही जो शीत से रबी की फसल को नुकसान हुआ है उसका भी क्या आपने अनुमान लगाया है ?

श्री परसराम मदेरणा : यह सम्भव हो सकता है कि सभी जगहों पर इम्प्रूव्ड सीड नहीं पहुँचने से····· ···

कई माननीय सदस्य : सीड नहीं शीत से, ठण्ड से नुकसान की बात कह रहे हैं।

श्री नत्थीसिंह : बरसात और ओलों से जो नुकसान हुआ है वह तो है ही लेकिन इनसे पहले ही फसल को जाड़ा मार गया था।

श्री श्रवणलाल : जो सर्दियों में शीत से फसल को नुकसान पहुँच जाता है तो क्या सर्दी से फसल को बचाने के लिए कोई योजना सरकार ने बनाई है ?

श्री अध्यक्ष : श्री खेतसिंह, प्रश्न सं. 17।

श्री खेतसिंह : प्रश्न सं. 17।

श्री हीराभाई (कुशलगढ़) : बांसवाड़ा को तो आपने लिस्ट से ही निकाल दिया। बांसवाड़ा के अन्दर नदी में फसल बोई गई थी वह बिलकुल साफ हो गई है।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री हीराभाई : क्या मंत्री महोदय उसके बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ?

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री हीराभाई : माननीय मंत्रीजी को इस बारे में जानकारी करके लोगों को राहत पहुँचानी चाहिए।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी इजाजत से एक प्रश्न मंत्री महोदय से पूछना चाहूंगा। आपके उत्तर को यदि मैं समझ सका हूं तो वह यही है कि आपने नुकसान के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

करने की चेष्टा की है और आपको प्रोलिमिनरी रिपोर्ट अभी तक मिली है। क्या मैं यह जान सकता हूं कि उसके पूर्व गिरदावरी, जो कि सब खोटी और झूंठी होती है, लेकिन जो कुछ भी है, एक मुद्दा तो पकड़ना चाहिए। गिरदावरी पहले हो चुकी और उसके बाद ओले गिरने के कारण नुकसान हुआ तो फिर गिरदावरी तो दुबारा हुई नहीं और आपने प्रोलिमिनरी रिपोर्ट प्राप्त कर ली, तो इसका कोई आधार तो होना चाहिए। इस बारे में मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा कि वे खुलासा उत्तर देने की कृपा करें कि जानकारी का मुद्दा क्या है ?

श्री परसराम मदेरणा : अध्यक्ष महोदय, गिरदावरी के आधार पर मैंने नहीं कहा है। जैसा कि मैंने पहले निवेदन किया कि डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर आफिसर्स की जो रिपोर्ट हमारे पास आई है वह ओलों की वजह से, शीत की वजह से और अत्यधिक बरसात की वजह से जो फसल को नुकसान हुआ है उसकी है। यह रिपोर्ट अनुमानतः है। गिरदावरी रिपोर्ट आने वाली है उसके बादही सही स्थिति मालूम हो सकेगी, लेकिन अभी के अनुमान के अनुसार जहां पहले 15 लाख टन रबी से खाद्यान्न के उत्पादन का अनुमान था वहां अब उसमें डेढ़ लाख टन की कमी हो सकती है।

श्री देवीदत्त : मैं मंत्री महोदय से यह पूछना चाहता हूं कि कितने ऐसे गांव हैं··

श्री अध्यक्ष : आर्डर आर्डर। अब मंत्री महोदय अगले प्रश्न का जवाब देंगे।

तहसील शेरगढ़ में नायब तहसीलदार

श्री खेतसिंह : (शेरगढ़) : क्या राजस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि राज्य सरकार ने किन्हीं तहसीलों में तो दो-दो नायब तहसीलदार लगा रखे हैं और कुछ तहसीलों में एक भी नायब तहसीलदार नहीं है ? यदि हां तो किस आधार पर ?

(2) क्या यह सही है कि जिलाधीश जोधपुर द्वारा कई बार लिखने पर भी शेरगढ़ तहसील में मुस्तकिल तौर पर आज तक नायब-तहसीलदार नहीं लगाया गया है ?

उप मंत्री राजस्व (श्री गंगाराम चौधरी) : (1) जी हां। तहसीलों के वर्गीकरण के आधार पर नायब तहसीलदारों की नियुक्तियां की गई हैं। दो या दो से अधिक नायब तहसीलदार उन्हीं तहसीलों में लगाये गये हैं जहां कार्य अधिक है।

(2) शेरगढ़ तहसील में नायब तहसीलदार का पद स्वीकृत नहीं है। जिलाधीश जोधपुर ने राजस्व मण्डल द्वारा मांगे गये प्रस्ताव पर शेरगढ़ तहसील में नायब तहसीलदार लगाने हेतु लिखा था और यह प्रश्न राजस्व मण्डल के अभी तक विचाराधीन है। राजस्व मण्डल ने सभी जिलाधीशों से प्रस्ताव मांगे हैं कि जहां नायब-तहसीलदार की आवश्यकता है वे अपने सुझाव राजस्व मण्डल को भेजें। कुछ जिलाधीशों से उत्तर आने शेष हैं। समस्त जिलाधीशों से उत्तर आने पर राजस्व मण्डल अपनी सिफारिश राज्य सरकार को इस सम्बन्ध में प्रस्तुत करेगा और उस पर विचार किया जायेगा।

श्री देवीदत्त (बांरा) : यह सिफारिश कब तक हो जायेगी ।

राजस्व मंत्री (श्री बृजसुन्दर शर्मा) : इसके लिए कोई टाईम लिमिट नहीं है । जब भी राजस्व मण्डल यह महसूस करेगा कि नायब तहसीलदार के बिना काम नहीं चल रहा है वह सिफारिश कर देगा ।

श्री नत्थीसिंह : क्या शीघ्रता की भी कोई व्याख्या है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : शीघ्रता की क्या व्याख्या हो सकती है । जब भी राजस्व मण्डल उचित समझेगा कि उनका काम नायब तहसीलदारों के बिना नहीं चल रहा है, वे रिपोर्ट कर देंगे ।

श्री नत्थीसिंह : शायद अब तो, अगले चुनाव तक जरूरत नहीं पड़ेगी । ऐसे उदाहरण तो पहले भी हो चुके हैं ।

श्री खेतसिंह : अध्यक्ष महोदय, मुझे भी एक प्रश्न पूछना है । मेरा प्रश्न है. और दूसरे सप्लीमेंट्री करे जा रहे हैं ।

मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि राजस्व मण्डल कब उचित मानेगा, इसकी क्या कोई परिभाषा है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : जब राजस्व मण्डल यह महसूस करेगा कि उनका काम नहीं चल रहा है तभी वे लिख देंगे ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : इसका कोई आधार तो होना चाहिए ।

श्री अध्यक्ष : श्री हरजीराम ।

ग्राम निम्बी जोधा में बिजली

18. श्री हरजीराम बुरडक (लाडनूं) : क्या विद्युत मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

क्या यह सही है कि ग्राम निम्बी जोधा, तहसील लाडनूं, जिला नागौर में बिजली पहुँचाने की योजना विद्युत् मंडल द्वारा बार बार पास की गई है । लेकिन अभी तक उक्त ग्राम में बिजली नहीं पहुंचाई गई है ? यदि हां, तो क्यों और भविष्य में कब तक बिजली पहुंचाई जावेगी ?

विद्युत् मंत्री (श्री हरिदेव जोशी) : जी नहीं । स्वीकृत योजना में इस ग्राम का नाम न होने के कारण अभी यह निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता कि इसका विद्युतिकरण कब हो सकेगा ।

श्री हरजीराम बुरडक : क्या गत वर्ष में यह योजना स्वीकृत हुई है ?

श्री हरिदेव जोशी : जी नहीं ।

श्री अध्यक्ष : श्री हरजीराम ।

लाडनूं कोआपरेटिव मार्केटिंग सोसाइटी का रजिस्ट्रेशन

19. श्री हरजीराम बुरडक (लाडनूं) : क्या सहकारी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) क्या यह सही है कि लाडनूं कोआपरेटिव मार्केटिंग सोसाइटी का रजिस्ट्रेशन का प्रार्थना-पत्र दो वर्ष से ज्यादा समय से बिना रजिस्ट्रेशन किये पड़ा है और सदस्यों की हिस्सा राशि अमानत बिना व्याज

Page No. 13

(श्री हरजीराम बुरडक)
बैंक में जमा पड़ी है जब कि नियमानुसार रजिस्ट्रेशन या अन्य निर्णय दो माह के अन्दर हो जाना चाहिए ?

(2) यदि हां, तो इस अनियमित कार्य व सदस्यों को हो रही हानि (ब्याज का न मिलना) के लिए कौन उत्तरदायी हैं ?

सहकारी मंत्री (श्री परसराम मदेरणा): (1) लाडनूं मार्केटिंग सोसाइटी का रजिस्ट्रेशन प्रार्थना-पत्र 2 साल से बिना रजिस्ट्रेशन के पड़ा है, यह तथ्य सही नहीं है। यह सत्य है कि बैंक में इस संस्था के नाम का रुपया जमा है और यह सेविंग बैंक खाते में है जिस पर ब्याज मिलता है।

(2) प्रश्न ही नहीं उठता।

श्री जसराज (भिनाय) : रजिस्ट्रेशन के लिए प्रार्थना पत्र आपके विभाग में किस तारीख को प्राप्त हुआ था ?

श्री परसराम मदेरणा : 7-10-64 को डिप्टी रजिस्ट्रार कोओपरेटिव सोसाइटीज, जोधपुर के पास में इस प्रकार का यह आवेदन-पत्र जरूर प्रस्तुत हुआ था, लेकिन उस आवेदन-पत्र में त्रुटियां थीं इसलिए उन्हें उसको दुरुस्त करने की हिदायत दी गई।

श्री जसराज : त्रुटियां कब तक सुधारी जा सकती हैं ? अधिनियम जो नया 65 का है उसमें यह प्रावधान है कि दो महीने के अन्दर अन्दर सोसाइटी का रजिस्ट्रेशन होना चाहिए और अगर नहीं होता है तो पेनाल्टी का प्रावधान है। विभाग द्वारा खामियों को दूर करने के लिए क्या क्या प्रयास किये गये ?

श्री परसराम मदेरणा : अध्यक्ष महोदय, बड़ा लम्बा-चौड़ा प्रश्न पूछ लिया है माननीय सदस्य ने। जहां तक इस सोसाइटी के रजिस्ट्रेशन का प्रश्न है नये एक्ट के लागू होने के बाद का कोई भी आवेदन-पत्र आज रजिस्टरिंग आथोरिटी के पास में नहीं है। यह पहले का मामला था। इसमें कई दफा शिकायतें हुईं और मामला आर. सी. एस. (रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज), के पास में आया और उन्होंने उसमें जांच की। शिकायत करने वालों ने इस बात की शिकायत की थी कि जिस जनरल मीटिंग में सोसाइटी को रजिस्ट्रेशन कराने का रिजोल्यूशन पास किया है उसमें एक्जीक्यूटिव कमेटी ने जो प्रतिनिधि भेजे हैं उसके लिये एक्जीक्यूटिव कमेटी ने सोसाइटी की जनरल मीटिंग नहीं बुलाई है। मेरे पास प्रूफ हैं। उन्होंने यह बात लिखी है और रजिस्ट्रार ने खुद ने लम्बी-चौड़ी एन्क्वायरी करने का आदेश दिया था दुबारा नोटिस देकर कि सभी सोसाइटियां जो इस क्षेत्र में हैं उनकी समितियों को इत्तिला होनी चाहिए और उनकी एक्जीक्यूटिव की मीटिंग होनी चाहिए उनके प्रतिनिधि चुने जाने चाहिए और उस पर काउन्टर साइन असिस्टेन्ट इन्सपेक्टर और इन्सपेक्टर के द्वारा होकर नियमानुसार सब कार्यवाही होनी चाहिए। इस तरह के आदेश रजिस्ट्रार ने दिये थे। उसके बाद ये आदेश उन्होंने डिप्टी रजिस्ट्रार को दिये और डिप्टी रजिस्ट्रार ने असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार को दिये। उसके बाद मीटिंग बुलाने के बाद कहा कि उस मीटिंग के अन्दर पहले जिनको आथोराइज किया था सोसाइटी का रजिस्ट्रे-

(श्री परसराम मदेरणा)
शन कराने के लिए तो उसमें माननीय सदस्य खुद थे तो उन्होंने स्पष्टीकरण मांगा। क्या स्पष्टीकरण वे चाहते थे इस प्रकार का पत्र किसी भी कार्यालय में, चाहे असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार का कार्यालय हो या डिप्टी रजिस्ट्रार का, वह प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए आगे कार्यवाही नहीं की गई।

एक माननीय सदस्य (संयुक्त दल): आपको इस किताब में यह लिखा है कि लाडनूं में मार्केटिंग सोसाइटी बना दी गई तो क्या यह मिथ्या प्रचार है?

एक अन्य माननीय सदस्य (संयुक्त दल): उनका काम यही है।

श्री देवीदत्त (बारां): अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। किताब में दे रखा है।

श्री अध्यक्ष: किताब का प्रिवियस नोटिस हो जाता तो माननीय मंत्री महोदय को देखने का मौका मिल जाता।

श्री परसराम मदेरणा: अध्यक्ष महोदय, यह बात सही है कि लाडनूं में केन्द्रीय सहकारी क्रय-विक्रय संघ लिमिटेड है वह मार्केटिंग सोसाइटी नहीं है। वह एपेक्स बोडी है उसके आधार पर उसका रजिस्ट्रेशन कर दिया था। इसलिए वह मार्केटिंग सोसाइटी के डेफिनेशन में नहीं आता है। उसका जो एरिया ऑफ आपरेशन है वह पंचायत समिति का पूरा एरिया ऑफ आपरेशन है। वहां पर दूसरी इस प्रकार की सोसाइटी लाडनूं, सैल्स सप्लाईज सहकारी समिति है। उसका एरिया ऑफ आपरेशन म्यूनिसिपल एरिया है। इस प्रकार दो सोसाइटीज वहां पर हैं। जिसका आप जिक्र कर रहे हैं, शायद यह वही सोसाइटी होगी।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर): माननीय अध्यक्ष, अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं मंत्री महोदय से प्रश्न पूछ लूं।

मंत्री महोदय ने कहा कि प्राइवेट शेयर केपिटल जो है वह बैंक में जमा है तो क्या मैं जान सकता हूं कि वह कब जमा हुई है और सूद की दर क्या है?

श्री परसराम मदेरणा: अध्यक्ष महोदय, यह जो शेयर केपिटल है बैंक में.....

श्री लक्ष्मणसिंह: सब बोगस बातें हैं, अध्यक्ष महोदय,....

श्री परसराम मदेरणा: आपके कहने से बोगस नहीं होती है। मैं एक बात कह रहा था और धीरे बोल रहा था इसलिए आप उसको बोगस कहें। मुझे जोर से बोलने की आदत नहीं है। मैं समझता था कि विरोधी दल के नेता ने कहा तो रेस्पान्सिबल बात कही होगी मैं जिम्मेदारी से जवाब दे रहा था। आप उसको टालने की कोशिश करते हैं।

श्री मुकुट बिहारीलाल गोयल (बयाना): अध्यक्ष महोदय, एक व्यवस्था से सम्बन्धित सवाल है। क्या यह मैं मानूं कि मंत्री महोदय ने जो कुछ जवाब दिया है वह इस तरह से तडग-भडग से रोब गालिब करते हुए जवाब दिया है तो उससे रोब गालिब होने वाला नहीं है....

श्री अध्यक्ष: आर्डर! आर्डर!! व्यवस्था का प्रश्न इस में समाहित नहीं है।

श्री मुकुटबिहारी लाल गोयल : हम आपका शेल्टर चाहते हैं कि इस तरह से रोब गालिब करते हुए जवाब देते हैं आपकी नजरों के सामने तो हम भी ऐसी कार्यवाही करेंगे।

श्री अध्यक्ष : आर्डर, प्लीज़ !

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : माननीय सदस्य निश्चिन्त रहें। ऐसी बातों का रोब मुझ पर गालिब नहीं होगा।

(विपक्ष की ओर से हियर, हियर)

श्री अध्यक्ष : श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत !

मोहकम सागर तालाब की पाल

20. श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत (भीम) : क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि देवगढ़ (उदयपुर) तहसील के मोहकम सागर तालाब की पाल को ब्लास्टिंग करके तोड़ डाला गया ?

(2) यदि हां, तो कितने फुट पाल तोड़ी गई है? स्थानीय अधिकारियों ने उसका मुआयना किया या नहीं ?

(3) इस पाल के तोड़े जाने से सरकार को कितना आर्थिक नुकसान हुआ ?

(4) क्या यह तालाब सिंचाई विभाग के अधीन है ? यदि हां, तो विभाग द्वारा यह भयंकर अपराध करने वाले के खिलाफ क्या कार्यवाही अब तक की गई है ?

उप-मंत्री, सिंचाई (श्री मनफूलसिंह) :

(1) जागीरदार ताल ग्राम ने बीयर को तोड़ दिया था।

(2) मुआयना किया गया व बीयर को लगभग 15 फिट की लम्बाई में टूटा हुआ पाया।

(3) पाल की मरम्मत पर अनुमानित व्यय 300) होगा।

(4) जी हां। पाल को तोड़े जाने की रिपोर्ट पुलिस को करदी गई है जहां उक्त जागीरदार के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जा रही है।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत : उसकी कार्यवाही क्या हुई ?

सिंचाई मंत्री (श्री हरिदेव जोशी) : पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है और वह उस पर कार्यवाही कर रहे है।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत : जब तक मेरा प्रश्न नहीं आया क्या मंत्री महोदय को पता था कि इस प्रकार की बात हुई है ?

श्री हरिदेव जोशी : जी नहीं।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत : आपके विभाग ने इत्तिला नहीं दी आपको ?

श्री हरिदेव जोशी : यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रकार के इन्सीडेन्स मिनिस्टर के पास आयें।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत : एक प्रश्न है कि सरकार के मंत्री महोदय को इस प्रकार की चीजें जो सरकारी हैं और जिनको ब्लास्टिंग करके उड़ा दिया जाय, कोई

(श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत)
मामूली गेंती, फावड़े से नहीं तोड़ा जाय, नहीं बताई जायं तो क्या ये मामूली बातें हैं ?

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, यह आवश्यक नहीं है कि विभाग मेरे पास रिपोर्ट करे। विभाग में जिम्मेदार अधिकारी हैं उन्होंने पुलिस में रिपोर्ट की। इस प्रकार मैं ऐसा नहीं समझता कि सरकार जागरुक नहीं थी और कदम नहीं उठाया हो पुलिस में केस रजिस्टर्ड कराने के लिए।

श्री लादूराम सुलानिया (फागी) : कब रिपोर्ट हुई है ?

श्री हरिदेव जोशी : उसी दिन।

श्री लादूराम सुलानिया : कितने महीने की बात है ?

श्री परसराम (परबतसर) : परिणाम क्या निकला ?

श्री हरिदेव जोशी : कार्यवाही जारी है।

श्री लादूराम सुलानिया : क्या मामला अदालत में पेश कर दिया है ?

प्रश्न संख्या 11 व 12

श्री अध्यक्ष : श्री भीमसेन !

(अनुपस्थित कृपया आगे देखिये)

प्रश्न समाप्त हुए।

तहसील लूणकरणसर का विद्युतिकरण

11. श्री भीमसेन–क्या विद्युत मंत्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने का कष्ट करेंगे:–

(1) क्या सरकार के ध्यान में है कि तहसील लूणकरणसर के एक भी गांव का अब तक विद्युतिकरण नहीं किया गया है ?

(2) क्या सरकार के यह भी ध्यान में है कि तहसील लूणकरणसर के मुख्यालय में बिजली आने पर वहां पर औद्योगिक आधार बन सकता है ? अगर हां, तो सरकार देहातों के विद्युतिकरण योजना के अन्तर्गत गांव लूणकरणसर, कालू आदि के विद्युतिकरण को प्राथमिकता देने का विचार रखती है ? यदि हां, तो कब तक ?

उत्तर

1. ग्राम चन्दसर के सिवाय किसी ग्राम का विद्युतिकरण नहीं हुआ है।

2. जी हां।

प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाई जा रही है, धनराशि उपलब्ध होने पर यदि विद्युतिकरण लाभप्रद पाया गया तो यह कार्य किया जा सकता है।

भू–राजस्व की समाप्ति

12. श्री भीमसेन–क्या राजस्व मंत्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने का कष्ट करेंगे:–

क्या यह सही है कि किसानों को राहत देने हेतु शनैः शनैः भू–राजस्व समाप्त करने का सरकार इरादा रखती है ? अगर हां, तो कब व किस प्रकार ?

उत्तर

फिलहाल न्यूनतम कृषि भूमि की सीमा तक लगान माफ करने का निर्णय लिया गया है, और राहत देने के प्रश्न पर विचार करने के लिए सरकार एक समिति नियुक्त कर रही है।

(11.40 म. पू.)

कार्य सलाहकार समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन एवं सदन द्वारा इस पर विचार

श्री दामोदरलाल व्यास : अध्यक्ष महोदय, मैं कार्य सलाहकार समिति का प्रथम प्रतिवेदन......

श्री महेन्द्र सिंह (पीपल्दा) : मेरे एडजोर्नमेंट मोशन का क्या हुआ ?

श्री अध्यक्ष : आगे आयेगा ।

श्री नत्थीसिंह (भरतपुर) : अध्यक्ष महोदय, आपने जो कार्य सलाहकार समिति की कार्यवाही को ग्रहण करने का प्रस्ताव रखा है उस पर मैंने एक संशोधन रखा है उसको पहले लिया जाय ।

श्री अध्यक्ष : आपका जो प्रस्ताव है वह मेरी व्यवस्था पर है। उसका इससे कोई सम्बन्ध नहीं है ।

श्री नत्थीसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करूं कि आपने जो व्यवस्था दी थी कि सीमाओं के अन्तर्गत जो श्रद्धांजली अर्पित करना है उसके लिए समय निश्चित करेंगे आप। उसके आधार पर यहां श्रद्धांजली अर्पित की जायगी, लेकिन जो प्रतिवेदन आया है उसमें 6 से 9 तक का पूरा कार्यक्रम है और 9 के बाद असेम्बली आगे नहीं चल रही है। इसलिए मैंने एक संशोधन दिया है वह बहुत ही आवश्यक है ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर !! प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया जाय ।

श्री दामोदर लाल व्यास : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन कार्य सलाहकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन को अपनी सहमति प्रकट करता है ।

श्री नत्थीसिंह : अब मेरा संशोधन ले लें ।

श्री अध्यक्ष : आपके प्रश्न को मैं समझ गया। यह प्रश्न मेरी व्यवस्था से सम्बन्धित है । बिजनेस एडवाइजरी कमेटी के प्रतिवेदन से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए मैंने उसको रूल आउट किया है ।

श्री मुकुट बिहारी लाल : अध्यक्ष महोदय, जब कार्य सलाहकार समिति का प्रतिवेदन इस सदन में.....

श्री अध्यक्ष : नो डिस्कशन प्लीज ! मैंने उसको रूल आउट किया है।

श्री मुकुट बिहारी लाल : मैं एक व्यवस्था का प्रश्न उठा रहा हूं......

श्री अध्यक्ष : उस पर बहस नहीं होगी ।

श्री मुकुटबिहारीलाल : आपकी आज्ञा है वह शिरोधार्य है लेकिन मैं एक व्यवस्था का प्रश्न उठा रहा हूं....

श्री अध्यक्ष : आप उसको कनवेस नहीं करोगे ।

श्री मुकुटबिहारीलाल : इसके मायने यह है, क्या यह माना जाय कि कार्य सलाहकार समिति का जो प्रतिवेदन इस सदन के समक्ष रख दिया जायगा इसके सम्बन्ध में इस सदन के माननीय सदस्यों को कुछ कहने का अधिकार नहीं है ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ! माननीय सदस्यों के अधिकार का प्रश्न इसमें नहीं

(श्री अध्यक्ष)

आता है। यह मेरी व्यवस्था का प्रश्न है। इस पर मुझे व्यवस्था देनी है। ऐसी स्थिति में बिजनेस एडवाइजरी कमेटी के काग्नीजेन्स में यह प्रश्न नहीं आता। इसलिए मैंने उस संशोधन को अस्वीकार किया है। मैं यह मान कर चलता हूं कि सदन इसको स्वीकार करके चलता है।

(थप-थप की ध्वनि)

श्री मुकुटबिहारीलाल : कार्य सलाहकार समिति के प्रतिवेदन को ?

श्री अध्यक्ष : जी हां।

(कार्य सलाहकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन से अपनी सहमति प्रकट की।)

(11.42 म. पू.)

स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था

एडजोर्नमेंट मोशन ! श्री महेन्द्रसिंह, श्री प्रेमसिंह, श्री श्रवणलाल—इनके स्थगन प्रस्तावों के अन्दर जो प्रश्न हैं वह अभिभाषण पर वाद-विवाद के वक्त उठाये जा सकते हैं। अतः मैंने उनको अस्वीकार किया है।

श्री नन्दलाल ने तहसील शाहाबाद किशनगंज क्षेत्र में पेयजल की स्थिति के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है। मैं चाहूंगा कि मंत्री महोदय इस सम्बन्ध में आज अथवा सुविधानुसार वक्तव्य दें।

राव श्री नारायणसिंह (मंत्री, जन स्वास्थ्य) : सोमवार तक !

श्री अध्यक्ष : श्री कृष्णकुमार गोयल ने मार्केटिंग सोसाइटीज के द्वारा किसानों को बीज व खाद उधार न दिये जाने का निर्णय के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है। मंत्री महोदय इस सम्बन्ध में 9 मई, 1967 को या उससे पहले अपना वक्तव्य दें।

श्री महेन्द्रसिंह : On a point of order Sir,....

श्री कृष्णकुमार गोयल : आपने स्थगन प्रस्ताव के बारे में ...

श्री महेन्द्रसिंह : अध्यक्ष महोदय, आपने जो व्यवस्था दी है, मैं समझता हूं गवर्नर के एड्रेस पर सभी विधायकों को बोलने का मौका नहीं मिलेगा और न ही यह सम्भव है। हमने जो स्थगन प्रस्ताव रखे हैं वह अत्यन्त महत्व-पूर्ण हैं। उस इलाके में जहां के लिए स्थगन प्रस्ताव रखा है, कोटा जिले में तहसील पीपलदा, नायबगढ़ तहसील में दो साल से मुतवातिर....

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर !! देखिये !

श्री महेन्द्रसिंह : आप मेरा पाइन्ट आफ आर्डर तो सुन लीजिये पहले।

श्री अध्यक्ष : Chair is on its legs. कुर्सी खड़ी हो गई है। आप स्थान ग्रहण करें। देखिये, मैंने प्रस्ताव को अस्वीकार किया है। रहा आपकी सुविधा का प्रश्न तो अभिभाषण पर वाद-विवाद के वक्त, यदि आपको समय न मिला तो आप यह प्रश्न यहीं उठा सकेंगे। आसन आपको विश्वास दिलाता है, समय दिये जाने का प्रयास किया जायगा और आपको मौका मिलेगा इसको उठाने का। जो व्यवस्था दे दी गई है उसको हाउस में चेलेंज नहीं किया जायगा।

श्री महेन्द्रसिंह : आपने जो व्यवस्था दे दी है उसमें कोई चेंजेज करने की बात मैं नहीं कह रहा हूं। मैं निवेदन कर रहा हूं कि आप मंत्री महोदय को इतना फर्मा दें कि इस सम्बन्ध में वह एक छोटा सा स्टेटमेंट दे दें ताकि इस सदन को संतोष हो जाय कि सरकार कुछ कर रही है।

श्री अध्यक्ष : मंत्री महोदय से इस सम्बन्ध में आप चेम्बर में बातचीत कर लें।

श्री महेन्द्रसिंह : चेम्बर में....

श्री अध्यक्ष : मैंने व्यवस्था दे दी है।

श्री देवीदत्त (बारां) : अध्यक्ष महोदय, मैंने एक प्रश्न उठाया था बारां कालेज के सम्बन्ध में उस पर आपने व्यवस्था दी थी कि शिक्षा मंत्री....

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ! मैंने निवेदन किया दुबारा इस सम्बन्ध में कि छोटे मोटे प्रश्न जो मंत्री महोदयों से या मुझसे सम्बन्ध रखते हैं, वह हाउस में उठाने के प्रश्न नहीं हैं। आप मंत्री महोदय से मिल लें या मुझसे मिल लें जिससे उन प्रश्नों को लेकर सदन के समय का अपव्यय न हो।

(शोरगुल)

आॅर्डर ! आॅर्डर !!

श्री देवीदत्त : यह छोटा मोटा प्रश्न नहीं है।

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर ! आॅर्डर !! आसन ग्रहण करें।

अभिभाषण पर वाद-विवाद आरम्भ हो। श्री भैरोंसिंह

श्री रामकिशन (बैर) : अध्यक्ष महोदय, एक जरा सा निवेदन करना है ...

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर ! आॅर्डर !!

श्री नत्थीसिंह : अध्यक्ष महोदय, एक व्यवस्था का प्रश्न है। व्यवस्था का प्रश्न यह है कि हम अपनी हैसियत से इस सदन में आते हैं और हम आपका प्रोटेक्शन सीक करते हैं। हमारा यह काम नहीं है कि हम जिस बात को सदन के सामने लाकर जनता के अभावों को पेश करना चाहते हैं उसके लिए मिनिस्टर साहब के चेम्बर में जाकर खड़े हों। आज तक जो इस सदन की व्यवस्था रही है उसको फेंक दिया गया है। आप इस पर गौर करें कि किस स्थगन प्रस्ताव का क्या किया जाय।

श्री अध्यक्ष : मैं आपके व्यवस्था के प्रश्न को समझ गया।

श्री नत्थीसिंह : मुझे आप मेरी पूरी बात कहने दीजिये। इस तरह तो हमारा गला घोटा जा रहा है। इस व्यवस्था को हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस तरह ...

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर प्लीज ! आप कृपया मुझ से मिल लें चेम्बर में, मैं व्यवस्था कर दूंगा।

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय ...

श्री गोवर्धन (मेड़ता) : अध्यक्ष महोदय, कल मेरा भाषण अधूरा रह गया था।

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय, आपने यह व्यवस्था दे दी थी कि इस तरह के स्थगन प्रस्ताव होंगे उन पर आपका रुख इस तरह का होगा। लेकिन दो तीन दिन के हालात से मालूम हो रहा है कि आपका इस तरह का

(श्री रामकिशन)
व्यवहार है जिससे इस तरह के सारे प्रश्न सदन के सामने नहीं आ सकें। मेरा निवेदन है कि प्रत्येक सदस्य न तो अभिभाषण पर बहस में भाग ले सकता है और न समय के कारण यह सम्भव है। मैं निवेदन करूंगा कि ऐसे महत्वपूर्ण जो प्रश्न हैं, जैसे अकाल, गोली और दूसरे दूसरे प्रश्न, उनके लिए हम आपसे मिलेंगे-यह तो सही है और हमें मंत्री महोदय से मिलने में भी एतराज नहीं है लेकिन यह महत्वपूर्ण मामले सदन के सामने उठाने के हैं, और उनका सदन के सामने आना महत्वपूर्ण होता है। इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि ऐसे जो मामले आये हैं, जो आपके सामने आये हैं उन पर आप यह व्यवस्था कर दें कि मंत्री महोदय सदन में स्टेटमेंट दे दें और इस तरह जो पहले की परम्परा रही है उसको आप निभायें।

श्री अध्यक्ष : माननीय भैरोंसिंह।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा छोटा सा एक निवेदन है कि माननीय सदस्य गोवर्धन सोनी ने कल अपना भाषण समाप्त नहीं किया था। आज उनको आप कुछ समय दे दें तत्पश्चात् माननीय सदस्य जो किशनपोल से आए हैं भैरोंसिंह जी अपना भाषण दे दें। इस तरह की आप व्यवस्था दे दें।

श्री अध्यक्ष : इस सम्बन्ध में व्यवस्था है इस सदन की····

श्री मुकुटबिहारी लाल : दो तीन मिनट का समय दे दें।

श्री अध्यक्ष : एक माननीय सदस्य एक दिन पहले भाषण देते हुए अपना भाषण समाप्त नहीं कर पाते हैं तो उनका भाषण समाप्त समझा जाता है। इसलिए अब वह नहीं बोल सकते।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैं अदब के साथ निवेदन करूं, आपकी व्यवस्था सर्वमान्य है। यह परम्परा लोकसभा की नहीं है, राज्यसभा की नहीं है। आप व्यवस्था देंगे उसको मानने के लिये हम तैयार हैं जो इनकम्प्लीट भाषण हैं उनको कम्पलीट कराना या न कराना-यह आपके डिस्क्रिशन का प्रश्न है। मैं समझता हूं कि नाइन आउट आफ टेन इनकम्प्लीट भाषण होते हैं। इसलिए माननीय सदस्य को मौका दिया जाय कि वह अपना भाषण कम्प्लीट करें। हां अगर दस मिनट दिये जायं तो आप दो मिनट दीजिये, तीन मिनट दीजिये। लेकिन यह व्यवस्था, कट व्यवस्था जो आपके द्वारा हुई है वह असंतोषजनक है।

श्री अध्यक्ष : मेरी व्यवस्था नहीं है। सदन के अन्दर दी गई पूर्व व्यवस्थाओं का मैं प्रतिपादन कर रहा हूं।

कई माननीय सदस्य : सदन की यह परम्परा रही है।

श्री श्रवणलाल : सारी बातों को टाल देते हैं।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज। माननीय श्री भैरोंसिंह!

(11·48 म. पू.)

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर अग्रेतर वाद-विवाद

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, श्रीमन् राज्यपाल महोदय का

(श्री भैरोंसिंह)

अभिभाषण इस सदन में जिन परिस्थितियों के बाद हुआ है उन परिस्थितियों के कारण राजस्थान की जनता यह महसूस करके चलती थी कि इस भाषण में उन सारी शंकाओं का निराकरण होगा, राज्य में व्याप्त समस्याओं का समाधान होगा और इस संकट पूर्ण समय में आगे किस प्रकार से व्यवस्था की जाय–इसका कोई संकेत होगा लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि इस भाषण में इस प्रकार की कोई भी बात न देखने को मिलती है, न सुनने को मिली है। बल्कि मोटे रूप में यह कहूं कि इन राज्यपाल महोदय ने, जैसे एक अधिकारी जाने वाले अधिकारी से चार्ज लेता है और एक चार्ज-लिस्ट तैयार करता है उसी प्रकार की एक चार्ज लिस्ट नये गवर्नर महोदय ने पुराने गवर्नर महोदय से चार्ज लेते वक्त तैयार की है। उन्होंने इसमें इन सब बातों का उल्लेख किया है। राजस्थान में कितने मुर्गे हैं, राजस्थान में कितने स्कूल हैं, राजस्थान में कितने दवाखाने हैं, राजस्थान में नस्ल सुधार के कितने केन्द्र हैं, राजस्थान में लूप्स लगाने की कितनी संख्या है, आपरेशन कितने हुए है, कितनी बिल्डिंग्स हैं। इन सब बातों की एक प्रकार से चार्ज लिस्ट है। इस चार्ज लिस्ट के बाद नये गवर्नर महोदय राजस्थान में क्या करना चाहते है, इसके बारे में बहुत दुःख के साथ कहना पड़ता है कि राज्यपाल महोदय ने सिवाय एक दो हम जो लेजिस्लेशन लाने वाले हैं इनके अलावा किसी प्रकार का कोई संतोषजनक मार्ग जनता के सामने प्रस्तुत नहीं किया है। उन्होंने इस बात को दोहराया है जिसे राजस्थान के मुख्य मंत्री भी बार-बार कहते आये हैं कि हिन्दुस्तान की जनता का लोकतंत्र में विश्वास है 1967 के आम चुनावों में लोकतन्त्र के प्रति जनता के विश्वास को और भी आस्था से व्यक्त किया है। राज्यपाल महोदय ने खुद ने इस बात का उल्लेख करके इस सदन को इस बात से अवगत किया है कि राजस्थान की जनता वास्तव में लोकतन्त्र पद्धतियों के अनुसार तरक्की कर रही है या लोकतन्त्र के विकास में कोई गतिरोध पैदा हो गया है। अध्यक्ष महोदय, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं होगा कि आम चुनावों में सिंगल रूप में कांग्रेस का बहुमत रहा लेकिन कांग्रेस के विरोध में जो लोग जीत कर आये, बहुमत के आधार पर उनकी संख्या ज्यादा थी। आज संविधान के अन्दर इस प्रकार की व्यवस्था है कि पार्टी के बहुमत के आधार पर इस बात का निर्णय लिया जाता है कि सरकार किस पक्ष की बनेगी। लेकिन इस चुनाव में मैंने देखा कि कांग्रेस पार्टी चुनाव में भाग नहीं ले रही है, यह सही है कि अपोजिशन भी डिवाइडेड था, उसको अकेली कांग्रेस से मुकाबला करना हो, ऐसी बात नहीं थी। उसको सारे कोन्ट्रेक्टर्स, करप्ट एलिमेन्टस, जिसमें सर्विस क्लास के लोग और दूसरे लोग जो शामिल थे उनसे मैं आपको निवेदन करूं कि हमें लड़ाई लड़नी पड़ रही है। करप्शन, कांग्रेस, कान्ट्रेक्टर्स की फौज से और सरकार के भ्रष्ट कर्मचारियों से जो कांग्रेस की टोपी तो नहीं पहिनते हैं लेकिन आत्मा में कांग्रेस का झण्डा लेकर उसका प्रचार करने में कोई कमी नहीं रखते हैं उनसे लड़ाई लड़नी पड़ी है।

आपको 88 सीटों से ज्यादा सीटें नहीं मिलीं, मुझे यह कहने में भी कोई आपत्ति नहीं

(श्री भैरोंसिंह)

होगी कि अपोजिशन डिवाइडेड होने के कारण यह हुआ फिर भी जनता ने कांग्रेस को फेल करके यह दिखा दिया है और जो जनता ने दिखाया है वह इस बात का फैसला है कि राजस्थान की जनता कांग्रेस को नहीं चाहती। राजस्थान में टोटल पोलिंग हुआ उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बहुमत कांग्रेस के पक्ष में नहीं है। अब इस बहुमत को गिराना या कायम रखने का प्रश्न बाद में आता है।

जिस समय विरोधी दल के सदस्य बहुमत में आये, उस समय लोकतन्त्र के हित में और लोकतन्त्र के अधिकार में यह बात थी कि राजस्थान के मुख्य मंत्री अपनी कुर्सी का मोह छोड़ कर इस बात को लिख कर देते और स्वीकार करके चलते कि राजस्थान में कांग्रेस का बहुमत नहीं है, कांग्रेस की हुकूमत बननी नहीं चाहिए। लेकिन आज लगता है कि हमारे चीफ मिनिस्टर के सामने लोकतन्त्र और प्रजातन्त्र की परम्पराओं का कोई महत्व नहीं है। उनको तो अपनी स्वयं की कुर्सी को रखना था। उन्हें तो पार्टी के ऊपर अपनी डिक्टेटरशिप कायम करनी थी, उन्होंने विधायकों की खरीद फरोख्त को शुरू किया। मैं मुख्य मंत्रीजी को सन् 1952 से जानता हूं। मैं कहना चाहता हूं कि आज तक जो भी विरोधी अपने दल को छोड़ कर उनके साथ चले गये और जिन्होंने उनका साथ दिया उनकी उन्होंने आज तक राजनैतिक हत्यायें की हैं। श्री जयनारायण व्यास से लेकर छोटे से छोटे विधायक की राजनैतिक हत्या की है। जो कांग्रेस विधायक विरोधी दल से जीत कर आये और सुखाड़िया जी के कहने से कांग्रेस में गये, उनमें से किसी को टिकट नहीं मिला और टिकट दिया गया तो वह हारा और अगर हारा नहीं तो हराया गया उन्होंने किसी को जीवित नहीं छोड़ा। जो भी गया है राजनैतिक दृष्टिकोण से उसकी हत्या की गई है। मुझे उनपर दया आती है कि उन्होंने राजनैतिक आत्महत्या की है। उनका दोष उनको तो लगेगा ही लेकिन साथ ही राजस्थान की जनता ने जिन लोगों को जिस नीति के आधार पर वोट दिया है उनको जनता भूलने वाली नहीं है। अगर विधायकों के सामने उनको मजबूर करते हैं और उस मजबूरी में किसी प्रकार का संघर्ष आता है तो उसकी जिम्मेदारी विरोधी दल के सदस्यों पर नहीं बल्कि उसकी जिम्मेदारी आनी चाहिए राजस्थान सरकार पर जिसने ईमान खरीदने और बेचने की बात पैदा की है।

मैं यह निवेदन करूंगा कि शिड्यूल्ड कास्ट और शिड्यूल्ड ट्राइब्स के लोगों की हालत सारे हिन्दुस्तान में कमजोर है। आज राजस्थान में उनकी हालत बहुत ज्यादा कमजोर है। कोई ऐसा कार्य नहीं किया जाता जिससे उनका राजनैतिक महत्व बढ़ जावे। लेकिन उनके ईमान को डिगाने और खरीदने का प्रश्न आता है तो उनकी नजर हरिजनों की गरीबी पर जाती है।

मैं कहना चाहता हूं कि भगवान ने उनको पहले ही गरीब बनाया है। आपको चाहिये कि उनका राजनैतिक विकास किया जाए। आपको चाहिए कि ४५ लाख हरिजन हैं उन्हें जनता का विश्वास प्राप्त करावें। आप आज शहर में जाइये कोई भी सदस्य कहता है कि हरिजन सदस्य का विश्वास करना मुश्किल है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि ऐसा क्यों कहा जाता है? क्या वे इन्सान नहीं हैं? क्या वे राजनीति में भाग नहीं ले सकते हैं। उनको

(श्री भैरोंसिह)

ईमानदारी से राजनीति में भाग लेने दिया जाना चाहिए लेकिन वे गरीब हैं, उन पर आप डाके डलवाते हैं। आप उनका राजनैतिक शोषण करने वाले हैं, यह चीज चलने वाली नहीं है। आप चार आदमियों को लेकर, हुकूमत लेकर बैठ गये। मैं यह कहना तो नहीं चाहता, हाल ही में कुछ व्यक्तियों ने पंजाब में एक विधायक पार्टी छोड़ कर चला गया, विधान सभा के चेम्बर में घुस कर उसकी गर्दन पकड़ली। मैं इसकी तारीफ नहीं करता लेकिन जो बात अपने आप होने वाली है उसको भी रोक नहीं सकते।

मैं यह कहना चाहता हूं चाहे सुखाड़ियाजी हो, चाहे दामोदरजी हों, वे यह मान कर चलें कि हुकूमत उम्र भर की नहीं है। राजाओं की हुकूमत नहीं रही, जागीरदारों का राज्य नहीं रहा, अंग्रेजों का राज्य भी समाप्त हो गया और नहीं चला, आपका भी नहीं रहेगा। अभी तक आपके पापों का घड़ा पूरा नहीं फूटा है। जनता इसको अगर 1967 में नहीं फोड़ सकी तो सन् 1972 में जनता इसके टुकड़े-टुकड़े कर देगी। यह आपका पाप का घड़ा अवश्य फूटेगा। इसलिए आप ठेका लेकर नहीं चलें कि इस पर युधिष्ठिर की छाप है और यह घड़ा नहीं फूटेगा। घड़ा अवश्य फूटेगा। यह मैं कहना चाहता हूं। इसलिए हमें इस प्रकार के हथकन्डों को राजनैतिक जीवन में लाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अध्यक्ष महोदय, मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूं.....

श्री अध्यक्ष: अब तो सब छोड़ दें।

श्री भैरोंसिह: मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूं। मेरी आदत पड़ी है और भी यदि बार बार निकल जायें तो आप ध्यान न दें।

श्री अध्यक्ष: अब निकलेगा तो भी मैं आपको रोक दूंगा।

श्री भैरोंसिह: अध्यक्ष महोदय, मुझे कई बार अफसोस हुआ, उन एम. एल. एज. को उड़ाने और भगाने में जब मैंने पूंजी-पतियों की गाड़ियों को दौड़ते हुए देखा। यह सही है कि पूंजीपति चुनावों में भाग लें इसमें कोई एतराज नहीं। लेकिन राज-स्थान के चीफ मिनिस्टर पर पूंजीपतियों का प्रभाव और डाइरेक्टर के नाम पर पूंजीपति मजदूरों की कमाई में से गाड़ियां खरीद कर कांग्रेस को देदें, यह तो समझ में आ सकता है लेकिन यह समझ में नहीं आ सकता कि पूंजीपति उनको यह कहें कि मैं अोपजिशन के इतने सदस्यों को पकड़ लाता हूं, यह भी दावा करते हैं। मैं यह कहूंगा कि आज राजस्थान में सुखाड़िया जी की हुकूमत नहीं है, राजस्थान में गवर्नमेंट साहू जैन की है। नाम भी बदल दिया जाए तो कोई बात नहीं। आज शान्ति प्रसाद जैन ने कुछ सीमेंट का प्रोड-क्शन निकल कर सीमेंट फेक्ट्री में सीमेंट ही नहीं बनाते बल्कि वहां पर एम. एल. एज. का निर्माण भी होता है।

(12 मध्याह्न)

वे एम. एल. एज. कांग्रेस के समर्थन में हो जायं और सेठ साहब दावा करें कि मैंने सुखाड़ियाजी की गद्दी को राज-स्थान में कायम रखा है तो इससे बड़ी बद-किस्मती राजस्थान की और क्या होगी। कल

(श्री भैरोंसिंह)

सुखाड़िया साहब कह रहे थे कि मानवता के आधार पर उन्होंने अकाल की स्थिति का मुकाबला किया, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि आपकी वह मानवता उस समय कहां गई थी जब जयपुर में गोली काण्ड हुआ था, उस समय आपने मानवता का कोई परिचय नहीं दिया। 9 आदमी मारे गये और 72 आदमी घायल हो गये, कइयों के मकान जला दिये, कइयों की दुकानें जला दी गई। मैं सुखाड़िया जी से मामूली सवाल पूछना चाहता हूं कि उदयपुर में दो बार साम्प्रदायिक दंगे हुए, वहां दुकानें जलाई गई तो राजस्थान के मुख्य मंत्री जी फौरन स्पेशल हवाई जहाज ले कर उदयपुर पहुंचे प्रत्येक दुकान पर गये प्रत्येक व्यक्ति से मिले, नुकसान का फौरन असेसमेंट कराया गया और राजस्थान विधान सभा में सप्लीमेंटरी ग्रांट लाकर लोन दिया गया और उन लोगों को सब्सीडी दी गई। उदयपुर में दुकानें जल जायं राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी फौरन स्पेशल हवाई जहाज ले कर एक घंटे में उदयपुर पहुंच जाते हैं और वहां मौके पर जा कर प्रत्येक व्यक्ति से मिल कर नुकसान का फौरन असेसमेंट करवाते हैं और उनको सब्सीडी देते हैं पर जयपुर में इतने लोग मारे गये, इतने लोग घायल हुए, दुकानें और मकान जलाये गये तो भी सुखाड़ियाजी नहीं पहुंचे सुखाड़ियाजी के कलेक्टर नहीं पहुंचे, लोगों की दुकानें जल गईं तो कोई असेसमेंट नहीं किया गया। जो लोग मार डाले गये, जो लोग घायल हुए उनके मकान पर राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी नहीं गये, कलेक्टर नहीं गये, उनके मकान पर आई. जी. पी. नहीं गये, एस. पी. नहीं जा सकते और उदयपुर में किसी के सर मे दर्द भी हो जाय तो सुखाड़ियाजी जा सकते हैं। राजस्थान के मुख्य मंत्री के सामने सब बराबर होने चाहिये पर उदयपुर में तो किसी के सिर में भी दर्द हो तो आप जाते हैं, इसमें हमें आपत्ति नहीं पर दूसरों के सिर फूट जायं, टांग टूट जाय तो भी आप पूछने नहीं जाओ तो यह उचित नहीं है यदि यह कहा जाय कि जयपुर में मुख्य मंत्री जी घूमें तो लोग पत्थर फेंकें, तो मैं इसको सही नहीं मानता। प्रदर्शन हो सकते हैं झगड़ा भी हो सकता है पर इसको एक एस्टेब्लिस्ड फैक्ट समझें कि सुखाड़ियाजी गोपालजी के रास्ते में चले जायं तो झगड़ा हो जाय, यह उनका भय है।

अध्यक्ष महोदय, जयपुर के कलेक्टर कहते हैं कि 9 आदमी मर गये, जनसंघ पार्टी के सेक्रेटरी ने चिट्ठी लिखी कि 11 आदमी लापता हैं, संयोग से वह चिट्ठी अखबारों में चली गई तो उनको कहा गया कि आपको इसे पेपर्स में नहीं देना चाहिये था। वह चिट्ठी अखबार में निकलने से जो लोग जहां जहां भाग गये थे वे लोग वापिस आ गये। जनसंघ पार्टी के सेक्रेटरी ने दूसरी चिट्ठी कलेक्टर को लिखी कि 7 आदमी लापता हैं। आज तक उनका कोई पता नहीं है, कलेक्टर ने जवाब यह दिया कि थानों में जांच के लिये भेज दी है। जिन परिवार वालों के व्यक्ति गायब हैं वे किससे पूछें, कलेक्टर कोई जवाब नहीं देते, थानेदार उन्हें कोई जवाब नहीं देते, एम० पी० कोई जवाब नहीं देते सुखाड़ियाजी मिलते नहीं, नये गृह मंत्री बने हैं उनके बंगले के बाहर पुलिस का पहरा, अब जयपुर की जनता किसके सामने रोवे? राज्यपाल महोदय इस सदन में भाषण दे कर गये। आपको मालूम है, राज्यपाल कान्स्टीट्यूशनल हैड है।

(श्री भैरोंसिंह)

5 लाख रुपया प्रतिवर्ष राज्यपाल पर राजस्थान की गाढ़ी कमाई में से खर्च होता है। सम्पूर्णानन्दजी पर राजस्थान की गाढ़ी कमाई में से 25 लाख रुपया खर्च हुआ, उनसे 5 बार भाषण दिलाये केवल एक बार उनकी बुद्धि को उपयोग में लाने का काम उनके सामने रखा, 67 के चुनावों के बाद यह काम उनको दिया गया कि इसमें वे अपनी बुद्धि को काम में लायें। 25 लाख रुपया जिस आदमी पर खर्च करके अपनी बुद्धि को काम में लेने का कार्य सौंपा, जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा खर्च कर के जिसे अच्छे महलों में सुख सुविधाओं के साथ रखा, पर 25 लाख खर्च करने के बाद बुद्धि को काम में लेने का काम सौंपा गया तो वह बुद्धि भी कांग्रेस के साथ चली गई और सम्पूर्णानन्दजी ने कह दिया कि मैं निर्दलीय उम्मीदवारों को गिनता नहीं। राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी कभी स्वीकार नहीं करते कि निर्दलियों को नहीं गिना जाय, इन्दिरा गान्धी नहीं कहती कि निर्दलियों को नहीं गिना जाय, चौहान साहब नहीं कहते कि निर्दलियों को नहीं गिना जाय पर सम्पूर्णानन्दजी कहते हैं कि मैं निर्दलियों को नहीं गिनता, इसके पीछे मास्टर माइन्ड काम कर रहा था और यह है मोहनलाल सुखाड़िया, सम्पूर्णानन्दजी को धम्की दे दी, प्रदर्शन होंगे तो तुम्हारे खिलाफ काले झंडे दिखाये जायेंगे तो तुमको, पुतले जलाये जायेंगे तो तुम्हारे, मुख्य मंत्री मुझे बनना है वह मैं बन जाऊंगा, आपको तो बन रस जाना है। सम्पूर्णानन्दजी बेइज्जत, बे आबरू होकर गये, हिन्दुस्तान में कोई भी आज तक इतना बेइज्जत हो कर नहीं गया कब आयेंगे, वे कब जायेंगे यह छुपाया गया, गाड़ी में जायेंगे या हवाई जहाज में इसको छुपाया गया। यह हाल राजस्थान के राज्यपाल का हुआ, क्यों हुआ, इसलिये कि गलती की, गलती किसने कराई, सुखाड़ियाजी ने। सुखाड़ियाजी ने 12 तारीख को कहा कि मैं इन परिस्थितियों में हुकूमत नहीं बना सकता और सम्पूर्णानन्दजी ने कहा कि असेम्बली को भंग कर दिया जाय। सम्पूर्णानन्दजी ने और सुखाड़ियाजी ने मशविराह करके भारत सरकार को प्रस्ताव भेजा कि इस असेम्बली को भंग कर दिया जाय। यह संयोग की बात है कि असेम्बली को भंग नहीं किया गया। मैं राजस्थान विधान सभा के सदस्यों को निवेदन करना चाहूंगा कि हम सुखाड़ियाजी की इच्छा से यहां विधान सभा में नहीं बैठे हैं। इनकी चलती तो राजस्थान विधान सभा भंग हो जाती और सबको दुबारा चुनाव लड़ने पड़ते और चुनावों के जो नतीजे होते वह आप सब जानते है। पर इन दोनों का षड्यन्त्र नहीं चल सका, राजस्थान विधान सभा को भंग नहीं किया जा सका, और यह अब चल रही है। इसको भंग करने की सलाह सम्पूर्णानन्दजी ने दी। पर भारत सरकार ने उनकी सलाह को नहीं माना। भारत सरकार द्वारा जिनकी सलाह को नहीं माना गया क्या उनके लिये यह उचित था कि एक दिन भी उस कुर्सी पर बने रहें? अगर उनमें जरा भी नैतिकता होती, आदर्श होता तो सम्पूर्णानन्दजी त्याग-पत्र दे कर तुरन्त चले जाते। पर उन्होंने त्याग-पत्र नहीं दिया और कहा कि मैं तो 15 तारीख को ही जाऊंगा। जैसे ज्योतिष में लिखा हो कि 15 तारीख को गये तो बनारस सही सलामत मिलेगा। राजस्थान में भले ही कर्फ्यू ऑर्डर लगे पर बनारस सही सलामत

(श्री भैरोंसिंह)

बना रहे। सम्पूर्णानन्दजी चले गये, जाने से पहले सम्पूर्णानन्दजी स्टेटमेंट देते हैं कि स्थिति सामान्य होते ही प्रेसिडेन्ट रूल खत्म हो जायगा। इन्दिराजी स्टेटमेंट देती हैं कि स्थिति सामान्य होते ही राष्ट्रपति रूल समाप्त हो जायगा, चौहान साहब भी स्टेटमेंट देते हैं कि स्थिति सामान्य होते ही राष्ट्रपति शासन समाप्त कर दिया जायगा। हम लोग दिल्ली गये और पूछा कि कैसे यह सामान्य स्थिति होगी तो कहा गया कि गवर्नर रिपोर्ट करेगा। हमने पूछा कि गवर्नर कब रिपोर्ट करेंगे तो कहा गया कि जब एडवाइजर्स उनको रिपोर्ट देंगे। जब यह पूछा कि एडवाइजर्स कैसे रिपोर्ट देंगे तो कहा गया आई. जी. पी. जब यह रिपोर्ट करेंगे कि स्थिति सामान्य हो गई है।

दैव संयोग से आई. जी. पी. राजस्थान में ऐसे मिले हैं कि उनको रात के समय में यदि सुखाड़ियाजी यह कह दें कि इस समय दिन के 11 बजे हैं तो वे कह देंगे कि हां साहब दिन के 11 ही बजे हैं, अगर सुखाड़ियाजी उनको कह दें कि राजस्थान विधान सभा में जितने लोग बैठे हैं, वे आदमी नहीं महिलाएं बैठी हैं तो वे कहेंगे कि जी हां वास्तव में महिलाएं बैठी हुई हैं। तो इसका मतलब यह हुआ कि जब सुखाड़ियाजी कहेंगे कि सामान्य स्थिति हो गई है तब आई. जी. पी. रिपोर्ट करेंगे कि राजस्थान में सामान्य स्थिति हो गई, राष्ट्रपति शासन तभी खत्म होगा जब कि सुखाड़ियाजी विधायकों को खरीद कर लें और मनफूलसिंहजी को यह कह दें कि चार सरदारों के पहरे में एक एम. एल. ए. को कैद रखा इसके लिये तुम्हें महावीर चक्र दिया जाता है और दूसरों को जिन्होंने दो दो विधायकों को पकड़ा था उनको अशोक चक्र, मेम्बर्स को खरीद कर के सुखाड़ियाजी विजय की खुशी मना लें, उस समय आई. जी. पी. एडवाइजर्स को रिपोर्ट भेजेंगे कि राजस्थान में स्थिति सामान्य हो गई है, इस पर एडवाइजर्स गवर्नर को रिपोर्ट देंगे कि राजस्थान में स्थिति सामान्य हो गई और गवर्नर गृह मंत्री को रिपोर्ट भेजेंगे कि स्थिति सामान्य हो गई है, राष्ट्रपति शासन उठा लिया जाय और उस पर राष्ट्रपति की मोहर लग जायगी कि राजस्थान में स्थिति सामान्य है। तो इसका मतलब तो यह हुआ कि सूबों के अन्दर गवर्नर के नाम पर जो संस्था है वह पार्टी के आधार पर है। पार्टी के आधार पर राष्ट्रपति का चुनाव होता है तो पार्टी के आधार पर गवर्नर का चुनाव किया जाता है, पार्टी के आधार पर संरक्षण दिया जाता है तो इससे संविधान, राष्ट्रपति और राज्यपाल की परम्पराएं खत्म हो जायेंगी। लोगों की लोकतंत्र के प्रति आस्था खत्म होगी। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि थोड़ा सा समय बचा है। आज राष्ट्रपति का चुनाव हो रहा है। श्री सुब्बाराव और श्री जाकिर हुसैन के बीच संघर्ष है। मैं आप लोगों से निवेदन करना चाहूंगा कि संविधान को यदि बचाना है, लोकतन्त्र के प्रति आस्था रखते हैं, शासन ईमानदार व्यक्ति के हाथ में देना है, संविधान की रक्षा करनी है तो ऊपर जाइए और सुब्बाराव के नाम के आगे निशान लगाइए।

(विरोधी पक्ष की ओर से हर्ष ध्वनि-शोरगुल)

श्री पूनमचन्द बिश्नोई : आप विधान सभा में बैठकर इस प्रकार का प्रचार नहीं कर सकते कि वोट उसको दिया जाय।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : (अश्रव्य)।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : नहीं कर सकते।

श्री देवीदत : ये लोग जाकिर हुसैन के दलाल हैं।

श्री भेरोंसिंह : इन सब चीजों का परिणाम देखा होगा। स्वयं राजस्थान के कांग्रेस नेताओं ने मुख्य मंत्रीजी और अन्य विधायक भी इस बात की दाद देंगे कि राज्यपाल के निर्णय के बाद जो हड़ताल हुई, वह स्वयं कांग्रेस के लोग भी स्वीकार करेंगे कि उन्होंने अपने जन्मकाल में और किसी आन्दोलन के वक्त ऐसी हड़ताल नहीं देखी होगी। मैं चैलेंज तो नहीं करता लेकिन मैं इतनी बात कहता हूं कि उस दिन की हड़ताल सारे राजस्थान में अभूतपूर्व थी। यह हड़ताल इस बात का संकेत करती थी कि राज्यपाल महोदय के इस एक्शन को जनता कन्डेम करती है, सारे एक्शन के प्रति जनता का उत्साह नहीं है। राजस्थान में कांग्रेस शासन स्थापित किया जाय, जनता इसको स्वीकार नहीं करती है। इसलिए आप लोगों को महसूस करके चलना पड़ेगा कि जनमत किधर जा रहा है। जनमत की अवहेलना करके केवल सत्ता के आधार पर सब कुछ करने की कोशिश करेंगे तो लोकतंत्र बचेगा नहीं, लोकतंत्र में कई झगड़े होंगे।

विधायक को तोड़ने का काम केवल मंत्री लोग करें तो समझ में आ सकता है, विधायक करें तो समझ में आ सकता है हम राजनैतिक क्षेत्र में काम करने वाले नीचे स्तर पर जाकर ऐसा करें तो समझ में आ सकता है लेकिन सरकारी अधिकारी यदि समझ लें कि उस विधायक को तोड़ेंगे तो आई०एस० एस० में आ जायेंगे या आई०पी०एस० में आ जायेंगे, मेरा पोस्टिंग अच्छी जगह हो जायेगा तो यह दुर्भाग्य की बात है। मैं बाकी के उदाहरण तो बाद में दूंगा लेकिन एक ताजा उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं–वह पाली से जीते हुए श्री दौलतराम का। इन्होंने राजस्थान के एक मंत्री श्री डांगी को पराजित किया। यह पटवारी थे। इन्होंने इस्तीफा देकर चुनाव लड़ा और राजस्थान के उप-मंत्री को पराजित किया। इन्होने इस्तीफा दिया जनवरी में और वह मंजूर भी हुआ। कलेक्टर महोदय 13-4-67 को उनको नोटिस भेजते हैं वह मैं पढ़ कर सुनाता हूं :

"कार्यालय कलेक्टर भू०अ० पाली।

नोटिस

सायल	गैर सायल
श्री घेबरचन्द्रजोशी	भूतपूर्व पटवारी श्री
साकिन नाडोल	दौलतराम रानी गांव
हाल कुमारों का	तहसील देसूरी।
बास पाली	

बनाम श्री दौलतराम गैर सायल

आपने ब ओहदे पटवारी नेब, तहसील सोजत संवत् 2017 व 2018 की बिघोडी व अन्य सरकारी रकम वसूल करने के मामले में सरकारी रकम का गबन किया जो भारतीय दंड विधान के अन्तर्गत काबिल दस्तन्दाजी पुलिस जुर्म की तारीफ में आता है। अतः इस नोटिस प्राप्ति के एक सप्ताह के भीतर अपना जवाब प्रस्तुत करें कि यह मामला तफतीस पुलिस में क्यों नहीं दिया जाय।

ह० कलेक्टर पाली।"

Page No. 28

(श्री भैरोंसिंह)

यह पटवारी आज नहीं है। यह नोटिस 13-4-67 का है जिन दिनों आपकी भगदौड़ चल रही थी।

श्री पूनमचन्द बिश्नोई : गबन के मामले में मियाद का कानून नहीं लागू होता है। आप इस तरह का बर्ताव मत कीजिए। इस प्रकार का बर्ताव सब कर सकते हैं। गवर्नमेंट बनानी है आपको तो कोशिश करो।

श्री देवीदत्त : ऐसा करने से उप-मंत्री नहीं बन सकते।

श्री श्रवणलाल : जो सोने की ईंटें खा गए उन पर तो केसेज चलाओ।

श्री पूनमचन्द बिश्नोई : जिस तरह से आप बर्ताव करते हैं, उससे सदन की मर्यादा कम होती है। माननीय सदस्य अभी नये नये आए हैं....

श्री श्रवणलाल : आप नए हैं।

श्री पूनमचन्द बिश्नोई : मैं तो बहुत पुराना हूं, आप नए हैं।

श्री श्रवणलाल : मै वर्षों का पुराना हूं, आपको पता नहीं है।

श्री पूनमचन्द बिश्नोई : आपको कुछ भी पता नहीं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : बीच में कहां छुट्टी पर गए हुए थे ?

श्री भैरोंसिंह : किसी आदमी ने गबन किया हो मुझे उस सम्बन्ध में कहने का कोई अधिकार नहीं, गबन के मामले में किसी पर मुकदमा बने, मैं उसके लिये कोई सफाई देना नहीं चाहता, मैं इस प्रकार की वकालत नहीं करना चाहता। कोई गबन करे और फँसे मैं चाहूंगा और देखना चाहूंगा लेकिन यह गबन नहीं है। बिश्नोई साहब ! लेकिन इस गबन की आज इन्क्वायरी होती है। जिस समय इनको सस्पैंड किया गया गबन के मामले में, इन्क्वायरी हुई और इन्क्वायरी के बाद 4-2-64 को रीइन्स्टेट कर दिया गया। 1964 की फरवरी से लेकर दिसम्बर 1966 तक उन्होंने राज्य सेवा की। आखिर वह चुनाव लड़े और जीते। चुनाव में जीतने तक किसी प्रकार का चार्ज नहीं था। जीतने के बाद विरोधी दल में गए, उस समय तक किसी प्रकार का चार्ज नहीं था लेकिन कलेक्टर के दबाव में आकर कांग्रेस में नहीं गए इसलिए इस प्रकार का नोटिस जारी किया गया। इस प्रकार एक्शन लेने का कलेक्टर को क्या हक है ? आप वकील हैं (श्री पूनमचन्द बिश्नोई से) आप मंत्री रहे हैं, आप जुम्मेदार आदमी है। आज कोई व्यक्ति राज्य सेवा में नहीं हैं तो कलेक्टर को नोटिस देने का क्या अधिकार है ? गबन के मामले में नोटिस दिया जाता है ? यदि गबन का मामला है तो केस रजिस्टर किया जाता है, नोटिस नहीं दिया जाता। लेकिन यहां तो नोटिस दिया गया है इस बात का कि गबन की तलवार है। सुखाड़ियाजी के पैर पकड़ो नहीं तो जेलखाने में रख दूंगा। इस नोटिस के पीछे बहुत कुछ आता है।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : नोटिस किस तारीख का है ?

श्री भैरोंसिंह : 13-4-67 का।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : तब तो राष्ट्रपति शासन था ।

श्री भैरोंसिंह : लेकिन आपकी कार्यवाही तो चालू थी उस समय भी । अध्यक्ष महोदय, दूसरा सवाल आता है, हमारी सरकार के पक्ष के लोग कहते हैं कि कांग्रेस कम्बाइंड अपोजीशन से जीत कर आई है । हमने 88 सीटें ली हैं । कल विरोधी दल के नेता ने अकाल के प्रश्न को लेकर इस सदन का ध्यान आकर्षित किया था । मैं ऐसा समझता हूं कि दुर्भाग्य की बात है कि राजस्थान में हर समय अकाल पड़ता है और वह कांग्रेस सरकार से जुड़ा हुआ है । सुखाड़ियाजी जब से गद्दीनशीन हैं तब से राजस्थान में कोई वर्ष ऐसा नहीं गया होगा जिस वर्ष राजस्थान के अन्दर प्रकृति का प्रकोप राजस्थान की जनता को नहीं भुगतना पड़ा, कभी अकाल तो कभी बाढ़, कभी डाकुओं के कारण तो कभी बीमारी के कारण । सुखाड़ियाजी सुरक्षित हैं तो प्रकृति का प्रकोप भी सुरक्षित है । ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं । यदि सुखाड़ियाजी को जनता भुगतने के लिये तैयार है तो अकाल को भी भुगतना पड़ेगा ।

अकाल चल रहा है लेकिन अफसोस इस बात का है कि हमारी सरकार कहती है कि अकाल इतना भयंकर था कि 12 करोड़ रुपए खर्च कर दिए । राजस्थान के 26 जिलों में से 23 जिलों में अकाल पड़ गया । कल महारावल साहब के बोलने के बाद और सुखाड़ियाजी के संकेत होने के बाद मैंने अकाल के आंकड़े ढूंढ निकाले । गत वर्ष और 1963-64 वर्तमान अकाल से कितना भयंकर था, इस बात को सुखाड़ियाजी भी स्वीकार करेंगे, राजस्थान की जनता स्वीकार करेगी, राजस्थान का बच्चा बच्चा जानता है । राजस्थान में 1963-64 का अकाल जितना भयंकर था उतना यह अकाल 1966-67 का नहीं है । पिछले साल के मुकाबले में यह अकाल उतना भयंकर नहीं है । मैं दो तुलनात्मक आंकड़े रखना चाहता हूं । 1963 में 23 जिलों में अकाल था और 121 तहसीलें कवर्ड थीं, और इस साल 120 इस साल 9715 गांव कवर्ड है । पिछले साल 1126 थे । पिछले साल 55 लाख पाप्युलेशन अफेक्टेड थी । इस साल 45 लाख है । पिछली बार खर्चा हुआ 131 लाख और 1966-67 में हुआ 752 लाख । यह खर्चा आगे चल कर 12 करोड़ का होने वाला है ।

अब मेरी समझ में नहीं आता कि अकाल के जिले बराबर, अकाल के गांव बराबर, स्टेटमेन्ट इस सम्बन्ध में यदि पढ कर सुनाऊं तो, अध्यक्ष महोदय, ज्यादा समय लगेगा । टोंक जिले को ही ले लीजिये पिछले वर्ष के मुकाबले में बरसात ज्यादा हुई लेकिन वहां पर भयंकर अकाल उसको बताया गया और भयंकर अकाल में दामोदरजी विधान सभा में आकर बैठकर गये । लेकिन आंकड़े बोलते हैं । सरकार कहती है कि चुनावों के दिनों में हमने रिलीफ वर्क्स चालू किये, रिलीफ वर्क्स चालू करने का मैं विरोधी नहीं हूं, यदि अकाल के अलावा भी एम्प्लॉयमेन्ट लोगों को मिलता है तो मुझे उसकी सबसे ज्यादा खुशी होगी, लेकिन जो हालात है उनको देखकर बड़ा दुख होता है । राजस्थान की जनता भूख से त्राही-त्राही कर रही है और कांग्रेस के लोग वोटों के त्राही त्राही कर रहे हैं । भूखी प्यासी जनता सरकारी पैसे पर जीवित रहना चाहती है और यही सरकार गरीबों की रोटी में से रोटी निकाल कर, पानी निकाल कर राजनैतिक

(श्री भैरोंसिंह)

शोषण करना चाहती है। कहते हैं कि एक एक दिन में तीन तीन लाख लोगों को रिलीफ दिया। फरवरी में 4 लाख का नम्बर था, 12 फरवरी को चुनाव हुए, मस्टर रोल में 4 लाख 80 हजार लोगों को एम्प्लॉयमेन्ट मिला हुआ था। 4 लाख 80 हजार मतदाताओं को एक एक रुपया डेढ़ डेढ़ रुपया देते हैं, उनको घर पर नहीं जाने देते है, कांग्रेस की झंडियां लगा दीं, कांग्रेस के वर्कर्स नियुक्त कर दिये, महात्मा गांधी की जय बुला दी, दामोदरजी और सुखाड़ियाजी के गीत गवाये फिर यह कोई समझे कि गरीब आदमी ईमानदारी से वोट देगा, वह ईमानदारी से वोट नहीं दे सकता। उन रिलीफ वर्क्स में काम करने वाले लोगों को पांच लाख रुपया रोज देकर राजनैतिक शोषण किया गया। मैंने नक्शा देखा है। जहां रिलीफ वर्कस् कम खोलने की आवश्यकता थी वहां अधिक खोले और वहां पर कांग्रेस जीती, विरोधी दल का सफाया हो गया और जहां अधिक रिलीफ वर्कस् की आवश्यकता थी और वहां नहीं खोले या कम खोले वहां पर कांग्रेस नहीं जीती और विरोधी दल जीता।

श्री देवीलाल : यह गलत है।

श्री जयकिशन शर्मा : गंगानगर में बता दीजिये, कितना काम हुआ?

श्री भैरोंसिंह : देखिये। उदयपुर के अंदर एक एक को लीजिये। नक्शा मेरे पास है सब का। इसमें टाइम जरूर लगेगा।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : जोधपुर को लीजिये।

श्री भैरोंसिंह : आप जैसे व्यक्ति थे इस लिये काम नहीं हुए। अकाल सिद्ध करना है कहीं पर उसके लिये ट्रेनिंग की आवश्यकता है और माफ कीजिये आप इस सम्बन्ध में अनट्रेन्ड है। इसके लिये आपको यदि ट्रेनिंग लेनी है तो आप दामोदरजी के पास जाइये जो सूखे की जगह गीला और गीले की जगह सूखा बना सकते हैं।

श्री जयकिशन : आप से ट्रेनिंग ले लें।

श्री भैरोंसिंह : ऐसी हालत में यह राहत कार्य इस प्रकार से खोले गये। इस रिपोर्ट में और कितने ही काम लिये गये हैं। चाहे पीने के पानी का काम हो, चाहे घास इकट्ठा करने का काम हो, चाहे रिलीफ देने के काम हों, ये सारे उन जिलों में अधिक हुए है, जहां कांग्रेस जीती है। जब अकाल के सम्बन्ध में बहस होगी उस समय इसको डिस्कस करने का मौका मिलेगा। मैं यहां तो संकेत के रूप ही कह देता हूं। जानवरों की निकासी पर बात उठायी। एक बात ही ले लीजिये। माइग्रेशन हुआ और इस साल माइग्रेशन कितना हुआ? पिछले साल कितना माइग्रेशन कितना हुआ? जितनी ज्यादा अकाल की स्थिति थी इसके मुकाबले में माइग्रेशन कितना था और कितना घास इकट्ठा किया गया? फरवरी में पांच लाख आदमी काम कर रहे थे रिलीफ वर्कस् पर और फरवरी के बाद और चुनावों के ठीक बाद जहां मस्टर रोल पांच लाख आदमियों का था वहां वह दो लाख 80 हजार पर आ गया। यह दो दिनों में ही मजदूरों की क्यों संख्या घट गयी? लोगों को रिलीफ वर्कस् के द्वारा काम देना था वह सब बातें हवा में उड़ गयीं। चुनाव प्रचार था। राहत कार्य खोले हैं, पेट भरना है तो कांग्रेस को वोट दो। बस एक बार वोट ले लिया और उन लोगों को पांच वर्ष के लिये भूख मिली इनाम

(श्री भैरोंसिंह)

में। चुनावों के नाम पर इस प्रकार की कार्यवाहियां की गई। आप इसके लिये यदि सच्चे हैं तो इसी सदन की एक समिति बनायी जाय और वह उन क्षेत्रों का दौरा करें और इस बात की जांच करें कि 18 करोड़ की रिलीफ वर्क्स खोल कर भूखों को रोजगार देने की व्यवस्था थी उसमें कितना कहां कहां खर्च हुआ उसकी जानकारी मिलेगी। आयन्दा मस्टर रोल गलत न बनें यह तो मालूम होगा। आप भी नहीं चाहेंगे और हम भी नहीं चाहेंगे कि ये काम परमानेन्ट बन कर एक्सेकेर को हल्का किया जाय। यह हल्का नहीं होगा जब तक की आप जांच नहीं करेंगे।

राजस्थान सरकार कहती है कि नया फेमीन कोड बनायेंगे। फेमीन कोड बनता है लेकिन सेक्रेटेरियेट में गायब हो जाता है। विधान सभा में कहते हैं कि साइक्लोस्टाइल हुआ है, टाइप हुआ है लेकिन वह गायब हो जाता है। फेमीन कोड नहीं बनता और बनता है तो गायब हो जाता है। यह कर अब आगे चलना चाहूंगा।

अब प्रश्न आता है अनाज का। लोग कहते हैं और मैं भी कहता हूं कि राजस्थान में अनाज की भीषण समस्या है। इस संबंध में सरकार ने किस प्रकार शोषण किया। मण्डी कमेटीज कानून बनाया। समस्त व्यापारियों ने इसका विरोध किया। नाथूरामजी से कहा। फिर वे लोग हाई कोर्ट में गये। नाथूरामजी के भाषण हैं और कहते थे कि मेरे पास जनता है, मण्डी कमेटीज कानून पास करो। मैं तो यह जनता के हुक्म से कर रहा हूं। कानून पास किया। व्यापारियों के विरोध को लेकर उसको खत्म भी कर दिया। चुनाव खत्म हुआ और उसको वापिस लागू कर दिया। राजस्थान में सूखे और गीले दो क्षेत्र बना रखे है। अनाज के लिये दोनों में आने पर प्रतिबन्ध लगा रखा है। इससे भावों में बढ़ोतरी होती है जब हम उनको कहते हैं तो कृषि मन्त्री जिद्द करके कहते हैं कि तुम तो व्यापारियों की वकालत करते हो। उनको मालूम नहीं था कि दो भागों में विभक्त करने से क्या हालत हुई। चुनाव आये तो एक महीने पहले व्यापारियों को खुश करने के लिये मूवमेंन्ट पर पाबन्दी थी उसको हटा दिया। व्यापारियों को खुश करने के लिये चना खरीदने का कानून बनाया। व्यापारियों से कहा पूरी कीमत देकर खरीदेंगे। सरकार ने कहा हमारी रेट पर खरीदेंगे। ज्यादा नहीं खरीद सके। एक बहुत बड़ी बात हुई जिम्मेदारी से इसको सुन लें। चने की निकासी का कानून बना। जितना सरकारी गोदामों में चना जमा होगा सरकार द्वारा निर्धारित दरों पर होगा उतना ही चना बाहर निकास कर सकेंगे और नो ओब्जेक्शन सर्टिफिकेट कलेक्टर से लेना होता है। कलेक्टर से नो ओब्जेक्शन सर्टिफिकेट लिया और लेने के बाद तमाशा क्या हुआ कि अचानक रात को यह आदेश हुए कि आज से चने की निकासी बन्द। नोटिफिकेशन कोई नहीं निकला इसके लिये अचानक रेडियो पर समाचार आये। उसके बाद 32 हजार बोरी चने की निकासी होनी चाहिये थी, वह नहीं हुई, वह स्टेशन पर और सरकारी गोदामों के सामने रह गयी। तीन वर्ष से इस चने के मामले की लोकसभा और विधान सभा में कई बार चर्चा हुई, सरकार ने इस बात को स्वीकार नहीं किया कि चने की निकासी होगी लेकिन चुनाव के पहले दस रुपया एक बोरी के नाम से इकट्ठा किया गया।

(श्री भैरोंसिंह)

3 लाख बीस हजार रुपया इकट्ठा किया गया जिसमें से दो लाख रुपया तो लौटा दिया गया और 38 लाख रुपये के मुआवजे के लिए कागजात बनाये गये। जब वे कागजात फाइनेन्स डिपार्टमेन्ट को भेजे गये तो उनके लिए कहा गया कि इनमें से काफी क्लेम्स गलत हैं अतः उनकी जानकारी दें। जानकारी देने के बाद तीन लाख बीस हजार में से एक मंत्र ने दो लाख रुपये नकद लिये थे। फाइनेन्स डिपार्टमेंट ने उस मुआवजे के लिए एग्री नहीं किया। व्यापारियों से जो वाट लेने थे वो ले लिए गये। उसके बाद जब व्यापारियों ने कहा या तो हमें मुआवजा दो या हमारे से जो दो लाख रुपये लिये गये हैं उनको वापिस दे दो। आज जब कि राजस्थान की जनता भूखों मर रही है वहां चने की निकासी की बातें करके मंत्री महोदय दो लाख की रिश्वत लें इससे ज्यादा शर्मनाक चीज और क्या हो सकती है। लेकिन जब निकासी नहीं हो सकी तो जो रुपया रिश्वत के रूप में लिया गया उसको निकलवाने में जनता और व्यापारियों को कितनी मुसीबत का सामना करना पड़ा और आखिर बड़ी मुश्किल मे वह पैसा निकलवाया गया। अब उस मामले को फिर उठाया जा रहा है कि 32 हजार बोरी चना जो रोका गया उसका मुआवजा मिलना चाहिये तो उसके लिए कहा जा रहा है कि या तो मुआवजा देंगे या निकासी का परमिट देंगे। लेकिन उसके लिए भी रिश्वत के रूप में पैसा दो तो परमिट मिलेगा नहीं दोगे तो परमिट नहीं मिलेगा।

आज जब कि राजस्थान की जनता के पास अनाज खाने के लिए नहीं, जनता के पास पैसे का अभाव है। वैसी हालत में सप्लाई विभाग को यह लिस्ट बनानी चाहिये कि कितना अनाज हमारे यहां है और कितनी कमी है। आज जो अनाज मोठ, ग्वार आदि बाहर जाते हैं उससे हमारे मवेशियों को पूरी खुराक नहीं मिलने से वे भी मौत के मुंह में जा रहे हैं। आज ग्वार और मोठ का चोरी छिपे स्मगलिंग हो रहा है। ग्वार बाहर जा रहा है जो गम बनाने के काम में आता है। इसके लिये भारत सरकार के नेताओं ने कहा है कि जितनी ग्वार की निकासी की इजाजत दी है उससे ज्यादा बाहर जाता है, मोठ जाता है आखिर वह किस प्रकार से जाता है इस बारे में भी आप जानकारी करेंगे। मोठ, ग्वार की निकासी के लिए कमीशन बंधा हुआ है वह कमीशन देकर जितना भी मोठ, ग्वार चाहो आप बाहर ले जा सकते हो। इस तरह से जो अनाज बाहर जा रहा है उसके बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए।

आज हालत यह है कि हमारे यहां 42 लाख टन अनाज की खपत है। और हमारे पास उपलब्ध सिर्फ 34 लाख टन है। भारत सरकार और अन्य राज्य सरकारों से हम 6 लाख टन अनाज प्राप्त करते हैं इस तरह से चालीस और अड़तीस लाख टन अनाज हमारे पास मौजूद रहता है। फिर भी हमारे पास चार लाख टन अनाज की कमी रहती है। आज कहीं भूख से कोई मरता है तो उसके लिए राज्य सरकार यह कहती है कि वह भूख से नहीं किन्तु पेट में दर्द होजाने से या बुखार से या मलेरिया से पीड़ित होकर मर गया है। मुझे बाड़मेर के इलाके में जाने का मौका मिला जहां पर लोगों में माइलो बांटा गया था। उससे कई लोगों की मृत्यु हुई है जिसका उल्लेख अमृत नाहटा ने जो लोक सभा के सदस्य हैं, अपने वक्तव्य में

Page No. 33

(श्री भैरोंसिंह)

किया है। उन्होंने भी इस बात की तस्दीक की है कि उन लोगों को जो फेमिन में काम करते थे उनको बराबर वेतन नहीं मिला, अनाज नहीं मिला इस वास्ते वहां के लोग मर गये। यह मैं नहीं कह रहा हूं आपके लोकसभा के सदस्य श्री अमृत नाहटा का कथन है। वह स्टेटमेन्ट मेरे पास है अगर आप चाहें तो मैं बताने के लिए तैयार हूं।

जैसा मैंने कहा शराब के बारे में, उसके कारण लड़ाई मैंने ठेकेदारों से ली। एक एक ठेकेदार मेरे पीछे पड़ गया। मैंने उनसे पूछा आखिर आपका मेरे से क्या वास्ता है, मैं तो शराब पीता नहीं। हो सकता है मेरे भाई दूसरे पीते हों। उनका कहना था कि हमारा आपसे व्यक्तिगत विरोध नहीं। विरोध तो हमारा किसी से नहीं लेकिन 68 लाख रुपया जो गारन्टी सिस्टम का बकाया है वह मिल जाय। इसलिए जब भैरोंसिंहजी हार जाय तो हमें यह 68 लाख रुपया गारन्टी का मिल सकता है। इस कारण हम जगह जगह घूम रहे है कांग्रेस को विजयी बनाने के लिए। अगर कांग्रेस को जिताओगे तो गारन्टी सिस्टम के 68 लाख रुपये माफ होने वाले हैं। मैंने उनसे कहा कि जिनके पास यह महकमा है वे दामोदरजी इस तरह से पकड़ में आने वाले नहीं हैं। उन्होंने कहा फौरिन लिकर के लिए हम परमिट दे देंगे उसके लिए एप्लीकेशन लाओ। उसके बाद में सर्वे करूंगा, आइडेन्टीफाई करके फोरिन लिकर के लिए परमिट मिलेगा। मैंने उनसे कहा दामोदरजी के यहां आप 6 महीने तक जूतियें लटकाते फिरो, जूतियें खो दोगे लेकिन उनसे परमिट हासिल नहीं कर पाओगे। वे आसानी से निहाल करने वाले नहीं। आखिर यही हुआ उन्होंने यही कहा कि चुनाव तक के लिए मैंने यह कहा था।

एक बात यह अच्छी हुई जहां राजस्थान में शराब की दुकानें कहीं कहीं देखने को मिलती थीं आज हमारे मन्त्री महोदय ने शराब की हालत यह कर दी कि शराब खुले रूप में खूब बिकता है। चुनाव के दिनों में मैं इतनी तारीफ करूंगा, कदम-कदम पर शराब की दुकानें खोल दीं। आप राजस्थान में अन्न, पानी और बिजली की समस्या का हल नहीं कर सके, इनको सस्ती नहीं कर सके लेकिन शराब दामोदरजी व्यास ने इतनी सस्ती कर दी और जनता को दिल खोल कर शराब पीने की छूट दे दी।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : यही तो सच्चा गांधीवाद है।

श्री भैरोंसिंह : इसके लिए जितना हम लोग उनको धन्यवाद दे सकते हैं, दें। इसमें भी अध्यक्ष महोदय, कहते है कि 16 लाख का घाटा हुआ। अब 16 लाख का घाटा क्यों हुआ यह तो मैं बजट के समय बताऊंगा, हमारे मन्त्रिमण्डल में कई नई शक्लें हैं और कई पुरानी शक्लें हैं।

राज्यपाल महोदय ने अभिभाषण में बताया कि 57 लाख रुपये की बचत होगी। कब 100 करोड़ के बजट में 57 लाख की बचत होगी, यह बात इतनी महत्वपूर्ण हो गई कि राज्यपाल महोदय को भाषण में कहनी पड़ी। अध्यक्ष महोदय, आप भी स्वीकार करेंगे कि 1962-63 में मन्त्रियों पर खर्च होता था 10 लाख 50 हजार और 66-67 में हुआ 31 लाख। टेलीफोन पर खर्चा 1962-63 में था 1 लाख और 1966-67 में 3.30 लाख और गाड़ियों के

(श्री भैरोंसिंह)
पेट्रोल पर हुआ 3.20 लाख। इसके अलावा पेट्रोल का पहले यह कायदा था कि जयपुर शहर में जितना भी पेट्रोल खर्च हुआ वह सारा का सारा आपको मिल जायेगा। 275 से 500 लिटर तक जयपुर शहर के अन्दर खर्च कर सकते हैं। अब 500 लिटर का हिसाब लगावें तो जब शहर में 100 मील घूमें तब जाकर 500 लिटर खर्च होता है। अब मैं पूछना चाहता हूं कि जयपुर शहर में 100 मील कहां जाते हैं। आपके घरवाले भी मिला कर देखा जाये तो जयपुर शहर में ज्यादा से ज्यादा 10 या 20 मील घूम लेवें, यह 100 मील कहां जाते हैं ? लेकिन आपने कई मन्त्रियों ने पूरा का पूरा पेट्रोल लिया। इसका मतलब मन्त्री लोग शहर में 100 मील घूमे। अब 100 मील का पेट्रोल तो ले लिया लेकिन गाड़ियों के लाग बुक में एन्टर किये केवल दस मील, बीस मील। अब आपके मन्त्री स्तर के लोग जब दस या बीस मील घूमकर 100 मील का पेट्रोल क्लेम कर लें तो फिर अधिकारियों से मत उम्मीद करिये कि वे ईमानदार होंगे।

मन्त्रियों को 25 रुपये तक का पानी और 75 रुपये तक की बिजली मुफ्त दी जाती थी, लेकिन सरकार ने तय किया कि 25 रुपये के पानी से काम नहीं चलता, इसको जलन्दर की बीमारी है, इसलिए सरकार ने तय किया कि इनको सारा का सारा पानी मुफ्त दिया जाय। 75 रुपये की बिजली से काम नहीं चलता क्यों कि गर्मी खूब बढ़ गई है, कूलर्स चाहियें, तो जितनी बिजली चाहो उतनी मुफ्त लो। बिजली और पानी की कोई सीमा नहीं। जितना चाहो पानी निकालो और जितनी चाहो, बिजली लो। राजस्थान की जनता से कहते हैं कि बिजली कम खर्चो देश में संकट है और खुद कितनी भी खर्च करो इसकी कोई लिमिट नहीं।

अब अध्यक्ष महोदय, इस हालत के अन्दर हम क्या और कैसे उम्मीद करें कि राजस्थान के यह मन्त्री किसी भी प्रकार से कोई काम कर सकेंगे। राजस्थान का मन्त्रि-मण्डल भी किस तरह बना ? अध्यक्ष महोदय, दो तीन मेम्बर इधर के उधर चले गये, लोग समझते हैं कि यह उनकी कमजोरी है, मैं कहता हूं वे दया के पात्र हैं। राजस्थान के मुख्य मन्त्री 18 वर्ष राज्य करने के बाद भी सरेण्डर करने लगे, और इतने जल्दी साष्टांग प्रणाम कर दें, घुटने टेक दें। कैसे टेकें ? एक हमारे एम-एल.ए. ने तार दिया। कहा मेरे पास सात आदमियों की एक फौज है। दस्तखत हैं मेरे पास मैं उनको लीडर नहीं चाहता, तार दिया उसने। कहा लीडर बदलो। लीडर नहीं बदला तो मैं रिकन्सीडर करूंगा। टेलीग्राम दिया। अब इसके बाद में, सुखाड़ियाजी अकड़ते हैं, तो बहुत अकड़ते हैं और झुकते हैं तो इतना जल्दी झुकते हैं। झुककर क्या किया ? बुलाया, पूछा, जवाब मिला डिप्टी मिनिस्टरी देते हो कि नहीं देते हो ? समस्या सामने खड़ी हो गई। एक बार तो बुलाकर कहा नहीं लेंगे। पर फिर सोचा नहीं लेंगे तो नहीं मालूम क्या गड़बड़ी होगी। सुबह लेजाकर शपथ दिला दी। आप अपने मन्त्रिमण्डल में किसी को मन्त्री बनाओ, किसी को न बनाओ यह आपके मन का अपनी पसन्द की बात है। हमें इससे लेना देना नहीं।

पर, सुखाड़ियाजी एक बात आपको मालूम है, 65 में पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान पर हमला

(श्री भैरोंसिंह)
किया, संचार व्यवस्था का अभाव, सड़कों की कमी, अविकसित क्षेत्र होने के नाते लोगों के पास हथियार की कमी थी इस कारण राजस्थान की वीर भूमि और पवित्र भूमि में पाकिस्तान ने अपने पैर जमाये। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सीमा पर रहने वाले हिन्दुस्तान के क्षेत्र में कुछ लोगों ने गद्दारी की। दुश्मनों का साथ दिया। हमलावरों का साथ दिया और की पोइन्ट्स पर हमला करवाया। भारत की इज्जत लुटवाने में देश के दुश्मनों को सहयोग दिया। किसी तरह से भारत की सेना और राजस्थान की देशभक्त पुलिस ने अपनी बहादुरी से मुकाबले में पाकिस्तान को परास्त करके तिरंगे झंडे की शान को बनाये रखा, तिरंगे झंडे को ऊंचा किया। यह दुर्भाग्य की बात है कि सारे संघर्ष में राजस्थान में पाकिस्तान ने जिस तरह पैर जमाये उनके कारण राजस्थान को बहुत बड़ी हानि हुई। राजस्थान के माथे पर बहुत बड़ा कलंक लगा। उस समय देश का और इस प्रान्त का बच्चा बच्चा जानता है कि बोर्डर पर रहने वाले लोगों ने फौज और पुलिस को कैसा कैसा सहयोग दिया था और इसके कारण पुलिस और सेना ने किस तरह से दुश्मन का डटकर मुकाबला किया था। भारतीय सेना ने और राजस्थान की पुलिस के वीर सिपाहियों ने दुश्मन के सामने खड़े होकर दुश्मन की गोलियों को अपने सीनों पर जिस शान के साथ बर्दाश्त किया था पर दुश्मन के दांत खट्टे कर दिये तो इसके लिये भारत सरकार ने उनको इनाम और इकरार दिये, राजस्थान सरकार ने भी दिये।

आज उसी सरकार में एक उप-मंत्री ऐसे बैठे हैं जिन्होंने 22-1-65 को राजस्थान के मुख्य मन्त्री को एक पत्र लिखा और इस पत्र में सभी बातों को गलत बताया है जिसको लेकर भारत सरकार और केन्द्रीय लोकसभा में राजस्थान की सरकार और विधान सभा में तथा राष्ट्र संघ में चर्चा चली। उसके विरोध में राजस्थान के एक उप-मन्त्री पत्र लिखें, उसे जनता में बटवाएं, 15 दिन तक प्रचार करता रहे पाकिस्तानी रेडियो। बाकी सब चीजों को हम बर्दाश्त कर सकते हैं। अनाज की मंहगाई बर्दाश्त कर सकते हैं, विरोधी दल की हुकूमत नहीं बनी, कुछ को ठग लिया, डाका डाल दिया, यह बर्दाश्त कर सकते हैं। अन्न की कमी है, भूख से तड़प कर मर जावें, यह बर्दाश्त कर सकते हैं, पर उसको हम बर्दाश्त करने को कतई तैयार नहीं कि हिन्दुस्तान की इज्जत दुश्मन के हाथों लुटाने की चेष्टा करें उस व्यक्ति को राजस्थान के मन्त्रि मण्डल में उप-मन्त्री बनाया जावे।

मैं सदन में अधिक कुछ नहीं कहना चाहता और इसलिये नहीं कहना चाहता, भाषण में दे सकता हूं, कह सकता हूं पर इसलिये नहीं देना चाहता और कुछ कहना चाहता कि अगर यह लेटर जो उन्होंने लिखा है वह लेटर मैं यहां सदन की मेज पर रख दूं और पब्लिश कर दूं तो मुझे भय है पाकिस्तान इस लेटर का उपयोग करेगा। मुझे इस बात का भय है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हिन्दुस्तान की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचेगा। इसलिये अध्यक्ष महोदय, मैं इस विषय पर ज्यादा नहीं कह कर यह लेटर असल रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत करता हूं और इस निवेदन के साथ प्रस्तुत करता हूं कि इसे पढ़ने के बाद आप अगर आवश्यक समझें तो सदन की मेज पर रखें, आवश्यक समझें तो पब्लिश कराएं, न समझें तो मुझे देने की आवश्य

Page No. 36

(श्री भैरोंसिंह)

कता नहीं। आप अपने ही पास इसे सुरक्षित रखें और इस इन्तजाम के साथ रखें कि पत्र किसी के हाथ में न चला जावे।

हम आपस में कई मामलों पर लड़ सकते हैं। पर देश की सुरक्षा के सम्बन्ध में इस तरह की कोई हरकत बर्दाश्त नहीं की जा सकती। और इसी के लिये ऐसा डोकूमेन्ट मैं नहीं रखना चाहता जिसका उपयोग दुश्मन कर सके। मैं तो केवल इस मुखाड़िया मन्त्रि मण्डल से एक बात पूछना चाहता हूँ कि 22 तारीख को लिखा गया यह लेटर सही है या गलत। अगर इसके कण्टेन्ट्स सही हैं तो मैं पूछना चाहूँगा कि आपने एक्शन क्या लिया, और गलत है तो इसका इनाम यह दिया कि इनको उप-मन्त्री बनाया? झूठी रिपोर्ट करने के बाद, झूठी शिकायत करने के बाद, हिन्दुस्तान की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने के बाद आप तार की एवज में यह इनाम देना चाहते हैं तो मैं कहना चाहूँगा कि राजस्थान का मंत्रि मण्डल कुछ भी सोचता हो एक बात सही है कि राजस्थान के मुख्य मन्त्री झुक सकते हैं पर आपका यह झुकने का, घुटने टेकने का सवाल तो मामूली है, छोटा मोटा है। कोई भी आपको झुका सकता है पर ये देशद्रोही हरकतें बर्दाश्त नहीं की जा सकतीं। इसलिये मैं अपने हाथों से ही अध्यक्ष महोदय यह पत्र आपकी सेवा में प्रस्तुत करना चाहूँगा।

(पत्र प्रस्तुत किया)

अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही मैं निवेदन करना चाहूँगा कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में सूअरशाला, कुकुटशाला की गिनती है, अंडों का उत्पादन कितना हुआ, इसके आंकड़े हैं, लूप कितने लगे, इसकी गिनती है। यह गिनती जरूर कर ली, पर राज्यपाल महोदय भूल गये कि राजस्थान और पाकिस्तान के बीच 700 मील की लम्बी जो सीमा है, उसकी हालत क्या है? उस पर रहने वालों की हालत क्या है? कितनी सड़कें बनी हुई हैं, किस प्रकार की सड़कों का जाल बिछ रहा है? दुर्भाग्य की बात तो यह है कि पाकिस्तान के हवाई जहाज गडरा, बाकासर सड़कों के ऊपर घूमते हैं, वहां की सड़कों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। पर वहां किस तरह से क्या हो रहा है, यह हमें जानकारी देकर सरकार कान्फीडेन्स में लेना नहीं चाहती। बीकानेर के क्षेत्र में घुसे, एक आदमी मार गये। इस तरह सारी सीमा किस तरह से असुरक्षित है इसे सरकार देखना नहीं चाहती। यह सब कहकर मैं कोई पैनिक क्रिएट नहीं करना चाहता पर भारत सरकार ने भी इसे स्वीकार किया है कि किस तरह से उनकी, दुश्मन की गतिविधियां बढ़ रही हैं किस तरह से पाकिस्तान ने अपनी सरहद पर सेना को लगाया है। पाकिस्तानी सेनाओं की गतिविधियां बढ़ रही हैं। मैं माननीय मुख्य मन्त्रीजी को कहना चाहूंगा कि जिन व्यक्तियों ने उस संघर्ष के समय पर सेना के मुकाबले में पाकिस्तानी मुजाहिदों को साथ लेकर अपनी अराष्ट्रीयता का परिचय दिया था वे ही एक एक दो दो करके हिन्दुस्तान में फिर से आ रहे हैं। आसपास के गांवों में आ आकर फिर से जम गये हैं। वे ही लोग फिर से उनका पक्ष लेने की कोशिश कर रहे हैं। आज उन लोगों को जालौर का सर्टिफिकेट दिलाया जाता है, गुजरात का सर्टिफिकेट दिलाकर राजस्थान के बोर्डर पर उनको लाना चाहते हैं, ला रहे हैं और यह क्रम चल रहा है। इस प्रकार की अराष्ट्रीय कार्य-

(श्री भैरोंसिंह)
वाहियों को और उनमें भाग लेने वालों को आपको कतई बर्दाश्त नहीं करना चाहिये। राजस्थान के हित में और देश के हित में उनको बर्दाश्त नहीं करना चाहिये।

आप सीमा पर जाइये, यह सब अपनी आंखों देखिये। पी. डब्लू. डी. मिनिस्टर को मैं धन्यवाद दूंगा कि ठेकेदारों को लाखों करोड़ों रुपया उन्होंने एडवांस में बंटवा दिया। जिले जिले में शराब खाने खोल दिये। माथुर साहब को धन्यवाद दूंगा कि सड़कों के ठेकेदारों की मोटरें, पी. डब्लू. डी. की मोटरें और जीपें गांव गांव में इलेक्शन के लिये घुमा दीं। कोई ठेकेदार ऐसा नहीं था जिसने अपनी मोटरें और जीपें इलेक्शन के लिये कांग्रेस को न दी हों। सबसे ज्यादा शर्म की बात तो यह है नेशनल सिक्योरिटी पोइन्ट आफ व्यू से भी कि बोर्डर रोड बनाने वाले ठेकेदारों से जीपें ली। और जीपें लेने में सामान्य शिष्टाचार को भी खत्म करके पेमेन्ट उनको एडवान्स दिलवाया। और कहीं जगह एडवान्स नहीं दिया, पर यहां तो दिया।

अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि यह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के मसलों में हमें थोड़ी सावधानी बरतनी पड़ेगी, हमें सही चीजें करनी पड़ेंगी, अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को भूलना पड़ेगा। राजस्थान का और देश का हित किसमें है इसको सामने रखकर सीमा की सुरक्षा की व्यवस्था करनी पड़ेगी।

इसके अतिरिक्त मैं निवेदन करना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय कुछ मामले और। तो मैं निवेदन करना चाहूंगा कि ये मन्त्री लोग डरते कैसे हैं? कोई कहता है डरते नहीं हैं। मैं कहता हूं ये बहुत ज्यादा डरते हैं। इनको राष्ट्रपति का शासन आता नजर आया तो पहले तो विचार कर रहे थे कि 88 हैं, चार पांच और तोड़ लेंगे तो राज्य हमारे हाथ में आ जावेगा। पर राष्ट्रपति का शासन हुआ 13 तारीख को और मन्त्रीजी ने देखा तो वहां से गये सेक्रेटेरियट में और फाइलें अपने पास पड़ी थीं तो उसके ऊपर कब्जा किया। हुक्म बदलने लगे। सोचा हुक्म बदलो ये, नहीं तो मारे जायेंगे। एक बदला हुआ इस तरह का हुक्म मेरे पास आया। यह हुक्म है 10 मार्च का। 10 मार्च को बैक डेट में किया हुआ है। अगर आप उसे देखेंगे तो अपने आप ही पता लग जावेगा कि यह बैक डेट में बीच में घुसेड़ा है जरूरत पड़ेगी तो मैं उसको डिटेल बताऊंगा।

एक ठेकेदार हैं गोरधनदास मुखी। सब जानते हैं उनको। उदयपुर में तीन चार ही आदमी मशहूर हैं। इनमें एक है सुखाड़िया जी खुद, एक है गोरधनदास मुखी, तीसरे हैं पानरवा वाले गुलाम अब्बास और चौथे हैं हेमनदास सिंधी। एक राजनैतिक मामलों में मशहूर है। एक ठेके के मामले में, एक जंगल के ठेकों में इस तरह से सब अलग अलग अपने अपने क्षेत्रों में मशहूर ये चार व्यक्ति हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल: और इन सब का ताऊ दीनानाथ?

श्री भैरोंसिंह: यह श्री गोरधनदास जी मुखी भी मशहूर हैं। इनको बांध का ठेका दिया गया। उसमें एग्रीमेंट में कोट कटिंग का एग्रीमेंट था और उसमें 190 रुपये की बात लिखी है। वैसे शिड्यूल रेट 200 रु० की है। लेकिन चूंकि चुनावों में खर्चा करना था तो चुनावों का खर्चा कैसे निकाला जाये

(श्री भैरोंसिंह)
उसमें 400 रुपये की रेट निकाल कर उसको ठेका दे दिया गया। 190 की एग्रीमेंट थी और 200 रुपये की बेसिक शिड्यूल रेट थी। इन दोनों को ताक में रखकर 400 रुपये कर दिये और 20 हजार का पेमेन्ट कर दिया। जिस समय कार्य हुआ उस समय सीमेन्ट पर कन्ट्रोल था और बाद में कन्ट्रोल हट गया तो उसने बताया कि उसे इसके कारण 20 हजार रुपये का ज्यादा खर्चा करना पड़ा तो 20 हजार रुपये उसको इस बात के दिये गये। जिस समय कान्ट्रेक्ट हुआ था उस समय लेबर के ऊपर मिनिमम वेजेज लागू नहीं थे और उसके बाद में अब मिनिमम वेजेज लागू हो गयी तो उसने कहा कि इसकी वजह से उसका 7½ लाख रुपये का खर्चा हो गया और माननीय अध्यक्ष महोदय, उसको इस 7½ लाख रुपये की भी क्षति की पूर्ति हो जाती यदि थोड़े दिन यह राष्ट्रपति शासन और लागू नहीं होता तो और यह 7½ लाख रुपये भी बट्टे खाते जाते। लेकिन इसकी फाइल मांगी गयी और 10 मार्च को आर्डर्स कर दिये कि पेमेन्ट नहीं किया जाये। अब इसके लिए सुखाड़िया साहब जानते होंगे कि कौन सा बांध था?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : कौन सा बांध था?

श्री भैरोंसिंह : ओरिया का बांध चित्तौड़गढ़ वाला।

अब अध्यक्ष महोदय, इतना ही नहीं श्री हीरालाल जी देवपुरा कुम्भलगढ से आने वाले माननीय सदस्य भाषण दे रहे थे वह कह रहे थे कि तालाबों पर जागीरदारों का कब्जा नहीं हो। मैं आपको बताना चाहता हूं कि क्या उन तालाबों पर कब्जा नहीं हो जिनसे गरीबों की खेती होती है। जब वह अपना भाषण दे रहे थे तो मैं उसी समय बोलना चाहता था लेकिन प्रेरणा मिली मुझे और मैंने सोचा कि मैं अपने भाषण के दौरान ही उनको बातों का जवाब दूंगा। उनको शायद पता नहीं है, वह लड्डा साहब से मिले नहीं हैं। जिन तालाबों के ऊपर जनता का कब्जा बताते हैं और आज तक सरकार जनता का कब्जा बताती थी इन चुनावों में सरकार द्वारा बड़ी तादाद में तालाब खरीदे गये और उनकी खरीद के पत्र आप देख लें। किसी को 50 हजार और किसी को 60 हजार दिये। वोट दो और तालाब के पैसे लो। तालाब कोई सिद्धांत की चीज नहीं है। अब तालाब खरीदने के लिए हुकम निकले। एक्वीजीशन नहीं हुए हैं, पर वोट लेने थे इसलिए जिस तालाब को 50 हजार में खरीदना होगा उसको 50 हजार में खरीद लिया, 37 हजार में खरीदना होगा तो 37 हजार में ही खरीदा गया। हमारे पूनमचन्दजी विश्नोई को पता होगा कि जोधपुर में फिजिकल ट्रेनिंग के लिए मकान खरीदना था उसमें रकम बाकायदा लिखी हुई थी लेकिन इनकी खरीद के लिए कोई रकम लिखी हुई नहीं थी। यह 50 हजार में ही खरीदा जाये इसका कान्ट्रेक्ट देखा जाये तो देख लें, मैं सदन में रखने को तैयार हूं।

इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, एक अजीब सी बात सामने आई और वह अजीब सी बात यह है कि हमारे सुखाड़ियाजी और दामोदरजी दोनों के भाषण पानरवा के संबंध में हुए और जागीर रिजम्पशन के संबंध में भाषण हुए उस समय दोनों कहते थे कि जागीर रिजम्पशन एक्ट की धारा 22 (सी) या (ए) के अनुसार I am not definite

Page No. 39

(श्री भैरोंसिंह)

इसके अनुसार जागीर का पुनर्ग्रहण हो गया तो लायेबिलिटी और इनकम्बरेन्स होंगी और जागीरदार ने जागीर रिजम्पशन के पहले जागीर पुनर्ग्रहण को डिफीट करने की वजह से कोई कान्ट्रेक्ट किया है तो उसको वेलिड नहीं माना जायेगा। इसके बहुत हजारों मामले खारिज हुए। मैंने इसके लिए दामोदर जी को रिप्रेजेन्टेशन किया, राजपूत महा सभा ने रिप्रेजेन्टेशन किया, क्षेत्रीय महासभा ने रिप्रेजेन्टेशन किया कि जिन्होंने रेगुलर प्रोसेस में कान्ट्रेक्ट दिया है उसको रिकोगनीशन मिलना चाहिए लेकिन उस समय तो राजस्थान की सरकार के ऊपर जागीरदारों का भूत सा सवार था और यह जागीरदार सरकार को भूत दिखते थे और यही कांग्रेस सरकार बेगूं राव साहब को बेगूं में घुसने देने को पसन्द नहीं करती थी आज अपने घर में बेगूं बनाये हुए है। लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि चुनावों के तुरन्त पहले यह जंगलात, यह सारे जंगलात जिसमें 12 की लिस्ट मेरे पास है जिनके जागीर रिजम्पशन के पहले कान्ट्रेक्ट हुए और सारे फर्जी डाकुमेंट तैयार किये गये और उसके बाद में ठेकेदार कोशिश करते रहे कि हमें कान्ट्रेक्ट्स मिलने चाहिए, कान्ट्रेक्ट नहीं मिला। यह लोग पिछले 12 सालों से कोशिश करते रहे लेकिन कान्ट्रेक्ट नहीं मिला परन्तु अब की बार चुनावों के लिए पैसा चाहिए था और कान्ट्रेक्टर्स का सपोर्ट लेना था; सारे फोरेस्ट डिपार्टमेंट की फाइल को निकाला और तय कर लिया कि इन लोगों को सब को फोरेस्ट दे दिये जायें और इसके लिए एडवोकेट जनरल से राय ली गयी। एडवोकेट जनरल राय देता है वह मैं सदन में पढ़कर सुनाता हूं:—

"The validity of the Act had been challenged by the jagirdars before the High Court of Rajasthan as well as the Supreme Court. All points arising in respect of this Act had been vigourously canvassed therein. It is now well settled that this is a constitutionally valid piece of legislation. In view of these pronouncements it cannot be said that any of the rights of the third parties have been trampled upon by the Act. In my opinion the argument relating to omission of section 24 and about compensation has no force.

I have dealt with every aspect of the matter as best as I could. In the end I should caution the Government that if the plea advanced by the forest contractors is accepted, it will raise innumerable complications. The process of acquisition of jagirs started in 1953-54 and has been completed long back. The forests in the resumed jagir lands cannot now be handed back to the contractors as in this long period the entire face of these forests must have become completely changed. If, however, the contractors had any good case in law, they would have certainly knocked the doors of the law courts and would have obtained any remedy. There may be several hundreds of such contractors and it cannot be assumed that none of them could have gone to the court for adjudication of his rights. Even if they think so that their claim is justified, they have the liberty of obtaining any relief from the court but in my opinion the Government should not re-open this matter."

राजस्थान की सरकार ने इन जंगलात के मामले खोले....

श्री नारायणसिंह मसूदा (वन मंत्री) : मैं इस संबंध में निवेदन करूं कि यह कान्ट्रेक्ट्स अभी तक नहीं दिए गए हैं। यह

(श्री नारायण सिंह मसूदा)
एडवोकेट जनरल की राय और दूसरी राय है उसको भी एग्जामिन की जा रही है। फाइनेन्शियल प्रास्पेक्ट्स क्या होंगे उसको भी एग्जामिन किया जा रहा है और अभी तक इस बारे में निर्णय नहीं लिया गया है।

श्री भैरोंसिंह : मैं यही तो कह रहा हूं। आप सुन लीजिए। अगर आप सुन लेंगे तो बाद में आपको कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी आप इन कान्ट्रेक्टर्स को देख लीजिए इन्होंने सेक्रेटेरियट के सामने रोज जाजम बिछाना शुरु कर दिया। मैंने उनमें से किसी एक को पूछा कि यहां कैसे घूम रहे हो तो उसने कहा कि फॉरेस्ट के कान्ट्रेक्ट्स मिलने वाले हैं। मैंने पूछा कौन से तो उसने कहा कि 52 में हुए थे, 53 में हुए थे उनके लिए। उसने बताया कि हमने लॉ डिपार्टमेन्ट से तो लिखवा लिया है। हमने पूछा कि भई लॉ डिपार्टमेन्ट ने कैसे लिख दिया तो उन्होंने कहा कि हमने एक आदमी को पटा लिया है, लेकिन एडवोकेट जनरल ने सारी गड़बड़ कर दी। उन्होंने कहा कि हम फिर कोशिश कर रहे हैं। लेकिन इसी बीच में एक गुमनाम लेटर गवर्नर के पास पहुंच गया और उस गुमनाम लेटर ने सारा बंटाधार कर दिया। तो फाइल्स पर आर्डर्स हुए हुआये हैं। मसूदा राव साहब से निवेदन करना चाहूंगा कि जरा होशियारी से वह फाइलों को देखें तो उन्हें पता लगेगा कि फाइल का डिस्पोजल हो गया था, उस पर आर्डर्स हो गए थे और उसके बाद में रोका गया है और आप कहते हैं कि कान्ट्रेक्ट्स नहीं दिये गये और मैं कहता हूं कि उसके आधार पर काम शुरू हो गया। आपको जानकारी करनी है तो लिस्ट मेरे पास है। जिस फारेस्ट की फाइल के बारे में आप कहेंगे मैं उसका नम्बर और तारीख बता दूंगा। आप उनको मुझे बता दें मैं आपकी मदद करूंगा। मैं जिस फारेस्ट का जिक्र कर रहा हूं वह और है . . .

(1 म. प.)

श्री नारायणसिंह मसूदा : जहां तक मेरी जानकारी है इन केसेज को री-ओपन जरूर किया गया था लेकिन केवल एक को छोड़ कर उन पर एक्शन नहीं लिया गया है और अभी तक भी उसी प्रकार से पेंडिंग हैं। आपने जानकारी दी है उसके लिए मैं आभारी हूं और पूर्णतया सतर्क रहूंगा और भली प्रकार से कदम उठाया जायेगा।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य दसेक मिनिट में समाप्त कर दें।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, इस चुनाव में कई चीजें हुई हैं। सरकारी मशीनरी का खुलकर दुरुपयोग किया गया है। उदयपुर के समाचार-पत्रों में मैंने पढ़ा कि उदयपुर में जिस समय वोट पड़े, सबसे पहले उदयपुर महारावल वोट देने के लिए गए। (श्री सुखाड़ियाजी की ओर मुखापेक्ष) आप गये होंगे पहले।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मेरा वोट ही नहीं था। पहला वोट भी उनका नहीं था।

श्री भैरोंसिंह : अखबारों ने गलत लिखा होगा।

एक माननीय सदस्य : आपका वोट नहीं था तो चुनाव कैसे लड़ा।

श्री भैरोंसिंह : मैं इस परपज से नहीं कहता कि वे पहले गये या पीछे। मैं इस

(श्री भैरोंसिंह)

मामले को लेकर नहीं कहता। (विराम) अच्छा अब इस मामले को ही नहीं कहता।

अध्यक्ष महोदय, वह वोट देने के लिये गए। अब वोट देने का इन्फ्लुयेन्स तो उदयपुर महाराणा का पड़ना स्वाभाविक ही था और पड़ना ही चाहिए सुखाड़ियाजी जीते, दो तीन हजार वोटों से जीते। राजस्थान के मुख्य मंत्री, उदयपुर के रहने वाले और एक ही सीट पर लगातार चार बार इस सीट से····

श्री बृजसुन्दर शर्मा : आप तो हार ही रहे थे।

श्री भैरोंसिंह : बृजसुन्दरजी, आप भी हारे हुए बाहर बैठे रहे हो कितने ही दिनों तक कैंटिन में। हार जीत का किसी का ठेका नहीं है।

श्री अध्यक्ष : दो घण्टे आपकी पार्टी के हैं और एक घण्टा पन्द्रह मिनिट आप ले चुके हैं।

विपक्ष के कई माननीय सदस्य : हम अपना भी सारा समय देते हैं।

श्री ललितसिंह (बड़ी सादड़ी) : इनको तो इतना समय हो गया।

श्री भैरोंसिंह मुझे इस बात की खुशी है कि यह ऐतराज ललितसिंहजी ने किया है।

एक माननीय सदस्य : उन्होंने तो इतिहास का जिक्र किया है, इतिहास बदल रहा है।

श्री भैरोंसिंह : मुझे खुशी है कि जो काम पहले जयपुर वाले करते थे वही काम अब उदयपुर वाले कर रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : शुरू रखिए।

श्री ललितसिंह : समय-समय का फेर है।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : इन्होंने तो कहा कि समझ का फेर है।

श्री भैरोंसिंह : मैं अब इस बारे में ज्यादा नहीं कह कर पेंशनर्स के बारे में मैं लिख कर तो बहुत कुछ लाया था लेकिन उदाहरण के रूप में एक ही मामला यहां रखना चाहूंगा। एक पटवारी को 14 वर्षों से पेंशन नहीं मिली है जब कि उसे 14 वर्ष हो गए हैं रिटायर हुए, उसको आज तक पेंशन नहीं मिली है। यह पटवारी की दरख्वास्त माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी मार्फत माननीय मुख्य मंत्री जी की सेवा में प्रस्तुत करता हूं। वह गरीब रोज इधर-उधर मारा-मारा फिरता है लेकिन उसको किसी भी प्रकार की पेंशन नहीं मिल पाई है।

इसी प्रकार एक और मामले में मैं पूछना चाहूंगा माननीय मुख्य मंत्री जी से··

श्री अध्यक्ष : This is an individual case and should not be placed on the floor of the House.

श्री भैरोंसिंह : मैं आपकी मार्फत मुख्य मंत्रीजी को प्रेषित कर रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : मैं चाहता हूं कि इस प्रकार से इण्डीविजुअल केसेज को यहां पर नहीं लिया जाय।

श्री भैरोंसिंह : मैं इसीलिए आपके मार्फत दे रहा हुं। मैं सीधे भी दे सकता था लेकिन जो इस प्रकार का मामला है उसको मैं आपके मार्फत देना चाहता हूं....

Page No. 42

श्री अध्यक्ष : मैं नहीं चाहता कि इस प्रकार से इण्डीविजुअल मामलों के अन्दर इस फ्लोर को काम में लिया जाय। मैं अभी तो ले लेता हूँ लेकिन अपनी व्यवस्था को कायम रखता हूं कि इण्डिविजुअल मामलों को इस प्रकार यहां न रखा जाय।

श्री भैरोंसिंह : मैं अर्ज कर दूं कि मैंने इस पटवारी की शक्ल नहीं देखी है। इस पटवारी को मैं जानता भी नहीं हूं लेकिन इस पटवारी का पत्र मेरे पास आया और उसको पढ़ने के बाद मुझे लगा कि इस व्यक्ति के साथ ज्यादती हो रही है। इस व्यक्ति को इतने सालों में भी पेंशन नहीं मिली है और इसी लिए मैं इस लेटर को मुख्य मंत्रीजी को दे रहा हूं। मैं इसको वाला-बाला भी दे सकता था। लेकिन जहां इस प्रकार के जुल्म हों तो उन इण्डिविजुअल केसेज की पैरवी करने में भी मुझे संकोच नहीं है।

अब इसी तरह का एक मामला और है जिसके बारे में मैं पूछना चाहूंगा, अध्यक्ष महोदय, इसके बाद में यह मामला खत्म कर दूंगा। एक लेटर की कापी मेरे पास है, उसमें लिखा है :

"It is hereby requested that the State Government does not want to enquire against Shri R. K. Dhawan, Chief Accounts Officer, and requests you to send all the documents in connection with this enquiry.

B. Mehta,
Chief Secretary to the Government."

मैं मुख्य मंत्रीजी से पूछना चाहूंगा कि यह कौन सा केस है, क्यों इसको विड्रा किया

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं एकदम से तो नहीं कह सकता, 9 तारीख को जब बोलूंगा तब जानकारी करके कहूंगा।

श्री अध्यक्ष : चाहिए तो यह था कि माननीय सदस्य इसका नोटिस दे देते। इस प्रश्न का प्रीवियस नोटिस दे देते तो क्लेरिफिकेशन हो जाता।

श्री भैरोंसिंह : मैं यह नहीं कहता कि मुख्य मंत्रीजी अभी ही जवाब दें। धीरे-धीरे वे जवाब दें। इस बात की जानकारी लेने के लिए ही यह सारा प्रश्न मैंने आपके सामने रखा है।

अध्यक्ष महोदय, अन्त में मैं यह निवेदन करता हूं कि आज राजस्थान किस प्रकार के हालातों से गुजर रहा है। (× × × × × × × × × × × × × × × × × × × ×) विरोधी दल की तरफ से जब 109 की लिस्ट दी गई तो लोग यह समझते थे कि 109 आदमियों की लिस्ट चली गई है और कांग्रेस के लोग भी यह समझ कर कि 109 की लिस्ट चली गई तो सबकी हालत खराब हो गई।·······

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : हमने तो कभी भी नहीं माना था।

श्री भैरोंसिंह : अब वह हालत खराब कैसे थी। शायद यह समझ कर चलते थे कि कहीं एक दो गड़बड़ न कर जायें। ××× × × × ×

श्री विशम्भरनाथ जोशी : Point of order, Sir, this is an aspersion on

××××अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाले गये।

(श्री बिशम्बरनाथ जोशी)
the Head of State. It should be expunged from the record.

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं माननीय सदस्यों की जानकारी के लिए निवेदन कर दूं कि राज्यपाल महोदय की तरफ से हमारे पास कोई प्रिवियस लिस्ट नहीं भेजी गई । बल्कि कई नामों के बारे में जब वे वहां जाकर लौटे तब हमको मालूम हुआ, या उनके एड्रेस पूछते हुए उनके ए. डी. सी. घूमते थे तो उनके नामों के बारे में पता लगा । वरना इसके अलावा कोई भी पहले से जानकारी नहीं थी यह मैं निश्चय पूर्वक निवेदन करना चाहता हूं ।

श्री भैरोंसिंह : मैं निश्चयपूर्वक कहना चाहता हूं कि इस सारी प्रक्रिया को मैंने अपनी आंखों से देखा है । मैं स्वयं राजभवन के सामने जाकर खड़ा रहा और वहां से जब राज्यपाल के ए. डी. सी. मोटर के पीछे बैठ कर और चपरासी को आगे बैठा कर गवर्नर के ड्राईवर से गाड़ी चलवा कर जब क्षीरसागर होटल तक गये तो मैंने उस गाड़ी को परश्यू किया । मैं भी क्षीरसागर होटल पर पहुंचा और उसी समय वहां पर सो पचास आदमी और भी इकट्ठे हो गए थे । जिस समय गाड़ी वहां पर पहुंची, शायद नाथूलालजी ही उनका नाम है, उनको लेकर गाड़ी फौरन रवाना हो गई । होटल के बाहर गाड़ी पहुंची और उसका फाटक खुला, फाटक खुलते ही उसमें नाथूलालजी बैठे और गाड़ी रवाना हो गई । एक मिनट भी गाड़ी वहां नहीं रोकी गई । फाटक खुला और बन्द हो गया, नाथूलाल जी उसमें बैठे और गाड़ी रवाना हो गई, तो यह नाटक कैसे हो गया । कैसे पहले से ही नाथूलालजी को मालूम हो गया····

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैंने निवेदन किया कि एड्रेसेज के लिए उन्होंने कई 2 जगह फोन किए, चार चार, पांच पांच जगह फोन किए कि फलां एम. एल. ए. कहां पर है तो उस रूप से जानकारी भले ही मिली हो लेकिन पहले से ही कोई लिस्ट दे दी गई हो, इस प्रकार की बात बिल्कुल गलत है ।

श्री भैरोंसिंह : अब इसके बाद मैंने सोचा कि यह कोई को-इंसीडेंस हो गया होगा ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : बल्कि मैंने तो यहां तक सुना था, मैं नहीं कह सकता कि इसमें कहां तक सच्चाई है, लेकिन मुझे जानकारी मिली थी कि डूंगरपुर महारावल साहब से, खास तौर से पिछले आठ नामों की लिस्ट में दिए गए नामों के एड्रेसेज के बारे में पूछा गया तो उन्होंने स्वयं ने यह कहा बताया कि उनके एड्रेसेज की जानकारी मुझे नहीं है ।

श्री भैरोंसिंह : यह हो सकता है कि जिन लोगों के नाम दोनों की लिस्ट में हों, उनके एड्रेसेज आपसे पूछे हों । और जब पता पूछा तो पता लग गया कि इनका नाम दोनों की लिस्ट में है, तो मैंने जो बात कही वह सही हो गई ।

(समय–समाप्ति-सूचक घण्टी)

इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि यहां प्रश्न यह पैदा होता है कि× × × × × ×

×××अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाले गये ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर आर्डर। माननीय सदस्य ने हेड आफ स्टेट के लिए जो कुछ कहा है उसको मैं उन पर आक्षेप मानता हूं और इसलिए मैं उस वर्णन को इससे एक्सपन्ज करता हूं।

श्री भैरोंसिंह : मैं एक बात क्लेरीफाई कराना चाहता हूं। ×××× ×××

श्री अध्यक्ष : मैं इन शब्दों को भी एक्सपंज करता हूं।

श्री भैरोंसिंह : आप कुछ भी एक्सपञ्ज करिए।

श्री अध्यक्ष : मैं आपसे उम्मीद करता हूं कि गवर्नर महोदय के सम्बन्ध में इस सदन की यह व्यवस्था रही है और कांस्टीट्यूशन की भी यह व्यवस्था है, आप कृपा करके गवर्नर के प्रश्न पर ऐसे शब्द न कहें जो आक्षेप समझे जाते हों। मैं आपसे विनम्र निवेदन करता हूं।

श्री भैरोंसिंह (जारी) : मैं निवेदन करना चाहता हूं कि गवर्नर का केवल एक काम है हाउस को एड्रेस करना। गवर्नर के एड्रेस के ऊपर आलोचना हुई है। गवर्नर का जो कर्तव्य है उस सम्बन्ध में आलोचना नहीं करेंगे तो 25 लाख रुपया 5 वर्ष में फालतू खर्च करने वाले हैं। सरदार हुकुमसिंहजी की आलोचना करते हैं तो आप निश्चित रूप से टोकिये।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आपने यह व्यवस्था दी है कि गवर्नर के सम्बन्ध में कोई क्रिटिसिज्म नहीं हो सकता है तो आप को शायद मालूम होगा कि सम्पूर्णानन्दजी के बारे में शराब का मामला कि वहां की शराब बेची गई यहां सदन में उठाया गया तो वह एक्सपन्ज नहीं किया गया। उनके प्राइवेट सेक्रेटरी का मामला हमने उठाया तो कभी एक्सपन्ज नहीं किया गया। सम्पूर्णानन्दजी का मामला उठाया गया तो एक्सपन्ज नहीं किया गया।

श्री अध्यक्ष : उसका सम्बन्ध उनके सेक्रेटरी के व्यक्तिगत जीवन से था।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : व्यक्तिगत जीवन से नहीं वह गवर्नर के प्राइवेट सेक्रेटरी की हैसियत से था।

श्री अध्यक्ष : जहां तक राज्यपाल महोदय का सम्बन्ध है उसमें उनकी प्रतिष्ठा का सम्बन्ध है।

(कई माननीय सदस्यों के एक साथ बोलने के कारण अश्रव्य)

आर्डर ! आर्डर, प्लीज !!

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : वहां के गलीचे बेचने का सवाल इस सदन में आया है···

श्री अध्यक्ष : यह व्यवस्था यहां नहीं आने दूंगा।

श्री भैरोंसिंह : मैं इतना निवेदन कर दूं कि मैं हुकुमसिंहजी का नाम लेकर कोई क्रिटिसिज्म नहीं कर रहा हूं। जिस प्रकार से उन्होंने सरकार बनाने के लिए लोबर्स को निवेदन किया उस एक्शन को आलोचना करने का हमारा अधिकार है। उसकी चर्चा करने का अधिकार है। आप यदि अपने अधिकार को केवल इसी बात को लेकर संतोष

×××अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार निकाले गये।

(श्री भैरोंसिंह)

करना चाहें तो आपके सदन की प्रोसीडिंग है उसमें नहीं लिखा जाने देंगे तो प्रोसीडिंग आपके हाथ में है उसमें नहीं लिखा जायगा, लेकिन जन-मानस के इस भ्रम को दूर नहीं किया जा सकता है कि जिस प्रकार से गवर्नमेंट फार्म करने के लिए लिस्ट को एक्सपोज करके कांग्रेस को इनवाइट किया है....

श्री अध्यक्ष : I will not permit this point.

श्री भैरोंसिंह : आप एक्सपन्ज कर दीजिये। कल आप एक्सपन्ज मुझे ही करेंगे हाउस के बाहर जो कि वोट लेकर जनता के प्रतिनिधि के नाते...

श्री गिरधारीलाल व्यास : इस तरह करेंगे तो करना पड़ेगा।

श्री भैरोंसिंह : ...ता कर दें। मैं दुबारा रिपीट करना चाहता हूं कि गवर्नर महोदय ने जो एक डिसेन्सी डेमोक्रेसी में कन्टेन्ड हैं उस डिसेन्सी पर आघात करके विरोधी दल के नेता को जो विश्वास दिलाया था कि लिस्ट के अन्दर जो कॉमन नाम होंगे उन नामों को डिस्क्लोज नहीं किया जायगा। उनको खोला गया और उनसे पूछा गया। उस वक्त दूसरे कई व्यक्ति थे। रामगोपाल, जो सुखाड़ियाजी के पी. ए. हैं को बुलाया गया और दूसरे अधिकारियों को बुलाया गया..

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : यह बिल्कुल गलत है। मेरा पी० ए० कहीं नहीं बुलाया गया।

श्री भैरोंसिंह : सब वहां थे और उनकी मौजूदगी में उन लोगों से पूछा गया कि किस के पक्ष में रहना चाहते हो..

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : रामगोपाल उस समय मेरा पी० ए० नहीं था बल्कि उस समय वह एडवाइजर का पी० ए० था।

श्री भैरोंसिंह : जिस समय वह था तो लक्ष्मण को तोड़ने के लिए झालावाड़ गया..

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : लेटर लिखा है या नहीं मैं हाउस में पेश करूंगा...

(सदन में अत्यधिक शोर के कारण अश्रव्य)

श्री गिरधारीलाल व्यास : गलत है।

श्री भैरोंसिंह : इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि व्यक्तिगत रूप से किसी की आलोचना नहीं हो रही है प्रश्न एक सिद्धान्त का है। एक विश्वास जो हमें दिया गया था उस विश्वास पर राज्यपाल महोदय ने अमल नहीं किया और उसका दुरुपयोग करके कांग्रेस की हुकूमत बनाई, लेकिन इस हुकूमत के नाम पर मैं राजस्थान की जनता को विश्वास दिलाना चाहता हूं और खास तौर से उन क्षेत्रों की जनता को जिन्होंने विरोधी दल के नाम पर विधायकों को जिता कर राजस्थान से भेजा है और जो उनके साथ विश्वासघात करके कांग्रेस की बेंचों पर बैठ गये तो इस जनता को मैं आश्वस्त कराना चाहता हूं कि वे लोग व्यक्ति के रूप में गये हैं। उन्होंने विरोधी दलों के नाम पर वोट दिये हैं वे चिन्ता न करें। सुखाड़िया जी की हिम्मत नहीं कि वे उनका राजनैतिक शोषण कर सकते हैं। उनको बताना चाहता हूं कि हम उनके लिए संघर्ष करेंगे, उनकी सुरक्षा करेंगे। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि राजस्थान की जनता को

(श्री भैरोंसिंह)

XXX इस हत्या के कारण हम परास्त हुए हैं और हम इसका मुकाबला करेंगे।

श्री बिश्वम्बरनाथ जोशी : On point of Order Sir.

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर !!

श्री विश्वम्बरनाथ जोशी : point of Order, Sir.

एक माननीय सदस्य (कांग्रेस) : किस के खिलाफ ?

श्री भैरोंसिंह : नाम लिया है उसके खिलाफ।

श्री महेन्द्रसिंह : आपको लगती है क्या ?

श्री भैरोंसिंह : मैं कहना चाहता हूं कि इन सब ने मिलकर संविधान के प्रति षड़यन्त्र करके, लोकतन्त्र के प्रति षड़यन्त्र करके कांग्रेसी राज्य को बनाये रखा है। दुनियां भर की अनियमितताएं करके राजस्थान के विरोधी दल के विधायकों को तोड़ा है तो जिस जनता ने विरोधी दल के नाते उन विधायकों में विश्वास व्यक्त किया है उस विश्वास को दृढ़तापूर्वक अपने हाथ में रखकर कांग्रेस की इस चुनौती को स्वीकार करते हैं और अब नहीं तो जिस समय मौका आयेगा जनता के 16 सूत्री कार्यक्रम को लेकर कांग्रेस को मैदान में परास्त करेंगे।

श्री गंगाराम चौधरी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने मेरे ऊपर व्यक्तिगत आरोप लगाये हैं मैं उनकी सफाई पेश करना चाहता हूं। उन्होंने एक बात यह कही कि मैंने नेता महोदय के विरुद्ध अविश्वास प्रकट करते हुए एक तार दिया था या इस प्रकार की धमकी दी थी और उसके आधार पर नेता महोदय ने मुझे उप मंत्री लेना स्वीकार किया है।

उन्होंने यह भी आरोप लगाया है जो कि बोर्डर के सम्बन्ध में हुई घटनाओं के सम्बन्ध में है इस सम्बन्ध में यह कहा कि पिछली इमर्जेन्सी के दौरान भारत की सेना और भारत की आर. ए. सी. ने जो भी अच्छा कार्य बताया है उसको मैंने सब को रद्द कर दिया और मुझ पर उन्होंने देशद्रोही होने का आरोप लगाया है······

श्री भैरोंसिंह : यह नहीं लगाया है।

श्री गंगाराम : और उन्होंने एक पत्र भी सदन के सामने मेज पर रखा।

एक माननीय सदस्य : सदन की मेज पर नहीं रखा।

श्री गंगाराम : माननीय अध्यक्ष, इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन यह है कि कांग्रेस दल के नेता महोदय के विरुद्ध कोई अविश्वास नहीं रहा और मैंने इस सम्बन्ध में इस प्रकार के विचार कभी प्रकट नहीं किये। मैंने अपनी तरफ से कुछ सुझाव अवश्य आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के नेताओं के समक्ष पेश किये थे, लेकिन जैसा माननीय सदस्य ने कहा है कि मैंने अपनी तरफ से अविश्वास प्रकट किया है····

श्री भैरोंसिंह : आप यह कह दें कि यह लेटर आपका लिखा हुआ है या नहीं ?

XXX अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाले गये

श्री गंगाराम : मैं तार के सम्बन्ध में कह रहा हूं।

श्री भैरोंसिंह : तार नहीं लेटर की बात कही जाय।

श्री विश्वम्बरनाथ जोशी : point of Order Sir

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर !!

श्री भैरोंसिंह : तार के लिए मैं कहूंगा कि तार आपने दिया है। उसकी अंग्रेजी कापी मेरे पास है।

श्री अध्यक्ष : शुरू रखिए।

श्री गंगाराम : उस आरोप के सम्बन्ध में मैंने निवेदन किया कि मैंने माननीय कांग्रेस दल के नेता के विरुद्ध किसी प्रकार का कोई अविश्वास या धमकी का काम नहीं किया था। कुछ सुझाव कांग्रेस कमेटी को दिये थे।

श्री भैरोंसिंह : क्या सुझाव यह था कि लीडर में परिवर्तन कर दिया जाय ?

श्री गंगाराम : नहीं ऐसा नहीं था।

श्री गंगाराम चौधरी : माननीय अध्यक्ष, एक और कोई लेटर उन्होंने प्रस्तुत किया है··

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आपने क्या सुझाव दिया था ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज !

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, एक माननीय सदस्य ने कोई तार दिया और उसका स्पष्टीकरण करने का आपने अवसर दिया है तो सदन के बाकी के सदस्य यह स्पष्टीकरण करना चाहते हैं कि क्या यह सही है कि उन्होंने नेता बदलने के सम्बन्ध में तार दिया था ?

श्री गंगाराम चौधरी : यह नहीं दिया।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्या दिया ?

श्री गिरधारीलाल व्यास : आपको क्या मतलब है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आपकी तरफ से कोई तार नहीं दिया गया यह मान कर चलें ?

श्री गिरधारीलाल व्यास : उससे आपको क्या मतलब है ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर प्लीज !!

श्री गंगाराम चौधरी : एक पत्र के सम्बन्ध में जयपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा है मेरा निवेदन उस सम्बन्ध में यह है कि मैंने कभी कोई ऐसा विचार उस पत्र में कभी प्रकट नहीं किया कि जिसके अन्तर्गत भारत की सेनाओं या भारत की फौजों····

श्री भैरोंसिंह : आप उस पत्र को देख लें और यह कह दें कि वह पत्र आपका है या नहीं ?

श्री अध्यक्ष : आपको अपना एक्सप्लेनेशन देने दीजिये।

श्री भैरोंसिंह : इस झगड़े में आप मत पड़िये। और मैं यह भी आपको बता दूं कि आपके इस पत्र पर जो इन्क्वायरी हुई है, उसकी रिपोर्ट आप अभी चाहें तो मैं अभी रख दूं।

Page No. 48

श्री गंगाराम चौधरी : माननीय अध्यक्ष, इन्होंने जो मुझ पर आरोप लगाये हैं उनके सम्बन्ध में मैं निवेदन कर दूं। (शोरगुल) इन्होंने जो मुझ पर आरोप लगाये हैं उनके सम्बन्ध में मैं निवेदन कर दूं····

श्री देवीदत्त : मुख्य मंत्री जी, आपका चेला उलझ गया मझधार में, उसको बचाओ।

श्री परसराम मदेरणा : सुनिये ! सुनिये आप !

श्री गंगाराम चौधरी : उन्होंने अपने भाषण में जो मुझ पर आरोप लगाये हैं····

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर प्लीज !

श्री गंगाराम चौधरी : माननीय अध्यक्ष, उन्होंने जो आरोप मुझ पर लगाये हैं वह बिल्कुल गलत हैं····

श्री भैरोंसिंह : मैंने कोई आरोप नहीं लगाया है।

श्री गंगाराम चौधरी : इनकी नाराजी का एक कारण है, वह मैं आपको निवेदन कर दूं। अभी कुछ दिन पहले 12-4-67 को·········

श्री जसराज (भिनाय) : आपका काम तो बन गया।

श्री गंगाराम चौधरी : आपको नाराजी का कारण मैं बता रहा हूं। आप 12-4-67 को जब बाड़मेर आये थे तो जीप के अन्दर कुछ आर्म्स और पर्सन्स को लेकर आये थे और कांग्रेस के जीते हुए पर्सन को जबर्दस्ती उठाना चाहते थे। माननीय अध्यक्ष····

श्री जसराज : आपकी कांग्रेस की हरकतें तो बाद में मैं बयान करूंगा।

श्री गंगाराम चौधरी : उसमें आप नाकामयाब रहे और रात में 1 बजे आपको धक्के दे देकर बाहर निकाल दिया। उसकी नाराजगी प्रगट करते हुए आपने मुझ पर आरोप लगाये हैं··

एक माननीय सदस्य : आप (गंगाराम चौधरी) 6 तारीख को नागौर पधारे थे ?

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो चार्ज लगाया है यह बिल्कुल गलत है। मैं चाहूंगा कि इस चार्ज की इन्क्वायरी की जाय। मैं यह नहीं चाहूंगा कि चार्ज लगाया और हो गया।

श्री रघुनाथ विश्नोई : ऐसे चार्जों की इन्क्वायरी नहीं होती।

श्री भैरोंसिंह : मैंने लोगों को उड़ाने का काम कभी नहीं किया है। आप मुझे इस काम में एक्सपर्ट समझते हैं इस बात से मुझे खुशी होती है लेकिन इस चार्ज को आप साबित करिये।

श्री अध्यक्ष : श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता !

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : अध्यक्ष महोदय····

श्री अध्यक्ष : श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता ! लीडर आफ जनता पार्टी।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़) : अध्यक्ष महोदय, निर्दलीय सदस्यों का कब नम्बर आयेगा ?

श्री अध्यक्ष : आयेगा। आप आसन ग्रहण करिये।

श्री मनोहरसिंह मेहता : गवर्नर महोदय ने नहीं माना है। आप मानते तो हैं न?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य थोड़ा दायित्व से बोलें।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (बानसूर) : अध्यक्ष महोदय, गवर्नर महोदय के अभिभाषण पर जो वादविवाद चल रहा है उसमें सरकार के सम्बन्ध में बहुत सी बातें कही गईं। मेरा जो दृष्टिकोण है वह इस सम्बन्ध में कुछ पर्सनल है क्योंकि, अध्यक्ष महोदय, कुछ समय तक तो मुझे राज्य सरकार से सहयोग करने का मौका मिला है और उसके बाद में आज मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ है कि जिस राज्य सरकार के साथ इतने सालों तक मैंने सहयोग किया, बाकी सरकारी पक्ष की पार्टी में भी मैं रहा हूं, उसके बाद मैं उस पार्टी को छोड़कर आज उसी गवर्नमेंट की खिलाफत में बोलने को खड़ा हुआ हूं····

श्री गिरधारीलाल व्यास : शेम! शेम!!

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अभी एक साहब बहुत उतावले हो रहे हैं और शेम शेम की बात कहते हैं। आप यह मत ख्याल कीजिये····

श्री भीमसेन (लूणकरनसर) : अवसरवादी हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : कि मैं चुप हो जाऊंगा। यह बातें कहने का मुझे अधिकार है।

श्री गिरधारीलाल व्यास : बोलने का अधिकार आपका भी है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैं दावे के साथ कहता हूं और आप इस पर विश्वास कर चलिये, और जो बात मैं कहूंगा उस पर शेम-शेम कहने वाले आदमी विचार कर लें कि आपने कांग्रेस शासन में रह कर जो कांग्रेस शासन से सहयोग किया है, उसके लिए बाद में आपको लगेगा कि आपने यह बहुत बड़ी गलती की है। आप इस बात को बाद में महसूस करने वाले हैं। आज कांग्रेस की स्थिति यह है (शोरगुल) आज कांग्रेस की और कांग्रेस शासन की स्थिति यह है, मैं इस बात को बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहता हूं कि जिन शख्सों की गुलामी करने की प्रवृत्ति होती है, गुलामी करने की मनोवृत्ति होती है वह शख्स ही कांग्रेस के साथ रह सकते हैं और कांग्रेस पार्टी में जाकर बैठ सकते हैं। उनके अलावा और कोई दूसरा आदमी वहां नहीं बैठ सकता। अध्यक्ष महोदय, यह बहुत पर्सनल अनुभव की और तथ्यपूर्ण बात है जिसके सम्बन्ध में मुझे बड़ी नम्रता के साथ कहना पड़ता है····

श्री गिरधारीलाल व्यास : मैं, अध्यक्ष महोदय, इनसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। आपने कहा कि जिन्होंने शेम-शेम कहा वह कल इधर आकर बैठेंगे। मैं यह पूछना चाहता हूं कि आप जब तक मंत्री बने रहे तब तक तो कांग्रेस अच्छी रही और जब आप मंत्री नहीं बनने के कारण उधर चले गये तो वही कांग्रेस आपके लिए खराब हो गई। क्या यह बात है कि जब तक मंत्री रहे तब तक कांग्रेस अच्छी थी और जब मंत्री नहीं बने तो कांग्रेस खराब हो गई।

विरोधी पक्ष के कई माननीय सदस्य : बैठजाओ! बैठ जाओ!!

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज! श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता!

श्री मदनसिंह (दांतारामगढ़) : आप मंत्री थे, तब भी इतने पूज्यनीय हमारी नजर में उस समय थे।

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर !! श्री बद्रीप्रसाद !

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैं इस बात को जानता था कि आप यह बात कहने वाले हैं। मेरे पास में इस बात का जवाब है। चुनाव होने के पहले मैं कांग्रेस का टिकट छोड़ कर और कांग्रेस के खिलाफ जीत कर आया हूं। मुझ पर कांग्रेस का कोई अहसान नहीं है कि मैं उसकी बदौलत जीतकर आया हूं·····

श्री जयकिशन : आपने टिकट बानसूर का नहीं छोड़ा था।

श्री बद्री प्रसाद गुप्ता : आप मेरे मुकाबले में क्या हैं जो मेरे सामने खड़े होंगे।

श्री जयकिशन : बानसूर का नहीं दिया गया इसलिए कांग्रेस छोड़ दी।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : जो टिकट मुझे दिया वह छोड़ कर आया हूँ।

श्री गिरधारी लाल व्यास : बानसूर का नहीं मिला इसलिए छोड़ दी।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ! इस बात को छोड़िये कि क्या टिकट था, क्या नहीं था।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : इनको कह रहा हूँ, मैं इनको अच्छी तरह से जानता हूँ।

श्री अध्यक्ष : एक दूसरे को सब जानते हैं। आप आरम्भ रखिये।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, हमारे यहां चुनाव के दिनों में क्या हाल रहा। बहुत से माननीय सदस्यों ने सत्ता की ओर से चुनाव में सत्ता का दुरुपयोग करने के आरोप लगाये हैं। मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि सत्ता दुरुपयोग करना तो, जो लोग सत्ता में बैठे हैं, उनका स्वभाव बन गया है, इसलिए इसमें कोई खास गलती की बात नहीं है·····

श्री गिरधारी लाल व्यास : आप भी करते थे ?

श्री अध्यक्ष : बोलने दीजिये।

श्री गिरधारी लाल व्यास : आपका स्वभाव नहीं था ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : लेकिन मुझे अफसोस इस बात का है कि इस बार जो चुनाव हुए उसमें कांग्रेस के जो आदमी सत्ता में बैठे हुए थे उन्होंने अपनी सत्ता का दुरुपयोग करने में सारी पाबन्दियां, सारे प्रतिबन्धों को तोड़ दिया और सत्ता का इस कदर दुरुपयोग किया कि उसकी कहीं पर भी, राजस्थान में ही नहीं हिन्दुस्तान में मिसाल नहीं मिलेगी। जिस तरह कांग्रेस के द्वारा सत्ता का दुरुपयोग इस चुनाव में किया गया है उसके कुछ उदाहरण मैं आपको बताता हूँ। सबसे पहले तो हमारे एक बाबा खेतान दास ने चुनाव लड़ने की घोषणा की थी। उनके साथ इस तरह का बर्ताव किया गया, उसमें यह बात निर्विवादित रूप से सिद्ध है कि वह चुनाव में खड़े हो रहे थे और उन्होंने चुनाव लड़ने का एलान भी कर दिया था, उन्होने एक पब्लिक मीटिंग करके चुनाव लड़ने का एलान कर दिया था। उसी समय जनता पार्टी की भी मीटिंग होने वाली थी जिसके

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)

अन्दर उनका समर्थन होने वाला था । इस बीच में 12 और 2 बजे के बीच, दिसम्बर के महीने की बात है और यह बात एडमिटेड फैक्ट है कि जिनके खिलाफ वह खड़े हुए थे, वह उनको मोटर में रात में बैठा कर ले गये और कहीं ले जाकर गायब कर दिया । अब एक सप्ताह पहले जाकर वह छोड़े गये हैं···

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : दिसम्बर के महीने में कौन खड़ा हुआ था ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : यह दिसम्बर का मामला है ।

श्री गिरधारी लाल व्यास : दिसम्बर में कब फार्म भरे गये थे ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : एक महीने पहले उन्होंने एलान कर दिया था । आप इस तरह क्या बात कह रहे हैं ?

श्री रामकिशन : यह जो···

श्री अध्यक्ष : अभी वह निवेदन कर रहे हैं आपके पीछे खड़े हुए ।

श्री गिरधारी लाल व्यास : अध्यक्ष महोदय, दिसम्बर में चुनाव नहीं हुए थे ।

श्री अध्यक्ष : आप तो फर्मायें ।

श्री नत्थीसिंह : यह सब जानते हैं, आप थोड़ा धैर्य रखिये ।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : आप इतने उतावले क्यों हो रहे हैं ।

श्री जयकिशन : आपको जानने की जरूरत ही नहीं है ।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : बाबा खेतान नाथ के साथ जो हुआ उस बात को कौन नहीं जानता है । इसके बावजूद भी इन माननीय सदस्यों को इतनी बात कह दूं कि आपकी इन बातों का कोई नतीजा नहीं निकलने वाला है । मैं कोई वाक आउट करने वाला नहीं हूं···

श्री जयकिशन : वह हम जानते हैं कि आप मानेंगे नहीं ।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : आप मेरा टाइम खराब नहीं कर रहे हैं अपना खराब कर रहे हैं ।

श्री गिरधारी लाल व्यास : मैं जानता हूं कि जब ऐसा मौका आयेगा आप वाक आउट नहीं करेंगे ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! आर्डर प्लीज !

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : हम सब ही उधर आकर बैठने वाले हैं। और आप इधर आकर बैठने वाले हैं । आप क्या कह रहे हैं ।

श्री अध्यक्ष : आप आरम्भ रखिये, श्री बद्रीप्रसाद जी !

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, इस बारे में कुछ अधिक नहीं कह कर थोड़ा सा अर्ज करूंगा क्योंकि मुझे बहुत सी बातें कहनी हैं । इस सिलसिले में इस पर इतना ही अर्ज करूंगा कि उनको जिस सदस्य के खिलाफ खड़ा होना था वे इनको रात को दो बजे करीब ले गये और कई महीनों तक उनका पता लगाने पर भी उनका पता नहीं लगा और वे चुनाव नहीं लड़ सके । उनकी राय यह है कि वे हमारी मोटर में बैठ कर चले । मैं यह निवेदन करूंगा कि मेरे खिलाफ खड़ा

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)

होने वाला रात को चुप चाप चला जावे। यह किसी के चुनाव की बात नहीं है यह तो एक सिद्धांत की बात है। बाबा खेताननाथ के मामले में सत्ताधारी लोग हैं उनकी जिम्मेदारी है। वे बाबा को ले गये और उनको खास तौर से भगाया गया ताकि वे चुनाव नहीं लड सकें। यह बड़े शर्म की बात है।

जिस प्रकार का वातावरण यहां पर चुनावों के समय हुआ वैसा वातावरण आपको और कहीं भी नहीं मिलेगा। अब तो कांग्रेस केण्डीडेट नहीं बोलते।

दूसरी मिसाल मैं आपको बताना चाहता हूँ।

श्री जयकृष्ण (थानागाजी) : आप तो भूठ बोलने के माहिर हैं।

एक माननीय सदस्य : जयकृष्णजी से कम हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : चोर की दाढी में तिनका वाली बात आ रही है। वे जो सदस्य चुनाव में जीत कर आये हैं, एलान हुआ, उस रोज अलवर में उसका स्वागत किया। उसके लिए चुनाव में खड़े होने के लिए पैसे का इन्तजाम किया गया। वे चुनाव में आये और राजगढ़ गये। वहां पर कांग्रेस का दफ्तर है वहां पर कांग्रेस के झन्डे को उतारा और उसके जूते लगाये·······

श्री जयकृष्ण : बिल्कुल भूठ है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : बिल्कुल सच है। वहां के सरपंच और प्रधान····

श्री जयकृष्ण : प्रधान तो मेरे खिलाफ चुनाव लड़ा था। आप भूठ बोलते हो और भूठी बात फैलाते हो। अगर यह बात सही हो तो मैं विधान सभा से इस्तीफा देने को तैयार हूँ और अगर सही नहीं हो तो आप इस्तीफा दे दें। अगर आप में हिम्मत है तो तैयार हो जावें।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अध्यक्ष महोदय, आपस में बात चीत नहीं की जावे।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। माननीय सदस्य।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : कांग्रेस के झण्डे को जूते मारे और कांग्रेस ने उसको कांग्रेस में ले लिया और वह कांग्रेसी बन गया।

श्री अध्यक्ष : आप राज्यपाल महोदय के अभिभाषण तक ही अपनी राय व्यक्त करें। आप यहां के अनुभवी सदस्य रहे हैं और बड़े महत्वपूर्ण सदस्य रहे हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : चुनावों में अनियमितताये की गई हैं उसके लिए कह रहा हूँ।

श्री अध्यक्ष : आप जारी रखें।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : चुनाव ठीक ढंग से हों और चुनावों में अनियमितता नहीं हो और अधिकारों का दुरुपयोग नहीं किया जावे। लेकिन यह निवेदन करना चाहूंगा कि इसका दुरुपयोग किया गया है। इन बातों को सदन में बता रहा हूँ।

एक बात मैं आपको और बता दूं कि मैं बीच में दो साल तक कांग्रेस का केण्डीडेट रहा और मुझे दो साल तक कांग्रेस के केण्डीडेट

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)
रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उस बीच में मैंने कई बार कांग्रेस के मिनिस्टरों से बहुत सी बातों के लिए रिक्वेस्ट की लेकिन आपको ताज्जुब होगा यह जान कर कि मेरे इलाके में जब तक मैं एम. एल. ए. रहा, कांग्रेस का एम. एल. ए. होते हुए भी कोई भी काम वहां पर नहीं कराया गया। मैंने पी. डब्ल्यू. डी. मिनिस्टर को पर्सनली रिक्वेस्ट की कि मेरे यहां एक सड़क है उस पर मिट्टी डलवाई जावे और बाद में उसको ठीक कराई जावे। उसकी हालत खराब है। उसके लिए मैंने पर्सनल रिक्वेस्ट की। उस पर उन्होंने मुझे कहा, बद्रीप्रसादजी आप खुद जानते हैं कि पैसा नहीं है और पैसे बगैर काम कैसे हो सकता है। अध्यक्ष महोदय, आपको यह जानकर आश्चर्य और दुःख होगा कि जब मैं कांग्रेस छोड़ कर चुनाव लड़ने लगा तो मैंने देखा कि वही सड़क बन रही है।

श्री अध्यक्ष : आपके वक्त में आदेश नहीं हुए होंगे।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : बिल्कुल नहीं हुए। मैं वहां गांव में पहुंचा और वहां के लोगों से पूछा कि क्या बात है। उन्होंने कहा कि डिप्टी मिनिस्टर साहब आये थे। उनसे कहा कि हमारे यहां पर सड़क बनावेंगे उनको वोट हम देने वाले हैं। इसलिए उन्होंने वादा किया कि परसों ही आर्डर ले आवेंगे और तीसरे रोज ही मंजूरी आ पहुंची और उस सड़क का काम चालू हो गया। कच्ची सड़क बनाई गई और पक्की सड़क बनाने के लिए वहां पर पत्थर आदि भी पड़े हुए हैं मगर चूंकि चुनावों में कांग्रेसी हार गये थे इसलिए वह सड़क बन्द हो गई है। मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि मेरे कांग्रेसी एम. एल. ए. होते हुए भी और मेरे यह चाहते हुए कि सड़क बन जाए उस वक्त उसको बनाने के लिए इन्कार करते रहे। मगर जब चुनाव हुआ तो वह सड़क बन गई।

श्री जयकृष्ण : सन् 62 में आपने बहुत सड़कें बनाई थी।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अब आप शांत रहिये।

श्री रामकिशन (वैर) : माननीय सदस्य और श्री शोभारामजी, उनकी और उनकी दोनों की वेदना समान है वे तो बोल ही नहीं रहे हैं और आप क्यों व्यक्त कर रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : (श्री बद्रीप्रसाद से) माननीय सदस्य आप प्रारम्भ रखिये।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैं एक बात और आपके सामने रखता हूं। मेरे यहां मेरी कोन्स्टीटुएन्सी में हमीरपुर ग्राम है वहां के लिये वाटर वर्क्स के लिए सब्सीडी दी जावेगी उसके लिये काफी प्रयास किया गया मगर उस गांव में अभी तक सबसीडी नहीं मिली। चुनाव का अवसर आया तो उप-मंत्री महोदय ने अपने यहां पर बिजली का कनेक्शन करवा लिया और मेरे गांव में अभी तक बिजली नहीं।

श्री जयकृष्ण : कितने गांवों की समस्या हल हुई है इसको पूरा हाउस जानता है। हाउस को पता है।

(बहुत से माननीय सदस्यों के एक साथ बोलने और टूटिंग के कारण अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज! ऑर्डर प्लीज!

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मुझे इस बात की शिकायत नहीं कि उन्होंने अपने यहां पर बिजली लगायी। मगर मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मेरे गांव के पास से बिजली गई है और गांव के लिए लिखा-पढ़ी की गई और वहां गवर्नमेंट एश्योरेन्स दिए जा रही है।

श्री रघुनाथ बिश्नोई : आपको तो इस पर.......

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मगर जिस रोज वोट होने वाले थे उसके एक रोज पहले वहां पर बिजली जला कर दिखाई गई। इसके अलावा एक मिसाल और देना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : आपका अनुभव तो मेडिकल का है उसके बारे में आप प्रकाश डालें।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : चेअर की तरफ से इस तरह का सजेशन नहीं आना चाहिए।

श्री अध्यक्ष : सुझाव ठीक है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अलवर जिले में 22-23 डिस्पेन्सरियां हैं, एक दो बड़े अस्पताल शहर के अन्दर हैं। अध्यक्ष महोदय, ऐसी कोई मिसाल राजस्थान में नहीं मिलेगी जब कि दो साल तक अलवर जिले के अन्दर वहां के पी. एम. ओ. ने कोई भी दवाई खरीद नहीं की और अस्पतालों में बीमार बिना दवाई के तड़फते रहे और अपने घर के पैसों से दवाइयां खरीद कर लाये। दो साल तक बीमारों को कोई सामान नहीं मिला, 6 महीने तक अलवर के अस्पताल के लिए कोई दूध के खरीददार को ठेका नहीं दिया गया और गरीब बीमारों को दूध तक उपलब्ध नहीं हुआ। यहां के डी. एम. एच. ओ. ने मौके पर जाकर जांच की और रिपोर्ट दी कि दो साल तक पी. एम. ओ. ने खरीद नहीं की, मैंने कारण पूछा तो मालूम हुआ कि ठेकेदार से उनकी बनती नहीं थी इसलिए खरीद नहीं की। दूध की खरीददारी नहीं की गई इससे गरीब बीमार तड़प-तड़प कर मर गए। मुझे मालूम हुआ है कि कांग्रेस के आदमियों ने उस ठेकेदार को सर्टिफिकेट दिया है। मुझे इस बात को देखकर बड़ा अफसोस होता है कि सत्ता में बैठे हुये लोग दो दो साल तक इस बात की ओर ध्यान नहीं दे सके कि अलवर के लिए दवाइयां नहीं खरीदी जा रही हैं और उन अधिकारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जाती क्योंकि वे महरबानी के पात्र थे। इस सम्बन्ध में मैंने एक पत्र मुख्य मंत्रीजी को 22-1-66 को लिख कर भेजा कि इस तरह आपके राज्य में ज्यादतियां हो रही हैं। उनका जवाब आया और एश्योरेंस दिया कि मैं बहुत जल्दी इस मामले में देखूंगा पर आज तक कोई कार्यवाही हुई हो ऐसा मुझे नहीं लगता।

सत्ता के लोग किस तरह निडर हैं और किस तरह मनमानी करते हैं इसकी मैं एक मिसाल रखता हूं। माननीय अध्यक्ष इसे सुन कर आप भी कहेंगे कि इन मिसालों का कोई मानी नहीं है। पटवारियों के बारे में आम तौर पर लोग शिकायतें करते रहते हैं कि वे मनमानी करते हैं, गरीब काश्तकार हमेशा से शिकायत करते आये हैं, एक मामला मैं आपके सामने रखूंगा, उससे जाहिर होगा कि पटवारी ने मेरे खुद के गांव में एक साल इस तरह परेशान और तंग किया कि बयान नहीं किया जा सकता। बिना पैसा लिए कोई भी आदमी काम करने को तैयार नहीं, काम कराने के लिए या तो सिफारिश चाहिए या

(श्री बद्रीप्रसाद)
फिर पैसा देने से काम हो सकता है। मेरे पास दो इन्स्टान्सेज हैं। मैंने जमीन खरीदी थी मेरे लड़के के नाम से कारखाना बनाने के लिए। 20-11-65 को पटवारी को लिख कर दिया, डेढ़ साल तक पटवारी ने कोई कार्यवाही नहीं की। मैंने खुद ने और मेरे लड़के ने पर्सनली कहा पर कोई कार्यवाही नहीं की। मैं कांग्रेस का एम.एल.ए. था, मुझे सब लोग जानते हैं पर डेढ़ साल तक पटवारी ने कोई सुनवाई नहीं की, तो अन्दाज लगाइये कि साधारण आदमी की वहां क्या सुनवाई होगी।

(1.43 म. प.)

(श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत सभानेत्री पदासीन)

श्री रघुनाथ बिश्नोई : आपको तो कलेक्टर से मिलना चाहिये था, इतने बड़े आदमी होकर पटवारी से आपको नहीं मिलना चाहिये था।

एक माननीय सदस्य : जब मिनिस्टरी में थे उस समय उस पटवारी को आपने तंग किया होगा।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : सभापति महोदया, आज कल राज्य के शासन की ओर से इतने अधिकारी कायम किये हुए हैं कि जब वे गांवों में जाते हैं तो जिस तरह राजाओं के जमाने में बिरजूसिंह डाकू जाया करता था और गांव के गांव खाली हो जाते थे ठीक उसी तरह फूड इन्स्पेक्टर जिस गांव में जाते हैं बनियें दुकानें बन्द कर-कर के चले जाते हैं। सब व्यापारियों को इकट्ठा करके उनके आदमी कहते हैं कि तुम सब लोग मिल कर पैसा इकट्ठा करके उनको दो वरना ये तुम्हारी बहियां, तुम्हारे कागजात ले जायेंगे। आज स्थिति यह है कि गांवों में मच्छर कम है और अफसर ज्यादा हैं और इस तरह सिवाय जनता को परेशान करने के और कोई काम नहीं करते।

मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि इन सब बातों की ओर ध्यान दें। मैं जानता हूं कि जिस समय कांग्रेस के शासन में गड़बड़ियां चल रही थीं तो पिछली बार लोगों ने कांग्रेस अध्यक्ष के पास शिकायतें कीं तो उस समय कहा जाता था कि एन्टी सोशियल एलीमेंट्स हैं जो इस प्रकार की शिकायतें करते हैं। आज उसी का नतीजा है कि बंगाल, बिहार, पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि में कांग्रेस की हुकूमत खत्म हो गई। आज भी सही बातें रखते हैं तो कांग्रेस की ओर से वही पुरानी बात दोहराई जाती है . . .

श्री गिरधारी लाल शर्मा : तुम थे उस समय क्या किया ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैं था तब तक तो तुम्हारे जैसे लोगों की दाल नहीं गलने दी। जो गवर्नमेंट में बैठे हैं वे इन्क्वायरी करावें, उनको पता चल जायगा कि मैंने कोई गलत हुकम नही दिया है। जिस वक्त मैं वहां बैठा हुआ था उस समय भी मैंने अपोजिशन को चैलेंज कर के कहा था कि मैंने जितना काम किया है, ईमानदारी से काम किया है, भगवान को साक्षी रख कर, भगवान को सामने रख कर काम किया है। आज भी जो लोग गवर्नमेंट में बैठे हुए हैं उनसे मेरा यही कहना है कि वे जांच करा के देख लें कोई काम बेईमानी से करता साबित हो जाय तो . .

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : (अश्रव्य)।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : चुप रहिये शर्म नहीं आती। जांच करवा लीजिये, मेरे द्वारा किये हुए किसी भी काम को यदि कानून के खिलाफ किया हुआ साबित कर देंगे तो मैं विधान सभा से स्तीफा दे दूंगा। मेरी तरह से तुम लोगों ने भी यदि किया होता तो आज तुमको ये दिन नहीं देखने पड़ते।

श्री गिरधारीलाल शर्मा : हम यह नहीं कहते कि बेईमानी की, हमको तो यह शिकायत है कि आपने कुछ नहीं किया।

श्रीमती सभानेत्री : आपको काफी समय हो गया है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अभी तो मैंने शुरू किया है।

श्रीमती सभानेत्री : आपको काफी समय हो गया है, आप अपना संशोधन मूव करें।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : व्यापारियों के बारे में मुझे निवेदन करना है कि गांवों के अन्दर गरीब व्यापारी और गरीब जनता, ये सरकारी अधिकारियों से त्रस्त रहे हैं, इतने दुखी हैं कि बयान करना भी मुश्किल है। मेरे सामने काफी व्यापारियों ने आकर कहा कि हमारे पास अधिकारी आते हैं, हमें इस बात की बड़ी खुशी होगी कि आप हर गांव के लिए पैसे फिक्स कर दो। कभी तो कोई इन्सपेक्टर आता है तो कभी कोई। चंदा इकट्ठा करके रिश्वत देनी पड़ती है। कभी सेल्स टैक्स का इन्सपेक्टर तो कभी इन्कम टैक्स का, हमारे अकाउन्ट बुक्स पकड़ कर ले जाते हैं। इसलिए वह आकर कहते हैं कि हर गांव के लिए तय कर लें कि साल में इतने रुपए देने पड़ेंगे तो हम देंगे ताकि रिश्वतखोरी से तो पिंड छूट जाय। कभी खाद्य इन्सपेक्टर आता है तो कभी और कोई जाता है।

एक माननीय सदस्य : व्यापारियों से चोरी करना तो छुड़ाओ।

श्री गोवर्धन सोनी (मेड़ता) : यह गलत आरोप है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : चोरी करने वालों को आप पकड़ नहीं सकते।

श्री भैरोंसिंह : जिस समय बद्रीप्रसादजी मंत्री थे, कांग्रेस की तरफ थे, मैंने उस समय भी उनकी ईमानदारी की तारीफ की थी।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैंने तो आपको भी चेलेंज किया है, आप इन्क्वायरी करवाएं।

श्री जयकिशन : आपकी तारीफ तो भैरोंसिंहजी करते थे कि तीन आर्डर्स एक दिन में करते थे।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैंने तो आपको चेलेंज किया है कि अगर एक भी आर्डर ऐसा दिया हो तो बताइए लेकिन तुम्हारे काले कारनामे बहुत हैं।

(शोरगुल)

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इनकी जांच तो आप करवालें और अपने मंत्रियों की जांच हम से करवालें। खड़े होकर अपने मंत्रियों से कहिए।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : एक मिसाल और सत्ता के दुरुपयोग की मैं देना चाहता हूं कि अधिकारी किस तरह से मनमानी करते हैं। अलवर शहर में एक सहकारी समिति बनी हुई है और फारेस्ट कोआपरेटिव के नाम से है और उसको जंगलात का ठेका दिया जाता है। उस सोसाइटी के खिलाफ पुलिस में मुकदमा दर्ज हुआ। इसमें एक लाख रुपए का गबन है।

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)
केस रजिस्टर हो गया, रेकार्ड पकड़ा गया और पुलिस ने जब गिरफ्तारी की कार्यवाही की तो सरकार की तरफ से हस्तक्षेप करके उस केस को विथड्रा कर लिया गया पुलिस से कहकर। कोई भी कानून नहीं है जिसमें जाब्ता फौजदारी के तहत कोई केस रजिस्टर किया गया हो और फिर वापस लिया गया हो। उस सोसायटी में 51 प्रतिशत रुपये सरकार के हैं. केस रजिस्टर हुआ। उस केस में एस. पी. ने सहकारी विभाग से रिपोर्ट करवाई कि कानून से यह केस नहीं चल सकता और एस. पी. ने विथड्रा किया और रेकार्ड वापस कर दिया।

मैं आज भी चेलेंज करता हूं कि कोई भी मुझे ऐसा कानून बता दें जिसमें एक बार जो केस रजिस्टर हो गया है, वह बिना सरकार की अनुमति के वापस विथड्रा हो सकता है, तो मैं आज ही इस्तीफा दे दूंगा।

श्री गिरधारीलाल व्यास : आप इस्तीफा नहीं देंगे।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अगर आप तैयार हैं तो। मैंने उस केस के बारे में एस. पी. से कहा, सहकारी मंत्री श्री मथुरादास माथुर से कहा, उन्होंने कहा कि यह गलत काम है। उन्होंने इस बात को माना कि जो केस रजिस्टर हो गया तो कोई ऐसा कानून नहीं है जिससे कि विथड्रा हो सके। लेकिन इसके बावजूद भी, वह केस विथड्रा हो गया। और तो और, एक साल में तो उस सहकारी समिति के खिलाफ गबन साबित हो गया और साल के बाद उसी समिति को सरकार की ओर से पैसा मिल गया जिसकी जिम्मेदारी उधर बैठने वाले माननीय सदस्य पर है। जांच हुई और गबन साबित हुआ। दो आदमी जिन्होंने शिकायत की उनको नोटिस दिया कि तुम्हारी नौकरी खत्म की जाती है। जिन आदमियों ने शिकायत की कि इसमें गबन हो रहा है उनकी सर्विसेज खत्म करके उनको नोटिस दिया गया। ऐसी मिसाल अलवर जिले में आपको और कहीं नहीं मिल सकती है। उन्होंने तो सत्ता का दुरुपयोग करना और मनमानी करने का उसूल ही बना रखा है।

एक साहब मेरे पास आये और कहा कि यह इस तरह का काम है, आपको करना चाहिए। मैंने कहा कि यह कानून के खिलाफ है, यह कैसे हो सकता है? तो बोले जो आदमी मंत्री हो उनके सामने कानून क्या है? मैंने उनसे साफ कहा कि यह बात नहीं होने की है आखिर विधान सभा कानून बनाती है। उन्होंने कहा कि जब विधान सभा कानून बनाती है तब तो तोड़ने का मौका मिलता है। उल्टे इस तरह की भावनायें लोगों में पनपा रहे हैं, कानून कायदे की कोई परवाह नहीं। सत्ता में बैठकर, सत्ता को कायम रखने के लिए उनको उसका दुरुपयोग करने का अधिकार मिला हुआ है। और अधिक न कहकर मैं एक बात कहूंगा।

मैंने जो बात सदन के सामने रखी है, वह मुख्य मंत्री के सामने भी रखी है और उन्होंने जवाब भी दिया है, मेरे पास उनका पत्र मौजूद है कि जल्दी वे मामले को देखेंगे लेकिन उसके बाद उन्होंने क्या किया, कोई जानकारी नहीं। वह सहकारी समिति काम कर रही है। मेडिकल विभाग को भी शिकायत की थी लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई।

पंचायतों और कोआपरेटिव्ज के बारे में इस अभिभाषण में तारीफ की गई है।

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)
पंचायत समितियों के जितने काम हैं, वे करीब करीब कोआपरेटिव्ज को दे दिए गए। बीज वितरण का काम, तकावी वितरण का काम और भी जितने काम होते हैं उनको दिए गए। सीमेंट का डीकन्ट्रोल होगा। अब पंचायत समितियों के पास मेरी राय में कोई काम ऐसा न रहा जो सरकार की ओर से पंचायत समिति कर सकती है। पंडित नेहरू ने पंचायत राज का उद्घाटन किया।

(2. म. प.)

और सरकार ने उसकी बड़ी तारीफ की और उस पंचायती राज की आज यह हालत है कि सिवाय आपसी झगड़े और लड़ाई के और कुछ नहीं रहा। इसलिए मेरा सुझाव है कि जब उनके पास कोई काम नहीं है, आप यह कह कर कि ये हम को कृषि उत्पादन में मदद करेंगी, आप उनको बनाये रखना चाहते हैं जब कि उनको कायम रखने में अब कोई सेन्स ही नहीं है। सरकार ने आई. ए. एस. और आई. पी. एस. के लोगों को बी.डी. ओ. लगाये हैं और कई एक्स्टेन्शन ओफिसर लगाये गये है, जबकि उनके पास कोई काम नहीं हैं। पंचायत समितियों के चुनाव हुए, आप ने सुना होगा, वह हमारे शासन के लिये कोई प्रशंसा की बात नहीं है। उससे पहले चुनाव की पद्धति थी। उसमें 32-33 आदमी होते थे। अब के पंचायत समिति का चुनाव हुआ जितने सदस्य हैं उन सब को वोट देने का अधिकार था। टेन्ट लगा कर पंच और सरपंचों को भगाया गया और जिस प्रकार का नाटक हुवा वह एक अशोभनीय तरीका है। इसलिये या तो यह तरीका बदला जाना चाहिए और पंचायतों के चुनाव होते हैं उसी प्रकार होने चाहिये। पंचायत समितियों को खत्म कर देना चाहिये।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

समाप्त ही कर रहा हूं। एक बात कोओपरेटिव के बारे में अर्ज करना चाहूंगा। कोओपरेटिव के लिये बहुत से अधिकार मिल गये। एक बार यदि चुनाव से चेयरमैन बन जाता है तो वह दस बीस साल तक नहीं छोड़ता है। मनमाने तरीके से चुनाव करा लेता है। दूसरे आदमी जाते हैं तो पांच दस साल तक उनको रिकार्ड ही नहीं दिया जाता है। इसलिये चुनाव कराने के लिये कोई कानून में व्यवस्था होनी चाहिये जिससे दूसरे को चार्ज दिया जा सके। उनको बहुत बड़ी जिम्मेदारी दी जा रही है। अकाउन्ट्स रखने की कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है। पंचायत समितियों में जैसी इसकी व्यवस्था है वैसी ही व्यवस्था इसमें होनी चाहिये।

श्रीमती सभानेत्री : श्री जयनारायण-जी अपना संशोधन पेश करें।

श्री हरिप्रसाद (मण्डावर) : सभानेत्री महोदया, उन्होंने दो एक आक्षेप मेरे पर लगाये हैं। मुझे उसका स्पष्टीकरण करने के लिये दो मिनिट का समय दीजिये।

कई माननीय सदस्य : बैठ जाइये।

श्री हरिप्रसाद : माननीय बद्रीप्रसादजी ने कहा उसके लिये सौभाग्य कहूं या दुर्भाग्य। आपने यहां कुछ वाइल्ड चार्जेज मेरे पर लगाये। आप से हमें इस तरह के कन्डक्ट की जरूरत नहीं थी। चार्ज लगाया उसके लिये मैं कह दूं। एक केन्डीडेट बाबा

(श्री हरिप्रसाद)

खेताननाथजी मेरे यहां से चुनाव में खड़े होने का विचार कर रहे थे, उसके बाद उन्होंने अपना विचार बदल दिया।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैंने सुना है कि खेताननाथजी महाराज थे उनको कांग्रेस वालों ने ला पता कर दिया।

श्री जसराज (भिनाय) : मैंने स्वयम् ने खेताननाथजी से बात की है।

श्री हरिप्रसाद : मुझे खुशी है कि लीडर ऑफ ऑपोजीशन ने बड़ी जिम्मेदारी के साथ यह चार्ज लगाया है। मुझे खुशी है। दो घंटे भी लगेंगे तो मैं इसका एक्स्प्लेनेशन दूंगा। लेकिन आप लीडर ऑफ ऑपोजीशन हैं संयुक्त दल के ····

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मेरी बात गलत है तो मैं मानने के लिये तैयार हूं। सुना है सो मैंने कहा।

श्री हरिप्रसाद : आपने चार्जेज लगाये हैं तो आपने अपनी प्रतिष्ठा को ध्यान में रख कर ही लगाये हैं और गलत हैं तो क्या आप उसको वापिस लेंगे। चार्जेज यह लगाये गये कि बाबा खेताननाथजी को जनवरी में गायब न उड़ा दिया गया। यह बातें यहां हुई। उसके बारे में एक्स्प्लेनेशन देने के पहले मैं इसको फिर रिपीट कर देता हूं कि मेरे कहने में एक भी शब्द गलत हो तो जो कुछ भी यह सदन मुझे सजा देगा मैं उसको सर झुका कर मानूंगा। लेकिन अगर चार्जेज वाइल्ड हैं, गलत हैं, सैल्फिश मोटिव से लगाये गये हैं, फ्रस्ट्रेशन के कारण लगाये गये हैं तो उनको भी ऐसा ऑफर देना चाहिये कि वे यहां से रिजाइन कर देंगे।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैंने जो कुछ कहा है मैं उसको मानने के लिये तैयार हूं।

श्रीमती सभानेत्री : माननीय सदस्य, उनको बोलने दें। आप भी उनकी बात सुन लें।

(शोरगुल)

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैं उनको चेलेन्ज करता हूं।

श्री हरिप्रसाद : माननीय बद्रीप्रसाद जी को तकलीफ देने की मेरी नीयत नहीं है. उनको तकलीफ बहुत काफी है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : आपको तकलीफ बहुत हो रही है। आप चेलेन्ज एक्सेप्ट कर रहे हैं उससे अधिक हो रही है।

श्रीमती सभानेत्री : मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगी कि एक बोले तो बीच में दूसरा न बोले। पहले आप बोले थे तो ये सुनते रहे थे। आप उनको सुनिये।

श्री हरिप्रसाद : मैं तो बहुत कोओपरेशन कर रहा हूं। मैं उनकी तकलीफ कम ही कर रहा हूं।

चार्ज यह लगाया गया कि बाबा खेताननाथजी को उड़ा दिया गया और साथ में हमारे संयुक्त दल के जिम्मेदार सदस्य ने और लीडर ऑफ ऑपोजीशन से जो जनता को नया रास्ता दिखाने वाले हैं, उन्होंने उनके (श्री बद्रीप्रसाद) साथ अपनी प्रतिष्ठा और जिम्मेदारी भी दाव पर लगा दी। अगर वे

Page No. 60

(श्री हरिप्रसाद)
चाहें तो मैं फिर कहने के लिये तैयार हूं। आप में कुछ लिहाज है, शर्म है, उसको लेकर आपको माफी मांगनी चाहिये। आपने यह चार्ज लगाया कि बाबा खेतानाथजी को उड़ा दिया गया।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : क्यों गलत कहते हैं इस बात को। मैंने आपका नाम नहीं लिया।

श्रीमती सभानेत्री : माननीय सदस्य, मैं निवेदन करती हूं कि आप शान्ति पूर्वक सुनिये। आपको यदि उत्तर देना हो तो बाद में मैं समय दे दूंगी। कृपया बीच में न बोलें।

श्री हरिप्रसाद : यह जो चार्ज लगाया कि उनको उड़ा दिया, मेरा एक्स्प्लेनेशन यह है, सुन लें, लिख लें, अगर एक शब्द भी गलत हो तो I should be penalised. उन बाबाजी का विचार बदल गया। उन्होने कहा कि मेरा विचार इलेक्शन लड़ने का नहीं है। तो वे यहां से तीर्थ यात्रा के लिये चले गये।

श्री जसराज : शायद कानपुर और कलकत्ता चले गये।

श्रीमती सभानेत्री : माननीय सदस्य बीच में न बोलें।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : माननीय सदस्य का एक्स्प्लेनेशन कम्प्लीटली सैटिस्फेक्टरी है। मैंने कहा था कि मैंने सुना था वह कहा।

श्री हरिप्रसाद : आप माफी मांगते है ?

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : मैं माफी मांगता हूं। आपका एक्स्प्लेनेशन फुल्ली सैटिस्फैक्टरी है।

श्री हरिप्रसाद : माननीय सभानेत्री महोदया, मैं कह रहा था कि इस चुनाव में गंदा से गंदा प्रचार किया गया। यह उनका चुनाव लड़ने का अपना टेक्निक है। अपने ऊसूल हैं। ऊसूलों का सवाल है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : यह एक्स्प्लेनेशन है।

श्री हरिप्रसाद : मुझे नहीं कहना है, लेकिन कहना इसलिये चाहता हूं कि वे ही बाबाजी कलकत्ते में मिले। यहां की पुलिस गयी। पुलिस के सामने वहां के आदमी, कलकत्ते मे राजस्थान के कुछ आदमी और बंगाली आदमियों को लेकर उन्होंने वक्तव्य दिया। उसके ऊपर उन्होंने दस्तखत किये हैं। मैंने जो यह सब सुना वह सही है। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि वे इसको आगे न बढ़ायें। उसका एक फोटोग्राफ भी लिया गया। उस ग्रुप फोटोग्राफ में कलकत्ता के स्थानीय लोग और वहां के राजस्थानी भी उसमें सम्मिलित थे। उनका बयान है जिसमें उनके दस्तखत हैं सारा ग्रुप फोटो मौजूद है।

श्रीमती सभानेत्री : कृपया संक्षेप में कह दीजिये।

श्री हरिप्रसाद : एक दो मिनिट में ही समाप्त कर दूंगा। वे बाबाजी आज वहां मौजूद हैं उनके बयान हैं वे वापिस आगये हैं। श्रीमान् यदि चाहें तो आगे का और रास्ता तैयार करें। इस प्रकार के वाइल्ड चार्जेज लगाना और किसी से तो मैं उम्मीद कर सकता था किन्तु बद्रीप्रसादजी से तो कतई नहीं।

(श्री हरिप्रसाद शर्मा)

आप बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि मेरे मंत्रित्व काल में मेरे खिलाफ किसी प्रकार के चार्जेज आये हों तो बतायें। मैं उन पर चार्जेज लगाते हुए खुशी तो महसूस नहीं करता मुझे दरअसल दुख है आपने मुझे कहने के लिये मजबूर किया है और मैं इसी कारण कह रहा हूं कि आप जब हैल्थ मिनिस्टर थे आपके खिलाफ नर्सेज के रिटन चार्जेज हैं Are you willing to face it ?

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैंने पहले भी कहा, और अब भी कहता हूं यह बिल्कुल वाहियात बात है। बिल्कुल झूंठ है।

श्री भैरोंसिंह : माननीय सभापति महोदया माननीय सदस्य ने बद्रीप्रसादजी पर चार्जेज लगाये हैं कि इनके खिलाफ नर्सेज के रिटन चार्जेज हैं। मैं आपसे अपील करना चाहूंगा कि वे चार्जेज सदन की मेज पर रखें। हम विरोधी दल की तरफ से यह कहना चाहते हैं कि आप जिस तरह से चाहें इन्क्वायरी करावें हम उसको कराने के लिये तैयार हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : सभानेत्री महोदया, मैंने यह कहा था कि इनकी मोटर में रात को उनको गायब किया गया वह एडमिटेड फैक्ट है। रात के समय उनको मोटर में ले जाया गया। इस प्रकार का आपका लिखा हुआ स्टेटमेन्ट है। मैंने आपका नाम नहीं लिया है कि आप मोटर में उनको ले गये हो। आप जो चार्जेज लगा रहे हैं वे बिल्कुल बेबुनियाद और निराधार है।

श्री हरिप्रसाद शर्मा : मैं चार्जेज पेश करने के लिये तैयार हूं लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं, मैंने जो कुछ भी एक्स्प्लेनेशन की तौर पर कहा है उसमें से एक शब्द भी इधर उधर होने की गुंजाइश नहीं है। अगर उसमें किसी प्रकार की गल्ती हो तो सिर झुकाकर सदन के सामने माफी मांगने के लिये तैयार हूं।

लेकिन जो नर्सेज द्वारा चार्जेज लगाये गये हैं उनके बारे में मैं गारन्टी नहीं करता लेकिन इतना अवश्य है कि उनके द्वारा इनके खिलाफ रिटन चार्जेज दिये गये हैं।

(शोरगुल, व्यवधान)

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैंने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल सत्य है और आपके द्वारा उस पर दस्तखत किये गये हैं। मैंने इतना ही कहा था आपकी मोटर में उनको रात को बिठा कर ले जाया गया।

श्रीमती सभानेत्री : आप कृपया बैठ जाइये पहले इनको समाप्त करने दीजिये।

श्री हरिप्रसाद शर्मा : सभानेत्री महोदया, अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं बैठ जाऊं लेकिन इतना कहना चाहूंगा कि जो बातें और कही गई हैं उनका स्पष्टीकरण बजट पर बोलते हुए करूंगा।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह बात सही है कि आपने जो चार्जेज लगाये हैं उनके बारे में आप अभी कुछ कहना नहीं चाहते। आगे आप बजट के समय इन पर कहना चाहेंगे। इससे यह साफ है कि आपने जो चार्जेज उन पर लगाये हैं वे सही नहीं हैं।

एक माननीय सदस्य : उन्होंने तो क्या उनसे ज्यादा चार्जेज मैं लगाऊंगा।

श्री भैरोंसिंह : माननीय सदस्य हरिप्रसादजी कभी कभी सदन में बोलते हैं और बोलते हैं तब बड़ी जिम्मेदारी के साथ बोलते हैं। लेकिन आज जिस प्रकार के चार्जेज उनकी तरफ से आये, मैं समझता हूं यह संगत का असर है। गैर जिम्मेदारी की बातें कहना उनके मुंह से शोभा नहीं देता। मैं उनसे निवेदन करूंगा कि बद्रीप्रसादजी के खिलाफ जो चार्जेज उन्होंने लगाये हैं वे बिंधुड़ा करेंगे। मैं उन चार्जेज के बारे में निवेदन करता हूं सुखाडियाजी ने उनके बारे में जांच की है और उन्होंने उन चार्जेज को गलत पाया है। अगर आप उन चार्जेज को सही मानते हैं तो आपके नेता द्वारा जिन चार्जेज को गलत बताया गया है, वे आपके ख्याल से ठीक नहीं है। इस तरह से आप अपने नेता पर अविश्वास प्रकट कर रहे हैं। आपके द्वारा उन पर चार्ज लगाना यह सुखाडियाजी के प्रति अविश्वास है जिन्होंने उन चार्जेज को जांच करने के बाद गलत माना है।

श्रीमती सभानेत्री : (श्री हरिप्रसाद से) आप कुछ कहना चाहते हैं।

श्री भैरोंसिंह : पोइन्ट आफ आर्डर है, आप इसके बारे में रूलिंग दीजिये।

श्रीमती सभानेत्री : (श्री हरिप्रसाद से) क्या आप इस बारे में कुछ कहना चाहते हैं!

श्री भैरोंसिंह : पोइन्ट आफ आर्डर पर आप व्यवस्था दीजिये। आप इस तरह से वेग ऐलीगेशन्स लगाने की छूट देती हैं।

एक माननीय सदस्य : आप भी तो लगाते हैं।

श्रीमती सभानेत्री : आप कृपया बैठ जाइये। I think, it is no point of order.

श्री भैरोंसिंह : आप मुझे कम्पेल नहीं कर सकते। मैं स्थान ग्रहण करने के लिये तैयार हूं। आपको रूल्स के अन्तर्गत अधिकार मिले हुए है आप उनके खिलाफ नहीं चल सकतीं।

श्री रघुनाथ बिश्नोई : रूल्स के अनुसार तो कोई पाइन्ट ही नहीं उठता।

श्रीमती सभानेत्री : आपका पाइन्ट आफ आर्डर नहीं मानती।

श्री जयनारायण सालोदिया।

श्री भानुकुमार शास्त्री (अजमेर) : मैं अजमेर के बारे में बोलना चाहता हूं।

श्रीमती सभानेत्री : पहले जिनके संशोधन है उनको बोलने दीजिये।

श्री जयनारायण सालोदिया।

श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई) : माननीय सभानेत्री महोदया, कल से माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद हो रहा है। मैंने भी राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को पढ़ा है। उस पर विरोधी दल की तरफ से कुछ सुझाव दिये गये हैं और अपनी अपनी राय प्रकट की गई है। मैंने इस धन्यवाद प्रस्ताव पर नौ संशोधन रखे हैं। मैं सर्व प्रथम उस संशोधन प्रस्ताव को लेने जा रहा हूं जिस बारे में अभी तक हाउस में किसी ने चर्चा ही नहीं की है। वह है अनुसूचित जाति एवं जन-जाति के बारे में। राज्यपाल महोदय ने इनके बारे में कहा है

(श्री जयनारायण सालोदिया)

कि इनके लिए छात्रवृत्तियां एवं छात्रावास खोले गये है। मैंने इस बारे में पहले भी समय समय पर अर्ज किया है और अब भी अर्ज करता हूं कि जिन लोगों के बलबूते पर, जिनकी राजनीति की कम जानकारी होने की वजह से उनको आपने साथ में रखा है और अपना राजनैतिक स्वार्थ सिद्ध किया है। आज कांग्रेस भी सरकार बना पायी है तो इन्हीं लोगों के बलबूते पर, आज इन्ही लोगों की कृपा पर, इन्हीं की महरबानी से आप सत्तारूढ़ हुए हैं। लेकिन इतना होते हुए भी इन जातियों के साथ आपका जो सलूक रहा है, आपका जो दृष्टिकोण रहा है वह बड़ा ही शर्मनाक है।

माननीय सभापति महोदया, समय समय पर जब भी कांग्रेस को वोटों की जरूरत होती है, नारे लगाते हैं कि हम हरिजनों का उत्थान करना चाहते हैं। महात्मा गांधीजी की जय बोलकर हरिजनों से वोट ले लेते हैं और फिर यहां बैठकर उनके प्रतिनिधियों की बातों की, उनके हितों की अवहेलना करते हैं। उनको खरीदा जाता है, फुसलाया जाता है, लोभ-लालच दिया जाता है। यह सरकार इन्हीं के बल पर टिकी हुई है। जिनके आधार पर यह सरकार टिकी है वे अनुसूचित जाति और जन-जाति के लोग हैं। पर इनके लिए सरकार कुछ नहीं करती। तो यह सरकार कब तक इनको बेवकूफ बनाकर रखना चाहती है।

पर सभानेत्रीजी मैं आपके मार्फत उन लोगों से निवेदन करना चाहता हूं कि अगर उनकी सरकार को जिन्दा रहना है तो इनके प्रति सोचने के तरीकों में उनको परिवर्तन करना पड़ेगा।

साथ ही अनुसूचित और जन-जाति के लोगों को भी स्वयं को सोचना पड़ेगा कि वे इस तरह से इन लोगों के हाथों में कब तक खेलते रहेंगे। पर वे शनैः शनैः यह सोच सकेंगे, उनमें शनैः शनैः राजनैतिक जागृति आवेगी। शनैः शनैः इस तरह की बातों को समझ सकेंगे।

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : पर उधर आपकी बहबूदी के लिए उनकी घोषणा में कौनसा नियम है जिनसे उधर वाले उनका उद्धार करेंगे?

श्री जयनारायण सालोदिया : है, आपको पता नही है। आप उचक उचक कर रहे हैं जैसे पिन लग रही हो, ऐसे उचक उचक करते हो। पहिले पढ़िये आप।

श्रीमती सभानेत्री : माननीय सदस्य, मैं निवेदन करूंगी कि ऐसे शब्दों का प्रयोग न करें।

श्री जयनारायण सालोदिया : मैं बहुत ही आदरपूर्वक शब्दों में आपके द्वारा उन साथियों से निवेदन कर देना चाहता हूं कि हरिजन उत्थान का यह मतलब नहीं कि कुछ को तनखा चालू हो गई या कुछ का रहन-सहन का स्तर ऊंचा कर दिया, कुछ के ऊंचे होने से सब तबके की तरक्की नहीं हो रही है। पूरे तबके को ऊंचा उठाने की बात पर ईमानदारी से सोचना पड़ेगा। जो मेरे साथी उधर भी बैठे हैं उनको भी सारे तबके की भलाई की बात सोचकर चलना होगा। आप यह न समझें कि आप इनकी कृपा पर जिंदा हैं, ये कृपा करेंगे तो टिकट मिलता है या चुनाव लड़कर जीतकर आते हैं। आप यह समझें कि आपकी कृपा पर ये आगे बैठने

(श्री जयनारायण सालोदिया)

वाले मिनिस्टर लोग जिन्दा हैं। ये सफेदपोश हैं जो हमारे वोटों से, हमारी कृपा से जिन्दा हैं। हम इनके निर्माता हैं और भाग्य निर्माता हैं।

श्री मथुरादास माथुर (वित्त मंत्री) : आप अपना वोट इधर भी देंगे अब।

श्री जयनारायण सालोदिया : वह तो आपको मिल नहीं सकेगा अब। पहले मैं भी उस स्थिति में था। बहुत वोट दिये हैं मैंने भी पहले आप लोगों को।

श्री मथुरादास माथुर : हम तो उस स्थिति में फिर लाने को तैयार हैं। आ जाओ।

श्री जयनारायण सालोदिया : मैं दुःख के साथ अर्ज करना चाहता हूं वह दयनीय स्थिति है जिसमें आप लाना चाहते हैं फिर।

श्री मथुरादास माथुर : नहीं, अच्छी स्थिति में लावेंगे।

श्री जयनारायण सालोदिया : तो मैं यह कह रहा था कि हमें यह सोचना है कि हमें अपने पूरे तबके के अधिकारों के लिए लड़ना है। अगर हमारे अधिकारों का हनन होता है तो हमें जागृति के साथ उसके खिलाफ मिलकर अपनी आवाज बुलन्द करनी चाहिये।

कहने को कहा जाता है कि हम लोगों को सरकारी नोकरियों में प्राथमिकता दी जाती है, रिजर्वेशन कर रखा है पर अमल में ऐसी बात नहीं है। आज भी वे लोग इतनी तादाद में बेकार भटक रहे हैं कि जिसकी कोई हद नहीं। अगर सचमुच में इस कांग्रेसी सरकार की हरिजन उद्धार की नीति है और कोई इसका कार्यक्रम रखना चाहती है तो निवेदन करना चाहता हूं कि क्या सरकार ने इसका कोई सर्वे कराया है, आंकड़े हैं उसके पास कि अनुसूचित जाति और जन-जाति के कितने लोगों को नोकरियां मिली हैं और बाकी कितने लोग बेकार घूम रहे हैं। वे कब से बेकार हैं, उनको कब तक काम देने का सरकार विचार रखती है, नहीं रखती है तो क्यों नहीं, कोई योजना अथवा प्लान है सरकार का इस बारे में ?

इसके साथ साथ जैसा पहले भी मैंने निवेदन किया था कि जिनके बल-बूते पर यह सरकार टिकी है उनके साथ क्या बरताव कर रही है। अभी अभी राजस्थान का नया मन्त्रि-मण्डल बना। वह कैसे बना, किस तरह से क्या क्या षडयन्त्र, धोखाधड़ी आदि करके बनाया गया, यह मेरे पूर्व वक्ताओं ने बताया है। मैंने तो इसमें यह देखा है कि जिस जाति के व्यक्तियों के आधार पर यह सरकार टिकी है उनके एक भी प्रतिनिधि को मन्त्रि-मण्डल में नहीं लिया गया। इससे जाहिर होता है कि अनूसूचित जाति व अनुसूचित जन-जाति के लोगों के साथ आज भी यह सरकार भेदभाव बरत रही है। उनको छोटा समझती है मरजीपात्र समझती है। उनसे खुशामद कराना चाहती है। उनके मोरल को डाउन कराना चाहती है और जो उनका अधिकार है, संविधान के द्वारा दिया हुआ है उसको देने में कंजूसी करते हैं और उसमें भी यह दिखाना चाहते है कि आज भी इस अनुसूचित जाति और जन-जाति के लोगों में सुखाड़ियाजी को विश्वास नहीं है, उनके कृपापात्र नहीं हैं। यह हमारी मरजी पर बनेगा। हमारा अधिकार है। मिलेगा हमारा यह अधिकार हमें और मिलना चाहिये। सुखाड़ियाजी कोई बीच में बोलने वाले नहीं हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा (बीकानेर) : हमारे राज में पूर्ण अधिकार मिलेगा।

श्री जयनारायण सालोदिया : सफेद कपड़े पहनते हैं उनका मन मैला होता है।

एक माननीय सदस्य : आप कल से काले पहनकर आइये।

श्री जयनारायण सालोदिया : वह काले तो मैं पहनूंगा जब आप ..

श्री गिरधारीलाल व्यास (आसीन्द) : आपके तो अन्दर काला है, पहनने की जरूरत नहीं काला।

श्री जयनारायण सालोदिया : माननीय सभानेत्रीजी, जो आदमी अन्दर और बाहर दोनों ओर से काला होता है उसको सब वैसे ही दिखते हैं। मुझे इन लोगों की यह जो स्थिति है उस पर रहम आता है।

एक माननीय सदस्य : धन्य हो।

श्री जयनारायण सालोदिया : इन लोगों के स्वार्थ पर इस तरह से कोई आदमी आघात करता है, चोट करता है तो दर्द होना स्वाभाविक है। ये तो आज भी यह चाहते हैं कि हरिजन लोग उनकी खुशामद करते रहें, सुखाड़िया जी की खुशामद करते रहें, मंत्रि-मण्डल कोई सुखाड़ियाजी की बपौती नहीं है। वह विधान सभा की बपौती है और वह हमारे अधिकार है, क्यों नहीं दिया आपने ? आपके पास जगह नहीं थी, दूसरी लिस्ट बनने वाली है प्लाटून और बैठेगी सामने। मैं देखना चाहता हूं उस प्लाटून में भी क्या करते हैं आप।

श्री मूलचन्द डागा : सभानेत्री जी जो संशोधन रखा है उस पर नहीं बोल रहे हैं। यह और ही वकालात कर रहे हैं। अगर किसी संशोधन पर बोल रहे हैं तो वह बतायें कि कौन सा है।

(व्यवधान-अश्रव्य)

(घंटी)

श्री जयनारायण सालोदिया : माननीय सभानेत्रीजी, मुझे मेरे माननीय साथी पर रहम आता है और मालूम होता है कि शायद वह पढ़ते नहीं हैं। विधान सभा में जो भी कागजात जाते हैं उनको माननीय सदस्य शायद देखते ही नहीं है। मैंने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति के लिए दिया है और उसके तहत ही बोल रहा हूं। आपको विधान सभा की परिपाटी का ज्ञान नहीं है।

माननीय सभानेत्री जी यह तो मैंने कांग्रेस की नीति के बारे में बताया यह लोग वोट लेने के टाइम तो क्या नारा लगाते हैं और फिर अधिकार बंटते हैं तो लड्डू खाने के लिए तो यह आगे आ जाते हैं और पिटने के लिए हरिजनों को आगे भेजते हैं। लड्डू खाना हो तो माथुर साहब और दामोदरजी खायेंगे और पिटेंगे तो हरिजन पिटेंगे–इस तरह की जो नीति है यह ज्यादा चलने वाली नहीं है। हरिजन लोग जागरूक हैं, हरिजन समझते हैं और आपकी नीतियों का जवाब भी देना जानते है.......

एक माननीय सदस्य : आपके राजमहल में लड्डूओं का प्रावधान है ?

श्री मथुरादास माथुर : मैं तो आपको लड्डू खिलाने के लिए तैयार हूं पर इस थाली में आकर तो बैठ जाओ।

श्री जयनारायण सालोदिया : माननीय सभानेत्रीजी, इसी तरह से उन लोगों की स्थिति का भी हमें चिन्तन करना चाहिए।

(श्री जयनारायण सालोदिया)
आज राजस्थान में या हिन्दुस्तान मे किसी तबके की मदद की जरूरत है, अगर किसी के उत्थान की जरूरत है तो वह तबका है अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन-जातिका और अगर इस मामलेकोइस तरह से मजाक में लेंगे, इसतरह से अपने स्वार्थ को देखेंगे तो हम हमारा स्वार्थ तो सिद्ध कर लेंगे लेकिन एक समाज के बहुत बड़े अंग को, समाज के एक बहुत बड़े तबके को और बहुत बड़े भाग को हम पिछाड़ने में मदद करेंगे। क्या आप यह चाहते है कि हमारा एक अंग, हमारा एक तबका और समाज का बहुत बड़ा हिस्सा जो कि बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है और जिसके द्वारा हमको बहुत मदद मिलती है उस हिस्से को हम इस तरह से रखेंगे अगर आपकी यह नीति है तो आपको यह मुबारिक हो। अगर आपकी ऐसी नीति नहीं हैं तो फिर 20 साल से आपने क्या किया ?

श्री प्रद्युम्नसिंह (राजाखेड़ा) : कांग्रेस की वजह से ही आप खड़े हैं यहां।

श्री जयनारायण सालोदिया : आप नहीं समझते कि मैं किस तरह से खड़ा हूं। मैं कांग्रेस की बदौलत नहीं हूं लेकिन मेरी बदौलत कांग्रेस है।

माननीय सभानेत्रीजी मैं दूसरा आइटम संक्षिप्त में निवेदन कर देना चाहता हूं। मेरा खास विषय था उसके लिए निवेदन कर देना चाहता हूं। राजस्थान स्टेट रोडवेज के लिए मुझे कुछ कहना है। राजस्थान स्टेट रोडवेज की जो स्थिति आज राजस्थान में है वह किसी भी माननीय सदस्य से या राजस्थान के नागरिक से छिपी हुई नहीं है। उसमें जिस तरह की अव्यवस्था है, जिस तरह से धन का दुरुपयोग होता है अगर किसी को धन का दुरुपयोग देखना है तो वह राजस्थान स्टेट रोडवेज में देखे। कहने मात्र को यह इन्डिपेन्डेन्ट बोर्ड है लेकिन फिर भी मैं यह निवेदन करना चाहूंगा सरकार से माननीय सभानेत्रीजी आपके मार्फत कि उसकी हालत इतनी दयनीय है कि उतनी किसी की भी नहीं होगी। जितनी गाड़ियां खरीदी जाती हैं कैसे खरीदी जाती हैं, उसमें क्या क्या घोटाले होते हैं, कब गाड़ियां खरीदी जाती हैं, कब खराब हो जाती हैं, कब किस तरह से गाड़ियों के टेन्डर्स लिए जाते हैं और किस के द्वारा टेन्डर्स लिये जाते हैं उन सारी बातों को देखना चाहिए, उस पर प्रकाश डालना चाहिए तो उससे स्पष्ट हो जाता है कि यह एक कलंक की बात है और यह स्टेट रोडवेज सरकार के लिए लांछन की बात है जिसको कि हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम स्टेट रोडवेज की बसों में बैठते हैं, उनकी सफाई की हालत देखते हैं, उनके कर्मचारियों के द्वारा सवारियों के साथ व माननीय सदस्यों के साथ जैसा वर्ताव होता है वह अगर हम देखना चाहें तो वह एक लम्बी कहानी है माननीय सभानेत्री जी। हमें कहने मात्र को तो स्टेट रोडवेज के पास मिले हुए हैं लेकिन माननीय सदस्यों की जो हालत होती है बुकिंग क्लर्क, कन्डक्टर्स और ड्राइवर्स के सामने वह विधान सभा के सदस्य को क्या जनता के नागरिक को बर्दाश्त नहीं हो सकती हमें पहले टिकट कलेक्टर को बोलना पड़ता है, फिर कन्डक्टर की खुशामद करनी पड़ती है। कहने मात्र को कई तरह के आदेश निकले हुए है कि विधान सभा के सदस्यों को प्राथमिकता दी जाये और आगे सीट दी जाये लेकिन मैंने ऐसे मौके देखे है, मैं रोडवेज में

(श्री जयनारायण व्यासोदिया)

सफर करता हूं मैंने देखा है कि ग्राम लोगों के साथ रोडवेज के कर्मचारियों का कण्डक्टर, ड्राईवर और बुकिंग क्लर्क और इन्सपेक्टर का इतना भद्दा रवैया होता है कि उसमें एक भला आदमी बैठना पसन्द नहीं कर सकता। यही वजह है कि रोडवेज के कर्मचारियों ने यह फैसला कर रखा है कि रोडवेज फेल हो और हर सवारी को लगेज के मामले में और छोटे टिकटों के मामले में परेशान किया जाये और वह सवारियां दूसरे स्कूटर आदि में या टैक्सी आदि में जाकर बैठें। मैंने विधान सभा के सदस्यों को बस में खड़े होकर सफर करते देखा है। यह मैं इसलिए नहीं कह रहा हूं कि हम कोई खड़े होकर सफर नहीं कर सकते परन्तु इसमें गवर्नमेन्ट की इज्जत का प्रश्न है कि आप विधान सभा के सदस्यों को किस स्टैण्डर्ड पर ले जाना चाहते हैं।

इसी के साथ साथ मैं सवाई चक भूमि अलाटमेन्ट के सम्बन्ध में निवेदन करना चाहता हूं। यह सवाई चक भूमि अलाटमेन्ट का कानून जो हमारे यहां से बना उसको हमने यह दुहाई देकर बनाया था कि वह सवाई चक जमीन जो गांवों में बेकार पड़ी है उसको जल्दी से जल्दी जो भूमिहीन हैं उनको फ्री अलाट करेंगे और उसके द्वारा हम जल्दी से जल्दी खेती की उन्नति करेंगे जिससे हमारी खाद्य-स्थिति जो संकटमय बनती जा रही है उसमें हमको मदद मिलेगी। लेकिन हो क्या रहा है माननीय सभानेत्रीजी की भूमि के अलाटमेन्ट के मामले में अब तक जितने भी अलाटमेन्ट्स हुए हैं, एम. एल. ए. भी उस अलाटमेन्ट कमेटी का सदस्य है लेकिन उसमें 4 सदस्य और हैं। उस कमेटी में एक तो स्थानीय सरपंच है, स्थानीय प्रधान है, स्थानीय विकास अधिकारी और स्थानीय तहसीलदार भी उसका सदस्य है।

सारा रिकार्ड, सारी फाइलें इन लोगों के जिम्मे हैं। जब कोई भी किसान भूमि अलाटमेन्ट की दरख्वास्त देना चाहता है तो वह पहले पटवारी से मिलेगा नम्बर लेने के लिए और वह बिना मिले तो नम्बर देगा नहीं और नम्बर भी देगा तो एक-एक नम्बर को कई-कई आदमियों को दे देगा और एक तरह से लड़ाई झगड़े की शुरूआत वहीं से करा देगा। फिर वह मिसल बन कर अलाटमेन्ट कमेटी के सामने आयेगी और वह अलाटमेन्ट कमेटी उस पर निर्णय लेगी। वह निर्णय भी कैसा होगा कि वह पूर्ण रूप से पक्षपातपूर्ण होगा और रिश्वत-खोरी से ओतप्रोत होगा। फिर जब निर्णय हो जायेगा तो एक ही जमीन दो आदमियों को अलाट कर देंगे, एक को तो कब्जा नहीं दिया जायेगा और दूसरे को पट्टा नहीं दिया जायेगा, तो तीसरे को बोने नहीं देंगे। तो लड़ाई झगड़े का सबसे ज्यादा गांवों में और तहसीलों में अगर कोई जरिया है किसानों को बर्बाद करने का, लड़ाई-झगड़े का तो यह अलाटमेन्ट का जरिया है। अगर सरकार की यह मंशा है कि सवाई चक किसानों को फ्री मिले और उन्हीं किसानों को मिले जो भूमि-हीन किसान हैं तो फिर एक साल ऐसा मुकर्रर कर दें जिसमें कि जो भी सवाय चक जमीन है उसको अलाट कर दें। लेकिन यह सवाय चक के अलाटमेन्ट का मामला दसों सालों से चल रहा है। छः छः साल हो गये, अलाटमेंट का कार्यक्रम चल रहा है।

श्री मूलचन्द डागा : जिस तरह आप चाहते हैं उसी तरह से सरकार चल रही है।

श्री शिवचरण सिंह (महुआ) : आप स्वयं भी तो उसके मेम्बर हैं।

श्रीमती सभानेत्री : माननीय सदस्य, आप अपना भाषण शीघ्र समाप्त कर दें।

श्री जयनारायण सालोदिया : बस दस मिनिट में समाप्त करता हूं।

श्रीमती सभानेत्री : मेरा कहना यह है कि पार्टीज को समय दिया गया है। आपकी पार्टी के कई मेम्बर बोलना चाहते हैं। अगर आप बोलेंगे तो उन्हीं का वक्त काटेंगे।

श्री जयनारायण सालोदिया : दस मिनिट के अन्दर ही समाप्त करता हूं। तो जमीन भूमिहीन किसानों को नहीं मिलती है। वह जमीन भी उन्हीं को मिलती हैं जो तहसीलदार साहब के मर्जीपात्र हैं, विकास अधिकारीजी के मर्जीपात्र हैं, जो पटवारी के मर्जीपात्र हैं तो उन्हीं लोगों को जमीन मिलती है और वह भी किसी के बेटे के नाम से तो किसी के पोते के नाम से, किसी के मामा के नाम से तो किसी के फूफा के नाम से। लेकिन जो सही काश्तकार हैं, भूमिहीन काश्तकार हैं और उनमें भी जो अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन-जाति के लोग हैं, उनके पास कोई जमीन नहीं है, उनको नहीं मिलती है। इसलिए नहीं मिलती हैं क्योंकि उनके पास सिफारिश नहीं है, उनके पास पैसा नहीं है, वह कानून की ज्यादा जानकारी नहीं रखते, इसलिए उनको जमीनें नहीं मिल सकती हैं।

इसके साथ ही आप माननीय सभानेत्रीजी, मैं मंहगाई के सम्बन्ध में भी एक मिनिट में आपको अर्ज कर देना चाहता हूं। यह तो सर्व विदित है कि मंहगाई राजस्थान में ही नहीं हिन्दुस्तान में आसमान को छू रही है। साधारण व्यक्ति, साधारण ग्रामीण जिसके घर में पांच बाल-बच्चे हों वह आज के इस जमाने में जिन्दा रहने के लिए किस प्रकार के कष्टों का सामना कर रहा है यह सर्वविदित है। 125/- रुपया क्विन्टल गेहूं, डेढ रुपया किलो दूध, घी का तो नाम मात्र ही है, घी तो देवताओं को भी नहीं मिल रहा है, साढे पांच, छः रुपये किलो तेल। अब आप ही अन्दाज लगाईये कि एक साधारण स्थिति का आदमी, एक क्लर्क, एक मास्टर, एक पुलिस का सिपाही, एक चपरासी, अपने बाल-बच्चों को कैसे जिन्दा रख सकेगा। कैसे वह उनकी शिक्षा चालू रख सकेगा, कैसे उनके स्वास्थ्य की रक्षा कर सकेगा, कैसे उनको पढ़ा लिखा सकेगा, कैसे उनको कपड़े पहना सकेगा और कैसे मकान बना सकेगा। इस स्थिति में आप कहां देश को लेजा रहे हैं। इसलिए मैं सरकार से पुर जोर शब्दों में प्रार्थना करना चाहता हूं कि इस मंहगाई के सम्बन्ध में आपको सोचना चाहिए। यह मंहगाई शनैः शनैः इस तरह का विकराल रूप धारण करती जा रही है कि एक समय ऐसा हो सकता है कि आपका यह जो कलेवर है, आपका जो यह सरकारी ढांचा है यह शनैः शनैः समाप्त हो जाएगा। अनाज की सबको जरूरत पड़ती है, चाहे वह पुलिस का सिपाही हो, चाहे वह स्कूल का मास्टर हो, चाहे वह पटवारी हो, चाहे कोई बाबू हो, क्लर्क हो, सबको अनाज की, तेल की, मिर्च की, गुड़ की, जिन्दगी को कायम रखने के लिये जरूरत पड़ती है जो कि प्रारम्भिक आवश्यकता है। अगर आप लोकप्रिय सरकार बनाना चाहते है, लोकप्रिय होने का दावा रखते हैं तो आजकी यह जो प्रारम्भिक मांग है, जो जिन्दगी को कायम रखने की आधारभूत शिला है, उस पर आपको विचार करना चाहिए। अगर आप इस पर विचार नहीं करेंगे, उदासीन रहेंगे और

(श्री जयनारायण सालोदिया)
इसके प्रति आंख बन्द रखेंगे तो यह आपके लिए ही खतरनाक है, आपके लिये ही घातक है ।

इसी के साथ-साथ, माननीय सभानेत्रीजी, शिक्षित बेकारों के लिये एक बात अर्ज कर देना चाहता हूं । सरकार के पास, मुझे जानकारी है, मैंने तारांकित प्रश्नों के द्वारा पूछा है, सरकार के पास कोई ऐसे आंकड़े नहीं हैं । राज्य में कितने शिक्षित बेकार हैं और कब से बेकार हैं, किस किस स्टेंडर्ड के बेकार है और उनको कब तक किसी काम को देने की सरकार के पास योजना है ? शनैः शनैः इन बेकारों की लिस्ट म हर साल नये नाम जुड़ते जाते हैं । यह तो एक प्रकार से द्रोपदी का चीर होता जा रहा है, जिसके सम्बन्ध में सरकार को सोचना चाहिये । शिक्षित बेकार तो हैं ही लेकिन इसके साथ ही ट्रेंड बेकारों की भी समस्या है । हमारे यहां कई-कई सालों के एस. टी. सी. पास और बी. एड और एम. एड पास बैठे हैं, इस तरह के ट्रेनिंग शुदा लोग बैठे हैं, इनको काम देने के बारे में आपको सोचना चाहिये । इसके लिये आपके पास प्लान होना चाहिये, स्कीम्स होनी चाहिये, राज्य में किस तरह के शिक्षित कब से बेकार हैं उनको किस किस तरह का काम देने की योजना है, यह आपको मालूम होना चाहिये ।

कुल मिला कर, सभानेत्रीजी, एक बात मैं और निवेदन करना चाहता हूं । हमारे प्रतिपक्ष के नेता के ऊपर हर विधान सभा के सत्र में किसी न किसी सदस्य के द्वारा यह चार्ज लगाया जाता है कि उन्होंने दो आदमियों का खून किया, इसका वे हर बार स्पष्टीकरण कर देते हैं । लेकिन यह एक धृष्टता और बेशर्मी की भी हद होती है कि दो आदमी उन्होंने अपनी उम्र के अन्दर कत्ल किये हों, या गोली चलाई हो और जिसके लिये भी वे मना करते हैं कि उन्होंने ऐसा नहीं किया । वे तो कहते हैं कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो उनको सजा मिलनी चाहिये . . .

श्री गिरधारीलाल व्यास : जरूर मिलेगी ।

श्री जयनारायण सालोदिया : लेकिन जो आज शासन चला रहे हैं उन्होंने तो अपने बीस साल के शासन काल में हजारों आदमियों को गोली से मारा है, हजारों आदमियों पर गोली चलाई है । निरपराध लोगों पर गोली चलाई है, जिनका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है उन पर गोली चलाई है । अभी जयपुर की घटना भूली नहीं है सरकार । अगर कोई शर्मदार आदमी हो, जिसमें जरा भी आदमियत हो, जो बाल बच्चेदार आदमी हो तो जिसतरह का जयपुर में गोलीकाण्ड हुआ उससे सरकार का शर्म से सिर झुक जाना चाहिये लेकिन यहां तो ढीठ लोग बैठे हैं, निकम्मे ऐसे लोग बैठे हैं कि कोई असर ही नहीं होता है । यह तो इस तरह की बात हो गई कि एक छिनाल औरत एक पतिव्रता औरत पर लांछन लगाए । खुद छिनाल है और एक पतिव्रता औरत पर आक्षेप करती है । इस तरह की निकम्मेपन और बेशर्मी की हद होती है ।

श्री गीरधारीलाल व्यास यह स्त्री जाति पर लांछन लगा रहे हैं ।

(व्यवधान)

श्री जयनारायण सालोदिया : मैं तो यही कह कर आपसे अर्ज करना चाहता हूं कि यहां

(श्री जयनारायण व्यास)

किसको कहें ? ये सब लोग अन्धे हैं, सब लोग बहरे हैं, सब मूक बने बैठे हैं, अपने स्वार्थों से ओत प्रोत हैं, सब लोग अपने अपने स्वार्थों की सोचते हैं, पब्लिक जाए भाड़ में उनकी बला से, पब्लिक भूखों मरे, पब्लिक बिना रोटी और पानी के रहे, रात दिन रोती रहे, परेशान हो, इनकी बला से, इनकी तो कुर्सी बरकरार रहे । ऐसे लोगों के सामने अपनी बात रखना अपना समय खराब करना है, कौन इनके सामने अपना माथा खराब करे और ऐसे लोगों से कुछ कहे । इसके लिए तो मैं एक ही शेर अर्ज करता हूं कि :—

"एक ही उल्लू काफी था
बर्बादे गुलिस्तां करने को,
हर शाख पर उल्लू बैठा है,
अंजामे गुलिस्तां क्या होगा ।"

एक माननीय सदस्य : सभानेत्री महोदया, मैं कुछ बोलना चाहता हूं ।

श्रीमती सभानेत्री : गोकुलप्रसादजी बोलेंगे । आपकी पार्टी के कई लोग बोल चुके हैं ।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा (बीकानेर) : राज्यपाल महोदय ने कृपा पूर्वक जो सदन में अभिभाषण दिया है उसके लिए खेतसिंहजी ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं ।

राजस्थान में हजारों वर्षों से जब राजा राज्य करते थे और रियासतें थीं तब से अकाल पड़ता आ रहा है, लेकिन इन गत 4-5 सालों से जो लगातार अकाल पड़ रहा है उसका जिस प्रकार से मुकाबला किया गया है उसको भुलाया नहीं जा सकता यहां के लोग, मारवाड़ के लोग अकाल पड़ने पर मालवा में जाते थे उन इलाके के लोगों को याद दिलाता हूं कि अकाल से ग्रसित रहा करते थे और सदन में अकाल की सहायता के कार्यक्रम की आलोचना उन लोगों के द्वारा की जाती है जिन्होंने कभी अकाल की शक्ल नहीं देखी है । लेकिन उन लोगों के दिल जानते हैं जो कि हजारों वर्षों से तकलीफ उठाते आये हैं कि अकाल राहत का कार्य किस प्रकार हुआ है । उसकी सराहना वे सदन में नहीं करना चाहते हों लेकिन अपने मन में अच्छी तरह से समझते हैं कि सरकार ने बड़ा अच्छा काम किया है, लेकिन विरोध करने का कायदा है इसलिए विरोध करते हैं । (श्री मदनसिंह के खड़े होने पर) आपका तो नाम ही मदन है और मदन आनन्द को कहते हैं ।

एक माननीय सदस्य : अभी नम्बर नहीं आया है ।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : जिसके कान पके हुए नहीं हों वे कुम्हार के यहां जाकर पकवा लें ।

एक माननीय सदस्य : लालकोठी की ज्वार बाहर भेज दी गई है ।

श्रीमती सभानेत्री : मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगी कि आप लोगों को बीच में टोका न करें, बोलने दें ।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : अभी एक भाई बोल रहे थे श्री जयनारायणजी । वे कह रहे थे कि मूक बैठे हैं । चुप बैठते हो तो मूक और सामने बोलते हैं तो कहते हैं कि हल्ला करते हैं । आपको सुनने की आदत डालनी चाहिए । जब आप बोल रहे थे तो हम सुन रहे थे । जब हम बोलते हैं तो आप सुनें ।

एक माननीय सदस्य (विपक्ष) : आप अच्छी बात कहेंगे तो सुनेंगे और गलत बात कहेंगे तो नहीं सुनेंगे।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : नहीं सुनेंगे तो घर जाना पड़ेगा। आपको सुनना पड़ेगा। मैं आपके कहने से खड़ा नहीं हुआ हूं। आपके हुक्म की जरूरत नहीं है।

श्री मदनसिंह : आपका कहना है कि भूखे हैं तो रोटी धरी या नहीं?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैं आपसे अर्ज करता हूं कि मैं आपकी बड़ी कद्र करता हूं। आप मुझसे ऐसा खाता न खोलें। अपना ऐसा रिश्ता अच्छा नहीं है। अपन बहुत अर्से से मिलते रहे हैं, और मैं बहुत अर्से से आपसे मिलता रहा हूं और आपकी कई अच्छी बातों के लिए आपकी कद्र करता हूं।

मैं अर्ज कर रहा था कि जो लोग हजारों लोग मारवाड़ से जाते थे, बीकानेर से जाते थे, जैसलमेर से जाते थे, बाड़मेर से जाते थे उनको पता है कि उनको अकाल के समय में अपनी जमीन, अपने बच्चे बेचने पड़ते थे। उनकी इतनी हालत खराब रहती थी कि वे बैल बेच देते थे, भेड़ बेच देते थे, बकरी बेच देते थे और उनके सारे जानवर बिक जाते थे और तब वे अकाल के बाद घर आते थे। उनकी माली हालत आज सुधरी है। आज उनको न बैल बेचने की जरूरत पड़ती है और हर आदमी जोकि मजदूरी कर सकता है उसको मजदूरी मिलती है। आज राहत कार्यों में लाखों आदमी लगे हुए हैं....

(सरकारी पक्ष से करतलध्वनि)

राजस्थान सरकार को इसके लिए एक योजना बनानी चाहिए कि ये अकाल क्यों पड़ते हैं। इस विपत्ति को समाप्त करने के लिए हमें इसका मुकाबला करना पड़ेगा। इसका सीधा रास्ता यह है कि हमको ट्यूब वैल खुदवाना चाहिए राहत कार्यों में। उससे लोगों को पीने का पानी मिलेगा और खेती करने के लिए जमीन सिंचित होगी। उन लोगों को इससे बड़ी खुशी होगी जिन्होंने पानी देखा नहीं है। वहां अगर पानी आयेगा तो मैं समझता हूं कि ये चिल्लाते रहेंगे। आप काम करते जाइये और इनकी चिल्लाहट की परवाह नहीं करें।

दूसरे, इस अकाल में यह बात हुई है कि लोग कर्जदार नहीं हुए। जिसमें मजदूरी करने की हिम्मत नहीं है वही कर्जदार हुआ है। जो बैठकर खाने वाले हैं उन्होंने ही जमीन बेची है, बैल बेचे। जो हैं बूढ़े और अपाहिज थे उनको भी सरकार ने पैसा दिया है। आज एक भी आदमी गाड़ी लेकर नहीं निकला है मालवे की तरफ। सब ने काम किया है। सबको काम मिला है।

दूसरे राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में कृपा पूर्वक यह कहा है कि छोटी छोटी जो भूमि है जिस पर फायदेमन्द खेती नहीं होती उस पर लगान माफ किया है। उसकी तशरीह और तादाद बाद में आयेगी। आपने 5 से 10 बीघा जमीन पर लगान छोड़ दिया और यह कहकर छोड़ दिया है कि वह फायदेमन्द नहीं है चाहे उस 10 बीघे का लगान 90 रुपया हो और दूसरी तरफ रेगिस्तानी इलाके में जहां एक अपने बीघे का लगान है भूमि का तो वहां जिसके पास 200 बीघा जमीन है तो उसको आप

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)
बड़ा जमींदार कहेंगे चाहे उसमें 2 मन बाजरा ही पैदा न हो, 5 मन मोठ पैदा न हो। उसको जमीन के नाम पर छोड़ना चाहेंगे तो बड़ा भारी अन्याय होगा उस इलाके के साथ में आप विचार कीजिये और तय कीजिये कि इतनी भूमि पर इतना लगान होगा तो छोड़ा जायगा। इस तरह से थोड़ी सी ज्यादा भूमि पर लगान छोड़ेंगे और रेगिस्तान के लोगों को लाभ पहुंचा देंगे तो वे समझेंगे कि उनको राहत दी। वर्ना यह फायदा ऐसे लोगों को होगा जहां कि कभी अकाल नहीं पड़ता है और चाहे थोड़ी जमीन ही उनके पास हो तो भी काफी अनाज वहां पैदा होता है उनको लाभ पहुंचेगा।

इसके बाद अकाल की बात करने के बाद बहुत से भाई रोडवेज की बात कर रहे थे। मैं रोडवेज और बस सर्विस का हमेशा से हिमायती रहा हूं। राजस्थान सरकार इस कार्य को अपने हाथों में ले। करोड़ों रुपया वह सड़कों पर खर्च करती है तो उसका फायदा प्राइवेट मोटर आपरेटर क्यों उठाये? जब से रोड़वेज बनी है तब से ये बस सर्विस वालों के दलाल या जिनके रिश्तेदारों की बसें चल रही हैं वे कहते हैं कि प्राइवेट ...में बहुत अच्छे हैं और रोडवेज खराब हैं। मुझे याद है कि अजमेर से यहां आते थे तो शाम तक काम करने की हालत नहीं रहती थी। बकरों की तरह से उसमें वे भरते थे। आज अजमेर से यहां आकर सीधे काम पर चले जाते हैं और कोई ओवरलोड नहीं होता है।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार (हवा महल, जयपुर): बीच में ही पड़े रहते हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा: आपका भी वही कहना है कि सरकार रोडवेज नहीं चलाये। स्वतन्त्र पार्टी का भी यह ध्येय है।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार: आपके जमाने में रोडवेज की यह हालत है कि वे बीच में ही पड़ी रहती हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा: अब मेरा अर्ज करना यह है कि सरकार इनकी धमकियों में न आये, इनकी बातों में न आये, और जल्दी से जल्दी उन सड़कों पर भी जिन पर करोड़ों रुपया लगाया है और कर्जा लेकर लगाया है और उसका आप ब्याज चुकाते हैं और उसका फायदा सरकार को न मिलकर प्राइवेट आपरेटर्स को मिलता है। पब्लिक का पैसा है, पब्लिक पैसा देती है उसका फायदा दूसरे लोग क्यों लें?

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़): बसें किस की चल रही हैं?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा: मेरी कोई बस नहीं चल रही है और न मेरे किसी रिश्तेदार की चल रही है और न इस जिन्दगी में चलेगी।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार: मंत्रियों के रिश्तेदारों की हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा: टैक्स हम देते हैं। कर्जा लेकर बनाते हैं सड़कें। उसका ब्याज हम टैक्स से चुकाते हैं उसका फायदा इनको क्यों मिले?

एक माननीय सदस्य: परमिट कांग्रेसियों को दिये जाते हैं।

श्री दौलतराम सारण: वे नहीं कर रहे हैं। बस आपरेटर्स कर रहे हैं। दूसरों के नाम से परमिट लेकर खुद बस चलाते हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : यह इनका दोष नहीं है। आपकी ईमानदारी में शंका नहीं करूंगा आप उनके चरणारविन्द में ही बैठे रहें कुछ दिन।

इतना ही नहीं पैसेन्जर टैक्स के रुपयों की चोरी प्राइवेट बस आपरेटर्स ही करते हैं। उन पर सख्ती की जाय। पैसेन्जर टैक्स रोडवेज चलती है तो आपको पूरा मिलता है। यह आप लोगों को पता चलना चाहिए कि कितनी बसें चलती हैं उस हिसाब से पैसेन्जर टैक्स मिलता है। आप इसलिए जल्दी से जल्दी सारी रूट्स पर बसों का राष्ट्रीयकरण कर दें।

यह कहा जाता है कि इतनी बसें बेकार पड़ी हैं। जहां 700–800 बसें चलती हैं वहां 100–50 बसें पड़ी न रहे तो क्या सभी सड़कों पर चलेंगी। अगर पड़ी न रखें तो क्या आपके घर भेज दें ?

श्री मदनसिंह : मैं समझता हूं कि आप मिनिस्टर हो जांय तो मुझे उसका विरोध नहीं होगा।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैंने अर्ज किया कि आप बोलें नहीं। मैं आपकी इज्जत करता हूं और मेरा और आपका दूसरा रिश्ता है। अगर आपको कुछ कहना है तो दूसरों से कहला दें मैं उनको उचित उत्तर दूंगा।

श्री मदनसिंह : आप जैसे मिनिस्टर हो जायें तो चिन्ता नहीं, मगर आप नहीं होते हैं और निकम्मे हो जाते हैं।

(3 म. प.)

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैंने आपसे एक अर्ज की कि आप यह चिन्ता मत करो। यह मेरी पार्टी है इसमें एक भी मिनिस्टर है तो सब मिनिस्टर हैं। आपको इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

श्री मदनसिंह : मुझे पता नहीं था कि आप भी ऐसे हैं। आप इनमें शामिल हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से अर्ज कर दूं कि आपका और मेरा यह रिश्ता नहीं है। आप यह रिश्ता मत डालो। आप जो कह रहे हैं वह कोई दूसरा कहता तो मैं उसका उचित जवाब देता और दे सकता हूं। आपको वह जवाब मैं नहीं देना चाहता हूं।

श्री खेतसिंह (शेरगढ) : नहीं तो गुरू श्राप दे देगा।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : श्राप-बाप की बात नहीं है। पार्टी के अलावा हमारा और आपका रिश्ता कुछ अधिक है इसलिए मैं आपसे वह बातें नहीं कहूंगा।

अब मैं कहना चाहता हूं, सभापति महोदय, चुनाव के बारे में राज्यपाल महोदय ने कहा कि राजस्थान में बड़ी शांति-पूर्वक चुनाव हुए। विरोधी पक्ष के जो माननीय सदस्य बोले उन्होंने कहा कि चुनावों में बड़ा अन्याय हुआ। मैं मानता हूं कि चुनाव बड़ी शांति के साथ हुए क्योंकि कांग्रेस के जो नेता हैं और जो लोग हैं वे तो बड़े शांतिप्रिय हैं। विशाल जल राशि, अथाह जल राशि लिए हुए समुद्र की तरह उनमें बड़ी शांति है, उनमें बड़ा धैर्य है और इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद दूंगा। अब कांग्रेस के लोगों ने कितना धैर्य रखा और विरोधी पक्ष के लोगों ने कितनी उच्छृंखलता दिखाई— इसके थोड़े से उदाहरण मैं आपको बता देना

Page No. 74

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)

चाहता हूं। जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आया तो चुनाव के पहले एक बात देखने में आई कि कांग्रेस गायें कटवाती है, यह विरोधी लोगों ने जनता को बताया। अरे भाई, राजस्थान में तो सरकार का गाय कटाने या न कटाने से कोई लेना देना नहीं है। गाय कटाने की तो क्या बात, यहां से तो पशुधन को बाहर भेजना तक बन्द कर दिया गया है। लेकिन नहीं साहब, यदि पन्द्रह तारीख को चुनाव होने वाले थे तो उससे पहले तेरह तारीख तक, और चुनाव यदि अठारह तारीख को होने वाले थे तो उससे पहले 16 तारीख तक, और यदि चुनाव 22 तारीख को होने वाले थे तो उससे पहले 20 तारीख तक विरोधी पक्ष के लोगों ने यह नारा लगा कर जनता को गुमराह करना चाहा, यह नारा लगा कर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश की—यदि कांग्रेस को वोट दोगे तो गाय खाओगे। मेरी कान्स्टीट्यूएन्सी के लोगों से भी यह कहा। पांच सात जीपों में भर मेरी कान्स्टीट्यूएन्सी में लोग गये थे और वहां पर भी उन्होंने इस तरह के बड़े नारे लगाये। मैंने लोगों से कहा कि यदि हमने गाय कटवाई है तो हमको कभी वोट मत देना और यदि यह लोग झूठे हैं तो इनकी बात कभी मत मानना। उन लोगों ने मेरी बात को समझा और मुझे वोट दिये। इस तरह के झूठे नारे लगा कर जनता को आकर्षित करने की विरोधी दल के लोगों ने कोशिश की, धर्म के नारे लगाये, गाय कटवाने के नारे लगाये, लोगों में लड़ाइयां कराने की कोशिश की। क्यों न करते यह कोशिश, इनके पास तो पैसे की जैसे बाढ़ आ गई थी···

श्री जयकृष्ण (थाना गाजी) : कहां से आई थी बाढ़?

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : बिड़ला के यहां से पैसा आ रहा था, तापड़िया इनके साथ थे, उधर सोमानी को देखो तो सोमानी दे रहा है पैसा धनाधन। करोड़ों रुपये इनके पास आ गये और यह पैरों जा पड़े करोड़पतियों और राजाओं के और उनसे कहा—हमें किसी भी तरह बचाओ। यही नहीं इन्होंने जनता से कहा कि कांग्रेस तो गाय कटवाती है। मैं कहता हूं कि कांग्रेस गाय नहीं कटवाती, इन विरोधी पार्टियों के अन्दर जितने यह लोग हैं यह समझते हैं कि कांग्रेस हमें कटवाती है। यह लोग ही गाय बन गये करोड़पतियों और राजाओं के सामने। करोड़पतियों से इन्हें लाखों रुपया मिला लेकिन उन लाखों रुपयों का हिसाब नहीं। अगर कोई कहता है कि लाखों रुपया तुम्हारे पास था उसका हिसाब कहां है तो कहते हैं हम लाखों रुपयों का हिसाब नहीं रखते हैं, हिसाब तो बनिये रखा करते हैं। यह लोग उन रुपयों का हिसाब बताते नहीं, हिसाब का कुछ पता नहीं और कहते हैं कि हिसाब से हमारा लेना-देना नहीं है···

श्री श्रवणलाल (हिण्डौन) : इस समय सोच रहे थे कि मैं कहां फंस गया।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : क्यों कुर्सी बदलवा दूं क्या? क्या इस कुर्सी में खटमल हैं जिससे बार-बार उछलते हो। कहो तो कुर्सी बदलवा दूं।

श्री विजयसिंह (नसीराबाद) : कांग्रेस के लिए तो हम खटमल हैं।

श्री श्रवणलाल : कुर्सी बदलने की आदत तो आप लोगों की है। आप कुर्सी बदल लो,

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)
आपकी कुर्सी में खटमल पड़ गये हैं क्योंकि बहुत पुरानी हो गई है।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : अरे भाई, तुझे लाखों रुपये कौन देता है। तुझे तो कोई लाख रुपये कागज पर लिख कर भी नहीं दिखायेगा।

श्री विजय सिंह : तुम्हारे मंत्री महोदय तो मेरे पास आये थे दो लाख रुपये देने के लिए।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : अच्छी बात है। आपकी अक्ल की मैं दाद देता हूं। आपको इसके मुकाबले की ही बात मैं बताता हूं....

एक माननीय सदस्य : खरीददार तो बिकने वाले के पास ही पहुंचता है।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : उनके पास बीस-बीस लाख रुपये कहां से आ गये जिन्होंने एक लाख भी नहीं देखा था।

श्री विजय सिंह : आपको शक है तो सोमवार को मैं डिटेल में बताऊंगा।

श्रीगोकुल प्रसाद शर्मा : अरे अब यहां आ गये हो तो पांच साल तक तो बताओगे ही।

श्री रघुनाथ विश्नोई (सांचोर) : कुछ नहीं बता पायेंगे यह संतोष इन्हें रहेगा।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : मैं यह कहना चाहता हूं कि बिड़ला ने लाखों रुपये दिये यह बात कैसे आई। तापड़िया ने लाखों रुपये दिये, सोमानी ने लाखों रुपये लाकर पटक दिये, पाटोदिया इधर उधर रुपये चमका रहे थे। यह दो लाख रुपये की बात करते हैं। किसी से तापड़िया ने कहा कि वह मेरे पास आकर मुझ से मिलेगा। तो उस व्यक्ति ने कहा कि उसके पास मत जाना। वह ऐसी बात सुन कर तमाचा मार देगा ...

श्री गोवर्धन (मेहता) : आप जैसे आदमियों की मार खाने के लिए वह आपके पास आता।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मुझसे लोगों ने कहा कि तापड़िया मिलना चाहता है तो मैंने कहा कि उससे मना कर देना। अब उसने मेरे पास आने की हिम्मत की तो ऐसा मारूंगा कि समझ में आ जायगी।

श्री विजयसिंह : तापड़िया की तो खैर प्राईवेट फर्म है लेकिन जो लोग सरकार में हैं वह मेरे पास दो लाख देने आये, उन्हें शर्म आनी चाहिए।

एक माननीय सदस्य : इसका मतलब यह हुआ कि आप लोग गुण्डागर्दी करना चाहते थे।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : अगर आप इस तरह से बीच में टोकेंगे तो आप याद रखिये कि जब आप बोलेंगे तो आपको भी नहीं बोलने दिया जायगा।

इसके बाद में जब इन सेठों के पैसे से भी इनका काम नहीं चला, जो इन्होंने सेठों से बीस-बीस लाख रुपये लिये उससे भी काम नहीं चला तो फिर इन्होंने गठबन्धन किया। अब गठबन्धन भी किनका होता है। गठबन्धन होता है जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी का। जबकि जनसंघ कहता है कि गाय को बचाओ और राजगोपालाचारी कहते हैं कि गाय को खाओ। गाय को बचाना कोई जरूरी नहीं है। खैर दोनों के अन्दर किसी तरह से समझौता होता है। उसके बाद में कम्युनिस्टों के साथ सम-

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)
झौता होता है। उनका गाय से लेना देना भी क्या है। उनकी बला से तो गाय को काटो, गाय को बचाओ या गाय को खाओ, उनकी राय में सब कुछ हो सकता है। बस वह कांग्रेस के खिलाफ है। तो इस तरह गाय बचाओ, गाय कटाओ और गाय खाओ सब कांग्रेस के खिलाफ हैं और उस कांग्रेस में कैसे कैसे आदमी हैं–इसकी उन्हें परवाह नहीं है। अब साहब, चुनाव 24 तारीख को खत्म हुए और उसके बाद में चुनाव का रिजल्ट निकला तो कांग्रेस के 88 सदस्य थे। इसके अलावा कांग्रेस के कई आदमियों को टिकट नहीं मिला था वह भी कांग्रेस के विरोध में खड़े होकर जीत गये थे। इस तरह कांग्रेस में हम 93 सदस्य बताते थे। अब सदस्यों को उठाने में पहल किसने की, कौन सबसे पहले भाटी को उड़ा कर ले गया।

श्री केसरीसिंह : (हिन्डोली) समर्थलाल को कौन ले गया था ?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : यह हमें पता नहीं।

श्री केसरीसिंह : समर्थलाल को कौन ले गया था, यह कबूल नहीं करेंगे, यह तो मालूम नहीं है।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : और साहब उनको कानोता के गढ़ में ले जाकर बन्द कर दिया।

श्री केसरीसिंह : गढ़ भी उनका ही था। कोई नहीं उड़ा कर ले गया।

श्री बागसिंह (जैसलमेर) : श्रीमान्, शिड्यूल्ड कास्ट्स पर ही धावा क्यों कर रहे है और लोग भी तो थे।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : जो लोग कानोता के गढ़ में बन्द थे। वह हम लोगों से मिले हैं और हम लोगों से कहा कि हम लोगों को इनके साथ रहने में बड़ी शर्म आयेगी। कल तक तो यह लोग हमारे जूते लगाते थे।

विरोधी पक्ष के कई सदस्य : झूंठ है।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : उन्होंने हमें कहा कि आप लोग हमारी कद्र करने वाले हैं इसलिए हम विरोधी दल छोड़ कर आने वाले हैं। वह लोग आयेंगे, फिर आयेंगे उनको कोई रोक नहीं सकता····

श्री दुर्गालाल बाड़दार : यह परिपाटी तो 1952 से आप चलाते आये हैं श्रीमान्। इसका श्री गणेश आप लोगों ने किया है। अब क्यों आप पोल खुलवाते हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : तुम्हारी तो बाड़ को दार पर डाल कर महाराजा ने पहले ही कह दिया कि बाड़ को दार पर डालो। वह मिलावट अभी तक जारी है। और तुम्हें पता नहीं कि बाड़ है या दार है।

तो इस तरह कानोता के गढ़ में लोगों को बन्द कर दिया गया। लेकिन जिनको वह ले गये थे वह यदुवंशी हैं और वह इतने शानदार आदमी हैं कि एक बार बाहर जाकर भी वह वह अपने धर्म को नहीं छोड़ सकते। वह यदुवंशी हैं, यदुवंश परम्परा के हैं। उनको जब भगवान कृष्ण की याद आयेगी तो सीधे वहां से चलकर इधर आकर बैठने वाले हैं····

श्री केसरीसिंह : यह तो वक्त बतलायेगा।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : वह यदुवंश में पैदा हुए हैं। वह कहीं बैठे, उनको अपने

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)
धर्म की याद आयेगी, भगवान कृष्ण की याद आयेगी और कहेंगे चलो वापिस कांग्रेस में चलो। आपको क्या पता है।

तो साहब इस तरह से बिड़ला, तापड़िया, सोमानी और पाटोदिया–इन लोगों से लाखों रुपये मिले और लाखों रुपये लेकर चुनाव के पहले तक इस तरह गाय को बचाओ, धर्म को बचाओ झूठे नारे लगाये और फिर दोष कांग्रेस पर लगाते हैं कि कांग्रेस ने पैसा लिया। अरे इन लोगों ने तो ठेकेदारों तक से पैसे ले लिए, ठेकेदारों से पैसे इसलिए लिए कि हमारा राज्य बनने वाला है। अपने आप कोई होम मिनिस्टर बन गया, कोई फाइनेन्स मिनिस्टर बन गया, सब मिनिस्टर बन गये। फिर कल कह रहे थे कि 14 तारीख को हमारा बहुमत था, हम मेजोरिटी में थे। अरे भाई, डूंगरपुर रियासत भी आपकी थी। अब है क्या? आपकी तो रियासत भी थी और मेजोरिटी भी थी···

श्री दुर्गालाल बाड़दार : आपने फोटोग्राफ नहीं देखा था क्या?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मेजोरिटी तो हमारी थी और इसलिए ही हम राज्य कर रहे हैं। आज भी मेजोरिटी हमारी है। तो इस प्रकार सेठों से लाखों रुपये ले लिए और चुनाव के लिए जो जीपें आई हैं, बिड़ला, तापड़िया, सोमानी के रुपयों की, वह सब हमसे छुपा नहीं है। लेकिन आज उन सब पैसों का कोई हिसाब नहीं है। उनको भी दगा दे दिया।

अब इसके बाद देखिए, गवर्नर महोदय के सामने 109 आदमियों की लिस्ट पेश कर दी और कह दिया कि हम कांग्रेस के लोगों को खरीद कर ला रहे हैं। अरे भाई, कांग्रेसी भी कभी खरीदे जा सकते हैं····

श्री गोवर्धन : यह भी तो बताओ कि जीप किसके नाम से आई और किसने भेजी?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : उस लिस्ट में 21 आदमियों के नाम ज्यादा दे दिये लेकिन उनमें से एक ने भी विरोधी दल में होने की बात नहीं मानी। इससे ज्यादा बेइज्जती क्या हो सकती है। जो 21 आदमियों के नाम ज्यादा थे उनको एक एक को बुला कर गवर्नर महोदय ने पूछा तो उन्होंने कहा कि हम विरोधी दल के साथ नहीं है। नाथूलाल की बात जनसंघ के नेता कर रहे हैं, मैं उनकी इज्जत करता हूं।

उन्होंने कहा कि कौन ऐसा आदमी है जो मेरा नाम देता है। मेरा नाम लेने वाला कौन है। मुझे राज्यपाल महोदय ने बुलाया है। मेरी कोन्सटीटुएन्सी से चुन कर आया हूं। मैं कांग्रेस के साथ हूं। आपने उनके नाम दे दिये। एक तो महारावल शक्तिसिंह हो गये और कोई शक्तिसिंह होने वाला नहीं।

आपने सेठों से पैसे लिये और यह कह कर कि लोगों को खरीदा जायगा मगर आप किसी को खरीद नहीं सके। आपने उन लोगों को भी दगा दिया और उनके रुपये भी खा गये और गवर्नर महोदय के पास आपने झूठी लिस्ट 109 की जबरदस्ती के बने हुए नेता ने महारावल के हाथों से दस्तखत करवा लिये और गवर्नर को दे दी। फिर आप यहां ऐसी बातें कहते हैं आपको शर्म आनी चाहिये।

(श्रीगोकुल प्रसाद शर्मा)

अब क्या हुआ यह भी मैं आपको बताना चाहता हूं। महारानी गायत्री देवी के नाम पर प्रचार हुआ। गायत्री देवी, जयपुर महाराजा के साथ आई है इसलिए वह देवी है बाकी तो कौन जाने।

दामोदरलाल जी तो उनको ऐसे लगते हैं जैसे सीमा प्रान्त के लोगों को हरिसिंह नलवा लगता था। जिस समय पेशावर वालों के बच्चे बदमाशी करते या रोते तो वे लोग उनको यह कहकर डराते थे कि हरिसिंह नलवा आ गया। आज उसी प्रकार से दामोदरजी उनको लगते हैं। दामोदरजी ने उनको हरा दिया। क्या हुआ, मैं यह कहना चाहता हूं कि क्या जयपुर में दामोदर जी खड़े नहीं हो सकते। दामोदरजी, को खड़े होने का अधिकार नहीं है। अकारण ही ऐसी बातें पैदा की जाती है। मैं यह कहूंगा कि एक महिला के मुंह लगे लोगों ने उनको यह कह कर कि बहुमत हमारा है, जबरदस्ती के बने हुए नेताओं ने उनको भुलावे में डाल दिया।

अभी जयपुर में गोलीकाण्ड हुआ। उन्होंने जनता को उकसाया और महारानी साहिबा के फरमान के नाम पर जब गोली चली उसके बाद में यह कहा जाता है कि कोई खादी धारी निकल नहीं सकता था। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मुझे कोई रोक सकता है? किसी के बाप का राज्य नहीं है।

एक माननीय सदस्य : आप सफेद टोपी नहीं लगाते।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : मैं सफेद टोपी नहीं लगाता, शुरू से नहीं लगाता हूं। मगर आप कहें तो मैं आपके यहां चलूं, आप क्या करेंगे, है किसी की कोई ऐसी हिम्मत? मैं कभी सफेद टोपी नहीं लगाता। आपके जयपुर के लोग ही अच्छे है और बाकी के सब जगह के लोग खराब है। आप इस प्रकार की बातें नही कर सकते। हम राजस्थान के रहने वाले हैं और इसको सहन नही कर सकते। आप इस प्रकार की बातें करते हैं जैसे कोई आपके बाप का ही राज्य हो। नाई की दुकानों पर हजामत कराने वालों के कान काट लें, ऐसी बातें करते हैं जो राजस्थान और आपकी शान के खिलाफ है।

श्री मदन सिंह : यह नही कहा कि नाक काट लेंगे।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : अगर यह कहा जाय कि जयपुर के सिवाय दूसरे लोग अच्छे नही है तो यह कोई अच्छी बात नहीं है और मैं समझता हूं कि इसके बड़े बुरे परिणाम होंगे जयपुर...

श्री भैरोंसिंह : सभापति महोदया, इस प्रकार का प्रचार राजस्थान में कहीं हुआ या नही लेकिन मैं नम्र निवेदन करूंगा कि आपस में पार्टी को एब्यूज करने के इतने निम्न स्तर पर न जावें।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : मैं एक निवेदन करना चाहता हूं....

श्री भैरोंसिंह : मैं आपसे आशा रखता हूं। मेरे खयाल से जयपुर में किसी भी व्यक्ति ने इस प्रकार की भाषा का प्रयोग नही किया फिर भी किया हो तो एक आदमी एक दुकान, एक मकान की बात बता तो दे कि जिस मकान में उनकी हजामत बनाते समय किसी नाई ने उस्तरा उल्टा सुल्टा किया हो। आपने ऐसा सुना क्या?

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : मैं बताऊंगा। (बहुत से माननीय सदस्य बोलने के लिए खड़े हुए)

श्री भैरोंसिंह : आप बतायें। मैं यह कहूंगा कि मुझे भी किन्हीं लोगों ने आपके भाषण से पहले ऐसा कहा कि उदयपुर में इस प्रकार का प्रचार चला है। किसी ने वहां जाकर इसका प्रचार किया है। जयपुर से जाकर किया है। मैंने तीन चार लोगों को चिट्ठियें लिखी कि आपके उदयपुर में इस प्रकार का प्रचार हुआ है। उन्होंने मुझे वापिस पत्र लिखे, वे मेरे पास हैं और आप चाहें तो दोनों की चिट्ठियें दिखा सकता हूं। उन्होंने लिखा कि हमारे नाम का झूंठा उपयोग किया गया है। आपका भी इन्ट्रेस्ट हैं और अगर आपके भाषण के द्वारा इस प्रकार की हवा बनती है तो...

एक माननीय सदस्य (कांग्रेस) : मैं आपको बताना चाहता हूं कि अभी 10 मिनट पहले बाहर डराया और धमकाया गया था कि बाहर निकलिये, हम यह कर देंगे और वह कर देंगे। वे आपके जनसंघ के सदस्य हैं।

इस प्रकार की बातें को यह मैं आपको बताता हूं।

श्री खेतसिंह : इसका मतलब हम जो कुछ चाहें कर लेंगे।

श्री भैरोंसिंह : आप एक दो व्यक्तियों के नाम बतावें।

एक माननीय सदस्य : आप लोगों के कार्यकर्ता थे उनको शकल से जानता हूं।

श्री भैरोंसिंह : आप हर आदमी को जनसंघ का व्यक्ति मान कर चलते हैं।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : On a point of Order Sir.

(बहुत से माननीय सदस्य बोलने के लिये खड़े हुए)

श्रीमती सभानेत्री : पाइन्ट आफ आर्डर रखा गया है।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : सभापति महोदया, मेरा पोइन्ट ओफ ओर्डर यह है कि यह सदन राजस्थान के सारे लोगों का प्रतिनिधित्व करता है और राजस्थान के हित और अहित के विषयों पर चर्चा होनी चाहिए। हमारी ओर से या उनकी ओर से किसी प्रकार की क्षेत्रीय और प्रान्तीय भावना की चर्चा नहीं होनी चाहिए। यह सदन की मर्यादा के प्रतिकूल है। इसलिए मैं यह निवेदन करूंगा कि यह क्षेत्रीय भावना कि जयपुर में ऐसा हो रहा है या उदयपुर में यह हो रहा है। इस प्रकार की जो भी चर्चा हुई है उसको एक्पंज रिकर्ड पर नहीं रखा कर दिया जावे और जावे। अगर रेकार्ड पर आती है तो ठीक नहीं।

श्रीमती सभानेत्री : मैं आपका पोइन्ट आफ आर्डर सुन चुकी हूं। यह पोइन्ट आफ आर्डर में नहीं आता है। इसलिए एक्सपंज नहीं किया जा सकता।

लेकिन मैं आपकी इस भावना की तारीफ करती हूं। मैं देखती हूं कि जिस तरह से दोनों तरफ से बोलने का स्तर गिरता जा रहा है वह ठीक नहीं है। जिस प्रकार से दोनों तरफ से बोलने का स्तर का उपयोग किया जा रहा है वह उचित नहीं है और यह बड़े शर्म की चीज है।

श्री खेतसिंह : विपक्ष ने हमको उल्लू बनाया और हमारी मजाक की.....

(शोरगुल के कारण सुनाई नहीं दिया)

श्रीमती सभानेत्री : Order Please ! Order Please.

माननीय सदस्य ।

श्री पी. के. चौधरी बोलेंगे ।

एक माननीय सदस्य (विरोधी पक्ष से) : (अश्रव्य) ।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैंने अपना भाषण अभी समाप्त नहीं किया है। मुझे बोलना है ।

श्रीमती सभानेत्री : आपने अपना भाषण समाप्त कर दिया होगा ।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैंने अपना भाषण अभी समाप्त नहीं किया है । मुझे दो मिनट बोलने की आज्ञा दी जावे ।

श्रीमती सभानेत्री : आप अपना भाषण जल्दी समाप्त करें और ऊंचे शब्दों का प्रयोग करें ।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : कल विरोधी पक्ष के नेता महोदय ने कहा "बकवास करते हैं" तो आसन कुछ नहीं बोला, जब उन्होंने कहा कि "भाड़ झोंकते हैं" "झक मारते हैं" तो आसन ने कुछ नहीं कहा । आज जयनारायणजी सांखोदिया कह गये कि "उल्लू हैं" तो आसन कुछ नहीं बोला था और आज जब मैंने सच्ची सच्ची बातें कहीं तो मुझे आसन ने कहा कि नीचे मत उतरो । अब विरोधी दल की ओर से कहा गया कि मोहनलाल सुखाड़िया चौपड़ पर आकर बोलेंगे तो ऐसी तैसी कर देंगे..

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : माननीय सदस्य पर्सनल चार्ज लगा रहे हैं.....

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : विरोधी पक्ष के नेता बोले कि कांग्रेस के नेता की हिम्मत नहीं कि चौपड़ पर निकलें, बाजार में निकलें तब आसन कुछ नहीं बोला । मैं कहता हूं कि रास्ता किसी का नहीं है, क्या हम किसी के कर्जदार हैं जो निकल नहीं सकते । आप जयपुर में 5 आदमी इकट्ठा कर सकते हैं, इसलिए ऐसा कहते हैं, हम भी इकट्ठा कर सकते हैं, ऐसी फिजां मत फैलाओ । आसन ने मुझे आज्ञा दी कि नीचे मत उतरो, मैं कहता हूं कि वे स्तर से नीचे उतरते हैं । महारावल साहब कह गये "यही शोभा देता है, चुल्लू भर पानी में डूब मरो, झक मारो ।" डूंगरपुर महारावल साहब डूंगरपुर में निकल कर देख लें, पंचायत समिति में हारे 270 वोटों से अपनी राजधानी से जान बचा कर निकले, जहां राज्य किया । पंचायत समिति में नहीं जीत सके, जीतें कैसे पंच वोट नहीं देते इस लिए कहते हैं कि पंचायत समिति के प्रधान के लिए पंचों को वोट नहीं देने दिया जाय । आप चुन कर आये हैं, 1,00,000 वोटों से, पंच चुन कर आता है 400 आदमियों से, आप उसकी इज्जत के खिलाफ बोलते हैं कि उसे चुनने का हक नहीं दिया जाय, इसलिए नहीं दिया जाय कि वह आपके हक में नहीं है ? वहां खड़े हो कर देखो त्राहि माम, त्राहि माम कह कर आते हो या नहीं । आपने अब की बार अपने खुद के शहर में देखा कि आपका वहां

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)
क्या हाल हुआ। यहां आकर जयपुर की महारानी का दबदबा है, यहां आकर बड़ाई ठोक दी और जयपुर की पब्लिक को गुमराह करें कि प्रांत के दूसरे लोगों को घृणा की दृष्टि से देखें, इस तरह लोगों में घृणा फैलायें .....

एक माननीय सदस्य : यह पर्सनल आक्षेप है.......

(शोरगुल)

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : राजस्थान के दूसरे हिस्सों के लोगों में संयम नहीं होता तो कभी के दंगे हो जाते। बीकानेर के मेरे भाई थे और भी कांग्रेसी थे उन्हें गालियां निकाली गईं आये साले यहां बीकानेर उदयपुर के राज करने," मैं लड़ाई नहीं करवाना चाहता, आपसे कम प्रेम नहीं रखता हूं प्रान्त की, देश की एकता के प्रति पर यह फिजां थोड़ी फैली है, ज्यादा फैल गई तो जैसी आसाम, बंगाल में लड़ाइयां हुई हैं, वैसी ही यहां पर भी फैलेंगी। यहां के लोगों को गुमराह किया जाता है, कहा जाता है कि राज तो राणी को है, राणी को राज ले लियो, राज राणी को पाछो लांगा। राज तो प्रजा का है, राणी को कोनी। यो एक ही राजपूत को बेटो मिलियो है भैरूंसिंह थाने राज पाछो देगो....

(शोरगुल)

श्री रघुवीर सिंह (खेतड़ी) : आप गवर्नर के अभिभाषण पर कह रहे हैं या अन्य बातों पर...

(शोरगुल)

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैं नाम नहीं बताऊंगा। खैर भैरोंसिंहजी को बाद में कह दूंगा। देश की एकता के बारे में भैरोंसिंहजी को मैं मेरे से कम नहीं मानता। राणी-राणी कह कर मैत्रीय भावना फैलाते हैं।

एक माननीय सदस्य : सबके सामने नाम क्यों नहीं बताते, अकेले भैरोंसिंहजी को ही नाम बताने का क्यों कहते हैं, हम सबसे इस बात को छुपाते क्यों हैं, क्या आप भैरोंसिंहजी से घबराते हैं?

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : जितना गौओं का नाम ले कर, जितना सेठों का पैसा लेकर विरोधी पक्ष ने पाप किया है उसके लिये विरोधी पक्ष प्रायश्चित करे और श्री खेतसिंहजी साहब ने धन्यवाद का प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन कर के उसे पास करें।

(अनेक माननीय सदस्य बोलने के लिये खड़े हुए)

श्रीमती सभानेत्री : श्री पी०के० चौधरी !

श्री पी.के. चौधरी (फुलेरा) : सभानेत्री महोदया, मैं दो दिन से राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव पर वाद-विवाद सुन रहा हूं। मैं विरोधी दल के नेता से उम्मीद करता था कि राज्यपाल के अभिभाषण पर वाद-विवाद होता है तो ज्यादातर पोलिसी के विषय पर, नीति सम्बन्धी बातें रखी जानी चाहिये। मैं यह उम्मीद करके चला था कि विरोधी दल के नेता से पोलिसी सम्बन्धी बातें सुनेंगे पर इस अभिभाषण पर वाद-विवाद शुरू हुआ उसको गलत डायरेक्शन, गलत मोड़ उन्होंने दिया है। राजनैतिक स्टंट के रूप में इस अभिभाषण पर वाद-विवाद

(श्री पी. के. चौधरी)

का फायदा उठाया इस सम्बन्ध में मेरे मित्र व्यासजी ने कुछ बातें बताई हैं।

मैं राज्यपाल के अभिभाषण पर आता हूं, जहां तक राज्यपाल का अभिभाषण है, उसमें दो तीन खास बातें हैं जिनकी ओर मैं माननीय सदस्यों का ध्यान दिलाना चाहता हूं, जिनको हम बहुत दिनों से चाहते थे। जिन वक्ताओं ने बहस में भाग लिया है उन्होंने इन बातों की ओर कम ध्यान दिया है और मैंने यह देखा कि राजनैतिक स्टंट बाजी और एक दूसरी पार्टी पर दोषारोपण के सिवाय इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया है। राज्यपाल के अभिभाषण में पहली बात तो यह है कि राजस्थान सरकार ने निर्णय लिया है कि अन इकोनोमिक होल्डिंग्स हैं उनका लगान माफ किया जायगा। इलेक्शन मेनिफेस्टो में भी हमने यह कहा था कि अनइकोनोमिक होल्डिंग्स हैं उन पर हम लगान को माफ करना चाहते हैं। यह जो अनइकोनोमिक होल्डिंग्स पर लगान माफ किया गया है, इससे कितने लोगों को फायदा मिलेगा इसके मेरे पास पूरे फीगर्स नहीं हैं। मैं कम से कम राजस्व मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि इसका इम्पेक्ट क्या होता है, यह वे अपने रिप्लाई में बतावें कि यह सहूलियत दी गई है उसका इम्पेक्ट कितने आदमियों पर पड़ता है। मेरे पास जो जानकारी है उसके आधार पर जयपुर डिविजन, कोटा डिविजन, उदयपुर डिविजन के लगभग 6 से 8 एकड़ के होल्डिंग्स हैं उनको रियायत मिलेगी। जोधपुर और बीकानेर डिविजन के खातेदार हैं उनको जिनके 15 से 25 एकड़ होल्डिंग्स हैं उनको इससे रियायत मिलेगी। इस प्रकार इससे करीब करीब राजस्थान के 20-22 लाख फेमिलीज को, खातेदारों को इस सहूलियत का फायदा मिलेगा। उदयपुर डिविजन के डिस्ट्रिक्ट्स हैं पूरे डिस्ट्रिक्ट में 75 परसेंट काश्तकारों को भी खातेदार हैं, उनको इस निर्णय के अनुसार लगान देना नहीं पड़ेगा। इसी प्रकार जयपुर सेवाई माधोपुर, अलवर और भरतपुर जो 50 प्रतिशत से ज्यादा खातेदारों को इसमें फायदा मिलेगा, झुंझुनूं डिस्ट्रिक्ट में 55 प्रतिशत लोगों को, जोधपुर डिविजन में नागौर, पाली और सिरोही डिस्ट्रिक्ट में के 75 प्रतिशत काश्तकारों को फायदा मिलेगा, बाकी के मेरे पास फिगर्स नहीं हैं।

बीकानेर डिवीजन में खास तौर से चूरू में काफी स्माल होल्डिंग्स हैं। वहां पर काफी लोगों को फायदा मिलेगा। कोटा डिवीजन में, कोटा, बूंदी और झालावाड़ में भी करीब 60 प्रतिशत खातेदार हैं। उनको भी इस रियायत के अनुसार फायदा मिलेगा यह इतनी बड़ी बात है राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में। आज दो दिन से बहस चल रही है, उसकी इम्पार्टेन्स को एक भी वक्ता ने कहना जरूरी नहीं समझा कि सदन का ध्यान आकर्षित करें। सुखाड़िया साहब की बातों में या और बातों में लग जाते हैं लेकिन हम जो अभी अभी चुनकर आए हैं, उनको पालिसी की बातों पर ध्यान देना चाहिए। सरकार को करेक्ट फिगर्स देनी चाहिए कि इस फेसले का क्या इम्पेक्ट होगा। उन फिगर्स को देने की कोशिश करें।

दूसरी बात राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में यह कही है कि जो डेवलपमेंट का फेज है उसको बढ़ाने के लिए इसमें निर्णय किया गया है। उद्योग और कृषि दोनों का

(श्री पी. के. चौधरी)

उत्पादन बढ़ाने की स्कीम्स हैं, उसके इम्प्लीमेंटेशन में बहुत कुछ ध्यान देगें और जो सोशल सर्विसेज हैं उसमें कमी करके भी पहली प्रायोरिटी इस कार्यक्रम को देने का हमने पहली बार निर्णय किया है। आज तक सोशल सर्विसेज में कटौती करके उत्पादन के कार्यक्रम को इतना वजन नहीं दिया गया। अब की बार जो निर्णय लिया गया है उससे हमें आशा होती है कि राजस्थान का हित होगा। सोशल सर्विसेज को काट कर जो उत्पादन का कार्यक्रम है चाहे उद्योग हो, चाहे कृषि हो, इस पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

तीसरी बात राज्यपाल महोदय ने यह कही है कि एडमिनिस्ट्रेशन में 57 लाख की इकोनोमी करके बचत की है और आगे और भी ज्यादा बचत करना चाहते हैं। इस संबंध में मैं एक सुझाव देना चाहता हूं, वह यह कि एडमिनिस्ट्रेशन में खाली खर्चा कम कर देने से काम नहीं चलता है। मैं चाहूंगा कि उसमें इफीशियेन्सी लाई जाय। लोग सरकार से पैसा नहीं चाहते, और कुछ नहीं चाहते, लेकिन वे इफीशियेन्ट एडमिनिस्ट्रेशन चाहते हैं। आज जो करप्शन की सब लोग बात कहते हैं उसकी जड़ और कोई चीज नहीं है सिवाय देरी के। हमने स्टडी करके देखा है कि करप्शन का मुख्य कारण है देरी। तकाबी के लिए मान लीजिए दरख्वास्त देते हैं अगर उस पर जल्दी फैसला हो जाय चाहे मेरे या दूसरे के हक में हो तो करप्शन की गुंजाइश नहीं रहती है। लेकिन जब फैसला नहीं होता है, 6 महीने हो जाते हैं तो करप्शन का स्कोप पैदा होता है। चाहे किसी काम के लिए दरख्वास्त दी हो। एक नकल के लिए दरख्वास्त देते हैं, अगर फौरन फैसला हो जाय कि नकल दी जायगी या नहीं तो करप्शन नहीं होगा।

चाहे कोटा के लिए, चाहे परमिट के लिए दरख्वास्त हो उसका इमीजियेट डिस्पोजल होना चाहिए। आज जो एडमिनिस्ट्रेशन में करप्शन है उसकी मुख्य वजह देरी है। जितनी देरी मिनीमाइज करेंगे उतना करप्शन कम होगा। तो जनता चाहती है कि एडमिनिस्ट्रेशन में करप्शन न हो और उसका एक ही तरीका है कि क्विक डिस्पोजल आफ पेपर्स। जब दो दो तीन तीन साल से केसेज पड़े रहते हैं तो उससे करप्शन शुरू होता है। पैसा लोग सिर्फ इसलिए देते हैं कि उनके कागज जल्दी निकल जायं। इसलिए मेरी मान्यता है कि एडमिनिस्ट्रेशन में हम इफीशियेन्सी लायें और देरी न हो और जो शिड्यूल्ड समय है उसमें हरेक चीज तय करें। चाहे तकाबी या लोन या कोटा या बस परमिट की दरख्वास्त हो, उसका इमीजियेट डिस्पोजल करेंगे तो मैं समझता हूं करप्शन का स्कोप 1/3 हो जायगा। अगर हम जनता को इफीशियेन्ट सरकार भी नहीं दे सकेंगे तो लोग इसको बुरा मानेंगे। तो कम से कम सरकार जो चौथे चुनाव के बाद बनी है, एडमिनिस्ट्रेशन को न्यू लुक दे। सिर्फ हम कह दें कि न्यू लुक दे रहे हैं यह काफी नहीं है। एडमिनिस्ट्रेशन का काम भी होना चाहिए ताकि लोग समझें कि हां सरकार की इफीशियेन्सी में कुछ परिवर्तन आया हुआ है। यह कोई जरूरी नहीं है कि जिसने लोन के लिए दरख्वास्त दी हो, परमिट के लिए दरख्वास्त दी हो उसको मिल ही जाय लेकिन कम से कम उसका फैसला तो हो जाय। आज फैसला नहीं होता है, दो दो तीन तीन साल की देरी होती है

(श्री पी. के. चौधरी)
तब लोग रिश्वत देते हैं। तो मैं चाहूंगा कि जो हमारी सरकार है, उसको सबसे ज्यादा ध्यान इस तरफ देना चाहिए कि डिस्पोजल क्विकुएस्ट होना चाहिए।

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में यह पोलिसी स्टेटमेन्ट है कि वह टैक्स कलेक्शन को सिम्पलीफाई करना चाहते है। कई तरह के इन्सपेक्टर्स हैं–वेट्स और मेजर्स इन्सपेक्टर, कोई सेल्स टैक्स इन्सपेक्टर, कोई माचिस का इन्सपेक्टर है। जितनी ही ज्यादा एजेंसीज होती हैं, उतना ही ज्यादा करप्शन का स्कोप होता है। इसलिये मैं सजेस्ट करूंगा कि टैक्स असेसमेंट का और उसकी वसूली का ऐसा तरीका होना चाहिये कि हरेक की दुकान पर जाने की जरूरत ही नहीं पड़े। जो दुकानदारों का आउटपुट या इन्पुट है उसका हिसाब लगाए। कैपिटल स्ट्रक्चर को देखकर आप उनका टर्न ओवर देखें कि इस दुकान का कितना टर्नोवर है। उस स्टेट वे फिक्स के तौर पर लें जिससे असेसमेंट की जरूरत ही न हो। आज जो मध्यम वर्ग के व्यापारी हैं वे सरकार के खिलाफ हैं, वे इन इन्सपेक्टर्स से तंग हैं। इन इन्सपेक्टर्स के होल्ड्स को खतम किया जाय। दुकान के लिए एक ही लाइसेन्स हो चाहे चावल बेचे, शक्कर बेचे, एक फो हो जाय बाकी सेलसटैक्स के मामले में दुकान के केपिटल स्ट्रक्चर को देखकर तय किया जाय कि 50 रुपये साल या 100 रु. साल टर्नोवर के अनुसार फिक्स करना चाहिये। लेकिन इन्सपेक्टर्स का दुकान पर जाना, रिटर्न्स रखना, इससे छोटे दुकानदार शिकायत करते हैं। जो अकाऊंट्स नहीं रख सकते हैं उनको भी वकील करके किताबें रखनी पड़ती हैं, हिसाब मेन्टेन करना पड़ता है। इन्सपेक्टर्स की वजह से झूठा हिसाब बना कर देते हैं। तो इस सारी चीज को खतम करके सिम्प्लेस्ट तरीका रखना चाहिए।

आज हमारे खिलाफ जो लोगों की भावना है वह इस वजह से नहीं कि हम खराब हैं या हमारा प्रोग्राम खराब है लेकिन हमने जो मशीनरी सेट अप की है उसका इम्प्लीमेन्टेशन खराब है। इसलिए लोग हमसे नाराज हैं। हम बुरे आदमी नहीं हैं। कांग्रेस बुरी नहीं है। अगर हमें राज करना है, सरकार चलानी है तो सही तरीके से चलानी चाहिए।

दूसरी बात राज्यपाल महोदय ने कहीं, इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया, यह फैसला किया गया है कि गांव-गांव में कुए खोदेंगे। लोगों को पानी मिले। यह बहुत बड़ी बात है। अच्छा निर्णय है, मैं उसका स्वागत करता हूं।

दूसरा है फूड के लिए। त्रिसूत्री कार्यक्रम तैयार किया है। आज जो हमारी स्थिति है उसके लिये यह अच्छी चीज है। एक तो यह है कि भारत सरकार से आयातित खाद्यान्न का वितरण, दूसरा भारत सरकार के माध्यम से अन्य प्रान्तों से खाद्यान्न का आयात और तीसरा राज्य में खाद्यान्नों का स्थानीय क्रय। यानी प्रोक्योरमेन्ट। स्टेट में प्रोक्योरमेन्ट का तरीका है उसके लिए सुझाव देना चाहूंगा। आज जो स्थिति है, होडिंग और ब्लेक मार्केटिंग चलता है उसके लिए देना है। मिनिमम प्राइस मुकर्रर कर दिया, पचास रुपया लेकिन बिकता है मार्केट में 125) रुपये क्विन्टल। काश्तकार इसलिए नहीं देता है। प्रोक्योरमेन्ट मार्केट रेट से करे। चालीस पचास लाख रुपया लेकर गवर्नमेंट ओपरेट करना शुरू करे तो छः महीने में प्राइस डाउन आ जावेगी। शुरू-शुरू

(श्री पी. के. चौधरी)
में बढ़ जाय। हारवेस्ट के बाद पर्चेज करना शुरू कर दे तो प्राइसेज बिल्कुल डाउन आ सकती है। यह बात हम बार-बार कहते हैं लेकिन इम्प्लीमेन्ट नहीं होती है। शिड्यूल बैंक को यह निर्देश देना चाहिए कि फूड पर एडवान्स न दे। आज 50 पर्सेन्ट एडवान्स मिलता है। उसको लेकर बनिये अनाज गोडाउन में बन्द कर देते हैं और फिर उसको साल भर रखते हैं। 9 परसेन्ट बैंक को इन्ट्रेस्ट दे देते हैं। आज खरीदता है तो साल भर बाद बेचता है तो 100) 125) उसकी कीमत हो जाती है। इस तरह काफी मुनाफा कमा लेते हैं। इसलिए बैंक को पाबन्द कर दें फूड ग्रेन्स चाहे कोर्स ग्रेन हो या दूसरा ग्रेन हों, उस पर कतई बैंक एडवान्स न दे तो आप कामयाब हो सकते हैं। यदि यह नहीं करते हैं तो हम को बैंकों को नेश्नेलाइज कर देना चाहिए।

राज्यपाल महोदय ने इलेक्शन के लिए जिक्र किया कि चौथे आम चुनाव अच्छे हुए। सदन में भी इसके बारे में कहा गया। लेकिन इन्फरेन्स इससे ड्रा नहीं किया। इन्फरेन्स यह है कि।
There is shift to the right आज राजा महाराजाओं को अच्छा मानते हैं। समाजवाद को, कांग्रेस को अच्छा नहीं मानते। हमारी गलती हो, या जनता की या पब्लिकमेन की गलती हो। आज राजस्थान मे राइटिस्ट टेन्डेन्सी बढी है। उसका नतीजा यह है कि पी. एस. पी. और कम्युनिस्ट भी राइटिस्ट्स के साथ मिलते हैं। संयुक्त दल होता है, उसमें पी. एस. पी., कम्युनिस्ट जाते हैं तो लीडर कौन होगा? महारावल बनेंगे। उन्होंने अपने भाषण में भी कहा कि योजना को नहीं मानते। इसलिये राइटिस्ट टन्डेन्सी राजस्थान में पनपी है। कम्युनिस्ट भी साथ देने के लिये तैयार हैं।

श्री मदनसिंह : हमारे साथ कम्युनिस्ट हैं उनको आप ले लें, जागीरदार हमको दे दें।

एक माननीय सदस्य : आपने कांग्रेस में राजाओं को क्यों लिया, उनको क्यों नहीं हटाया। नवाब लोहारू को फिर मंत्री मंडल से छुट्टी दिलाइये।

श्री पी. के. चौधरी : मै व्यक्तिगत नहीं कह रहा हूं।

श्री देवीदत्त : राजा महाराजा का आप नाम ले रहे हैं। आपके यहां पर राजा और नवाब हैं, जिन्होने 32 खून कराये।

श्री पी. के. चौधरी : आप भाषण कुछ भी दे दें। फैक्ट्स हैं उनको डिनाई नहीं कर सकते। लोगों में राइटिस्ट टेन्डेन्सी अधिक बढी है। आपकी राय कुछ भी हो लेकिन मेरी राय यह है कि यह बुरा है। हम चाहते हैं कि प्रोग्रेसिव टेन्डेन्सी डेवलप हो। समाजवाद को बुरा नहीं मानती जनता। वेस्ट बंगाल में संयुक्त दल बना, मैं उसको बुरा नहीं मानता।

श्री कृष्णकुमार गोयल : राजस्थान में राइटिस्ट टेन्डेन्सी बढ़ी है। राजा महाराजाओं की निस्संदेह प्रतिष्ठा बढ़ी है। उसके लिये जिम्मेदार कौन है?

श्री पी. के. चौधरी : हमारी गलती है। यह हमारी कमजोरी है। हमारी बातें लोगों के पास नहीं पहुंच पायी। हमारा एक्जीस्टेन्स उनमें नहीं हुआ। हम इसको अच्छा नहीं मानते। इसके लिये हमारा एडमिनिस्ट्रेशन दोषी है। प्रतिगामी कदम नहीं होने चाहिये।

Page No. 86

श्री मदनसिंह : आपको यह तो मालूम हुआ कि राजा महाराजाओं के साथ कम्युनिस्टों ने भी सहयोग दिया ।

श्री पी. के. चौधरी : दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि जहां तक राइजिंग प्राइसेज का सम्बन्ध है आज सब ही जगह पर भाव बहुत लगते हैं। यह सही है कि भाव बढे हैं। प्राइस पर कन्ट्रोल करना यह स्टेट गवर्नमेन्ट के बूते की बात नहीं है ।

श्री जसराज : उसके लिये आपकी प्रणाली ही तो जिम्मेदार है ।

श्री पी. के. चौधरी : राइजिंग प्राइसेज के सम्बन्ध में एक बात कहना चाहता हूं । हम खुद नहीं चाहते कि भाव बढ़ें । लेकिन हर एक डेवलोपिंग इकोनामी में भाव बढ़ते हैं । या तो हम प्राइसेज बिलकुल बढ़ना बन्द कर दें । आज जो करेन्सी सरकुलेशन में है उसको एक दम बन्द कर दें । एक दम या तो डिप्रेशन ले आवें । उसका मतलब यह होगा कि बिजनिस में एक दम सलम्प आवेगा, अनएम्प्लोयमेन्ट फैलेगा । ये हमारे सामने परिस्थितियां हैं । प्राइसेज राइज होती हैं उनको रोकने के लिये हम स्टेप लेते हैं, प्रोग्राम बनाते हैं, गलत हो तो बताइये । आप सजेस्ट कीजिये कि यह नहीं होना चाहिये, फलां चीज कीजिये जिससे प्राइसेज डाउन हो । यह कहना काफी नहीं है कि गवर्नमेन्ट की प्राइसेज बढाने की जिम्मेदारी है । सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट में एक ग्रूप कहता है कि बिलकुल डिप्रेशन ले आवे तो स्लम्प आ जावेगा मार्केट में । प्राइसेज डाउन आ जावेगी, और रुपये की कीमत बढ़ जावेगी । लेकिन डवलपमेन्ट में इन्वेस्टमेन्ट कम होगा । इसके साथ साथ लोगों को दिक्कते पैदा होंगी । प्राइसेज तो जरूर कम होंगी । एक तरीका तो यह है । प्राइसेज को इस तरह से नहीं लेना चाहिये । जहां डवलपमेन्ट आफ वर्क होता है वहां प्राइसेज पीछे नहीं जाती हैं बल्कि बढ़ती हैं । हमारे यहां यह सडन राइज हुई हैं प्रोडक्शन में कमी के कारण ही यह हुई हैं । वे नेशनल इन्कम का मेजर पार्ट एग्रीकल्चर प्रोडक्शन है । नेशनल इन्कम का मेजर शेयर उसमें जाता है । तीन साल से प्रोडक्शन नहीं हुआ तो गवर्नमेन्ट का दोष नहीं है । गवर्नमेन्ट की जिम्मेदारी नहीं है गवर्नमेन्ट का मिस मेनेजमेन्ट हो सकता है । लेकिन भावों में वृद्धि होना बरसात का न होना केवल सरकार की जिम्मेदारी है यह कहना कतई उचित नहीं है । हम चाहते हैं कि विरोधी पक्ष की ओर से आलोचना हो लेकिन वह आलोचना कन्स्ट्रक्टिव हो । सरकार किस बात के लिये जिम्मेदार है उसी तक वह आलोचना होनी चाहिये लेकिन अपोजीशन के माननीय सदस्य बहस के दौरान इस बात को भूल जाते हैं वे तो यही बताने की कोशिश करते हैं कि गवर्नमेन्ट की तरफ से जो कुछ कहा गया है वह सब गलत है । हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं आप तो पोलिटिक्स में अभी आये हैं । हमें इसमें काम करते हुए बरसों हो गये हैं । आज बहुत से लोग नये जीत कर आये हैं वे उस समय पोलिटिक्स में नहीं थे । हम केवल सत्ता को लेने के लिए पोलिटिक्स में नहीं आये हैं, हम देश और समाज का नव निर्माण करना चाहते हैं । पार्लियामेन्टरी डेमोक्रेसी में पार्टी को यह बात तय करनी होती है । पार्टी में जिस प्रकार के लोग होंगे उसी प्रकार की उनकी नीति होगी । हालांकि मैं नेशनलाइजेशन का पक्षपाती हूं लेकिन जहां पार्टी का सवाल है मेजोरिटी जिस पक्ष में होगी वही

(श्री पी. के. चौधरी)
कार्य होगा। डेमोक्रेसी में सारी पार्टी को साथ लेकर चलना पड़ता है····

एक माननीय सदस्य : तो आपके ख्याल से कांग्रेस की जिस प्रकार की विचारधारा चल रही है वह गलत है ?

श्री देवीदत्त : तो आपके यहां दो प्रकार की विचारधारायें चलती हैं ?

श्री पी. के. चौधरी : आप कांग्रेस का इतिहास देखेंगे तो आपको पता चलेगा कांग्रेस का नेशनल मूवमेन्ट जो रहा है। लेकिन अब इसमें हर विचारधारा के लोग आये हैं उसके अनुसार मिनीमम प्रोग्राम को लेकर चलते हैं।

श्री मदन सिंह : एक्स सोल्जर्स के बारे में आपका क्या कहना है ?

श्री गिरधारीलाल व्यास : वह तो आप कह ही चुके हैं।

श्रीमती सभानेत्री : श्री भीखाभाई।

श्री भीखाभाई (सागवाड़ा) : माननीय सभानेत्री महोदया, दो दिन से राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद हो रहा है····

एक माननीय सदस्य : इनकी पार्टी का समय तो काफी ले लिया गया है।

श्रीमती सभानेत्री : हर पार्टी के सदस्यों ने इसमें भाग लिया है। हर पार्टी के लिये समय निर्धारित है उसी प्रकार हमारी पार्टी का भी समय है उसमें वे बोल रहे हैं।

श्री विजयसिंह रावत (नसीराबाद) : आपके मुंह से आसन पर बैठते हुए यह कहना कि हमारी पार्टी का समय है उसमें से वे ले रहे हैं यह शोभा नहीं देता। आप आसन पर बैठी हुई हैं, आप इस समय किसी पार्टी से सम्बन्धित नहीं हैं।

श्रीमती सभानेत्री : मैं समझती हूं मैंने ऐसा कहा भी नहीं और अगर कह भी दिया तो कोई अनुचित नहीं है।

श्री मदन सिंह : क्या आपके द्वारा हमारी पार्टी कहना अनुचित नहीं है ?

श्रीमती सभानेत्री : आप कृपया सुनें। इनको बोलने दें मैंने जो कुछ कहा वह आपकी समझ में नहीं आया होगा।

श्री भीखाभाई आप जारी रखें।

श्री भीखाभाई : मैं निवेदन कर रहा था कि जो माननीय सदस्य एतराज उठाते हैं वे अभी-अभी मिलिटरी से आये हैं। सिविल सर्विस में उन्होंने काम नहीं किया इसलिये आपको संसदीय परम्पराओं का ज्ञान नहीं है। इसलिये इन्होंने ऐसा एतराज उठाया है।

सभानेत्री महोदया, आपकी मार्फत मैं निवेदन करना चाहता हूं, जब से इस देश के अन्दर कांग्रेस की हकूमत कायम हुई है तब से देश के अन्दर सामाजिक मामलों में काफी परिवर्तन हुए हैं। जहां मानवता की कदर नहीं थी जो छोटे-छोटे तबके के लोग, हरिजन, आदिवासी और अनुसूचित जाति के लोग थे जिनको कोई पूछ नहीं होती थी, जिनको दरी पर बैठने का, घोड़े पर बैठने का हक नहीं था, सोने के जेवरात पहनने का अधिकार नहीं था। आज उनके लिये जमाना आया है। जब से यह संविधान बना है, संविधान के अन्दर इस प्रकार के प्रावधान

Page No. 88

(श्री भीखाभाई)

रखे हैं जिसके कारण दबे हुए लोग नीचे तबके के लोग ऊपर उठ सकें। आज इसी का यह फल है कि इस विधान सभा में चालीस अड़तालीस सदस्य इसी प्रकार के आये हुए हैं। अगर संविधान के अनुकूल सरकार नहीं होती है तो मैं कह सकता हूं इन जातियों के लोगों का पता नहीं होता। दूसरी बात मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जिन लोगों को राजमहल में जाने तक का अधिकार नहीं था, जिनको कभी राजमहल में जाने का मौका नहीं मिलता था आज इस संविधान के कारण राजा महाराजाओं के यहां ले जाया जाता है वहां उनको खाना खिलाया जाता है।

एक माननीय सदस्य : आपने भी तो सीकर के ठिकाने में खाना खाया है।

श्री भीखाभाई : राजमहलों में जो प्रवेश नहीं पा सकते थे आज उनकी खातिरदारी हो रही है।

मैं समानेत्री महोदया, महारावल साहब का बहुत कृतज्ञ हूं, अभी वे यहां नहीं हैं वे होते तो ज्यादा अच्छा होता, उन्होंने मुझे पढाया, बाद में अपनी स्टेट में उन्होंने मुन्सिफ मजिस्ट्रेट बनाया लेकिन मुझे उनके दरीखाने में जाने की इजाजत नहीं थी, मैं जिले का हाकिम था फिर भी मुझे अधिकार नहीं था। मैं बहुत दुख के साथ यह बात कह रहा हूं। मैं महारावल साहब का बहुत आदर करता हूं। वे डूंगरपुर राज्य के सम्मानित व्यक्ति हैं, उनके प्रति मेरी श्रद्धा रही है और आज भी है। फिर भी उनके द्वारा भी कई बातें तोड़ मरोड़ कर रखी जाती हैं फिर मनुष्य का दिमाग होने के कारण गुस्सा आना स्वाभाविक है। आपकी मार्फत एक बात और कहना चाहता हूं हमें यह विश्वास था कि सारे प्रान्तों में कांग्रेस बहुमत से आयगी लेकिन कुछ राज्यों में यह अनुमान सही निकला। राजस्थान के अन्दर भी कुछ दिनों पहले ऐसी फिजा थी कि राजस्थान में कांग्रेस बहुमत में नहीं आ सकेगी, मध्य प्रदेश में नहीं आ सकेगी, गुजरात में हारेगी इस प्रकार की फिजा बनाकर प्रचार किया गया। इस के साथ साथ इलेक्शन के पहले इस प्रकार की फिजा पैदा की गई कि चुनाव के दिनों में शान्ति भंग होने का भी खतरा है लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि राजस्थान में कभी कांग्रेस कमजोर नहीं हुई। यह मैं माननीय सदस्यों को तथ्यों के साथ साबित कर सकता हूं। चुनाव के जो आंकड़े हैं उनसे यह साबित कर सकता हूं, हालांकि सारे आंकड़े उपलब्ध नहीं कर पाया हूं लेकिन जहां तक राजस्थान की स्थिति है वहां कांग्रेस की स्थिति बहुत अच्छी रही है, बनिस्बत दूसरी पार्टियों के। यह बात मैं इसलिये कहना चाहता हूं कि लगभग डेढ दो महिने पहले पहले इस प्रकार की हवा फैलायी गई कि कांग्रेस सत्ता में आ ही नहीं सकती। जयपुर शहर में तो यहां तक हवा फैल गई कि यहां तो सफेद टोपी पहनकर कोई चल ही नहीं सकता।

(4 म. प.)

हमने टोपी उस वक्त बराबर पहनी है। जब कभी कांग्रेस पर आघात पैदा हो तो गांधी टोपी पहनना सब के लिये लाजिमी हो जाना चाहिये।

कांग्रेस आज कमजोर हो गई है, ऐसा कहना गलत है, निर्मूल है और सत्य से

(श्री भीखाभाई)

परे है। यह मैं इलेक्शन के आंकड़ों से साबित करूंगा। 52, 57 और 62 के जो चुनाव हुए हैं, उनके मुकाबले में इस 67 में कांग्रेस को अधिक वोट मिले हैं। 41 परसेन्ट दिये है, दूसरे विरोधी पक्ष में से एक को 22 और दूसरे को 11 परसेन्ट मिले हैं जनसंघ को और कुल मिलाकर बात करेंगे तो कांग्रेस की एक ऐसी पार्टी थी जिसने 182 सीटों पर चुनाव लड़ा है। जब कि दूसरी पार्टियों के किसी ने ऐसा करने की हिम्मत नहीं की। दूसरा इलेक्शन आप देख लीजिये उम्मीदवारों की जमानतों की जब्ती का। कांग्रेसी उम्मीदवारों की एक या डेढ़ परसेन्ट की हुई, जब कि 14 परसेन्ट स्वतन्त्र पार्टी को और अन्य पार्टियों का काफी ऊंचा परसेन्टेज है।

इन मापदण्डों से माना जा सकता है कि राजस्थान की जनता आज भी कांग्रेस के पीछे है।

सभानेत्री महोदया, कुछ समय पहले राज्यपाल महोदय के पास में एक सूची भेज दी गई थी उसमें संयुक्त दल की तरफ से 101 की एक लिस्ट भेजी गई और इसके बाद 8 नाम और भेज दिये गये। अब जयपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा कि जब नाथूराम जी अन्दर बैठे थे तो मालूम हो गया था। मैं कहना चाहता हूँ कि जब नाथूराम जी वहां गये थे दूसरे लाने वाले व्यक्तियों को जो बुलाया गया तो देवीलाल जी दूसरे जयनारायण जो नाम किसी को पता नहीं था। तो यह राजस्थान की जनता को गुमराह करने के लिये प्रचार किया जाता है। कांग्रेस के खिलाफ विध्वंसात्मक प्रचार किया जाता है। तो यह चीज चलने वाली नहीं है।

यह सही है कि विरोधी पक्षों में आज संगठन है और उसके बल पर कांग्रेस कमजोर हो गई हो ऐसा दिखाना चाहते हैं पर मैं नहीं मानता कि कांग्रेस कमजोर हो गई है।

दूसरी बात यह है सभानेत्री महोदया, राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में उल्लेख किया कि राजस्थान में चुनाव शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुए। यह सही है। कहीं एकाध जगह पर मतदान केन्द्र पर आपसी तौर पर कुछ कहा सुनी हुई हो, यह अलग बात है। पर आम तौर से कहना पड़ेगा कि यह सबसे बड़ा देश, जो जनतान्त्रिक देश है, लोकतान्त्रिक समाजवाद में विश्वास रखता है उसके बहुत बड़े चौथे आम चुनाव हुए। यह एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण काम था।

सभानेत्री महोदया, विरोधी पक्ष के माननीय नेता सदन में इस समय उपस्थित नहीं है क्योंकि उनके सामने एक बात मैं रखना चाहता हूं। उन्होंने यह बात कही कि राजनैतिक कारणों को लेकर डूंगरपुर और बांसवाड़ा में राहत कार्य चलाये गये। जिसकी घोषणा राष्ट्रपति ने 50 में की थी। शिड्यूलएरिया में स्पेशल तरीके से संविधान के शिड्यूल 6 में मौजूद है। गवर्नर साहब को पूरा अधिकार है कि किसी भी पार्लियामेन्टरी एक्ट या स्टेट लेजिस्लेशन के एक्ट को इन एक्ट कर सकता है स्पेशल ला सप्लाई कर सकता है।

(श्री भीखाभाई)

फिर इस एरिया में कहीं कहीं तीन तीन साल से लगातार अकाल रहा है, जहां 18 इन्च वर्षा होनी थी, वहां 15 ही हुई या 12 इन्च वर्षा हुई है। एवरेज जहां 25/30 इंच रहती थी। लोगों के पास खाने और पहनने को नहीं है। एक एक मील पर उनके घर हैं। अगर इस सदन के अन्दर किसी माननीय सदस्य ने उस शिड्यूल्ड एरिया नहीं देखा है–भील क्षेत्र नहीं देखा है तो उसे इस बारे में बोलने का अधिकार नहीं होना चाहिये। मेरी उन सदस्यों से खास तौर से विनती है कि वे डूंगरपुर बांसवाड़ा की हालत खुद अपनी आंखों से देखें। उनके वहां ठहरने लाने ले जाने का प्रबन्ध सारा मैं करूंगा। तो किसी चीज की स्टेडी अगर करनी है तो प्रत्यक्ष देखना चाहिये फिर कुछ कहना चाहिये।

विरोधी पक्ष के माननीय नेता इस समय सदन में नहीं हैं, इसका मुझे अफसोस है। जहां पर कोई काम नहीं, पानी नहीं, अन्न नहीं तो क्या लोग मर जावें। वहां की एवरेज लैंड होल्डिंग एक दो बीघा है। मैं उनकी हालत देखता हूं उधर घूमता हूं तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। वे लोग आज भी दूर दूर से लाकर उदयपुर में घास और लकड़ी बेचकर अपना गुजर बसर करते हैं।

अब यह जो उन पर डेढ़ करोड़ का खर्चा किया गया। मैं तो कहता हूं वह बहुत कम है। दो करोड़ और तीन करोड़ का काम देना चाहिये था। वहां सिवाय सड़कों के और काम नहीं है। माइनर इर्रिगेशन के काम का सर्वे किया गया है वे काम लिये जावेंगे। इसलिये कहना चाहता था कि यह बात नहीं है कि कोई राजनैतिक कारणों से पैसा खर्च किया गया हो। अभी हाल ही में एक बार की बात है, मुझे अच्छी तरह से याद है हमारे विरोधीदल के नेता मौजूद थे। मुझे याद है मार्च, अप्रेल और मई 1966 की बात है जब कि जिला राहत कमेटी की मिटिंग हुई थी डूंगरपुर जिले में और वहां के कलेक्टर उसकी अध्यक्षता कर रहे थे। मैं भी मौजूद था और हमारे विरोधी दल के नेता भी थे। उन्होंने भी कहा कि कलेक्टर साहब काम तो ठीक है लेकिन पर्याप्त नहीं है। यह बात विरोधी दल के नेता महोदय ने कही। वह काम से बड़े संतुष्ट थे लेकिन काम पर्याप्त नहीं है तो जब उस दिन वह काम पर्याप्त नहीं था, मैं चाहूंगा कि सभानेत्री महोदया आपकी मार्फत माननीय विरोधी दल के सदस्यों से निवेदन करूं कि एक तरफ तो वह कहते हैं कि काम पर्याप्त नहीं है और दूसरी तरफ यहां आकर कहते हैं कि वहां पर पैसा बहाया गया। सभानेत्री महोदया, मैं निवेदन करूंगा कि जो सम्बन्धित मंत्री है उनसे कहा जाय कि अगर रेकार्डेड रिपोर्ट में वह चीज मौजूद है तो उसको मंगाया जाये और कहा जाये कि यह बात सत्य है या नहीं। जब पर्याप्त नहीं है, जब अपर्याप्त बात थी और काम चलता है तो यह कहा जाता है कि दिसम्बर से फरवरी तक जो काम राहत के किए गए वह चुनावों को दृष्टि में रखते हुए किये गये। अब तक मई और जून में कितने काम चलते थे। मुझे याद है कि 1 लाख 8 हजार मजदूर लास्ट टाइम काम करते थे और अभी भी सभानेत्री महोदया मैं इस बात को रखना चाहता हूं जिसको मैं सदन की मेज पर रखूंगा कि 17 और 18 अप्रेल की मिटिंग जिसमें मैं शामिल नहीं हो सका था जिसमें हमारे सदन के सदस्य, रतनलाल और महेन्द्र जी भी उसमें मौजूद थे, उसमें ज्यादातर अधिकारी लोग

(श्री भीखाभाई)
थे। उस मिटिंग में क्या हुआ है उसकी प्रासीडिंग्स को पढ़कर मैं सदन की मेज पर रख दूंगा।

"पी. डब्लू. डी. की मजदूर संख्या 60 हजार लगाई, सिंचाई विभाग से 4 हजार, 2।। हजार और, रेवेन्यू एजेन्सी से 2 हजार मजदूर, भूरक्षण से 23 हजार और वन विभाग से 1।। हजार मजदूर लगाये हैं। तो इसके पश्चात् प्रमुख महोदय वास्तव में रतनलाल, एम० एल० ए० तथा चन्दूलाल गुप्ता एवं श्री बालमुकुन्द संयोजक और जो विभिन्न एजेन्सी द्वारा काम चलाये जाते हैं उनके काम के ऊपर संतोष व्यक्त किया। लेकिन उन्होंने बताया कि मजदूरों की संख्या और बढ़ाने की संभावना है और उसको ध्यान में रखते हुए ऐसे स्थान मौजूद है जहां 15–15 मील में कोई काम प्रारम्भ नहीं किया गया और उन जगहों पर पहले सड़कों पर काम चल रहा था वह भी बन्द कर दिया गया है और मजदूर ज्यादा आये और उसमें बढ़ोतरी हो और मजदूरों के लिए कोई काम प्रारम्भ किया जाना चाहिये"

उसका मतलब यह है कि बहुत से काम बंद कर दिये गये थे, बहुत से मजदूर आने की संभावनायें हैं और बहुत से काम शुरू होने चाहिये। यह जिला राहत कमेटी की सिफारिश है और उन्होंने ऐसी सिफारिश करके भेजी है। सभानेत्री महोदया मैं यह बात बताना चाहता चाहता था कि चुनावों के बाद एक स्थिति जब राजस्थान में पैदा हुई तो हमारे कुछ विरोधी सदस्यों ने इस प्रकार की बात कही कि यहां पर जो काम हो रहे हैं वह राजनैतिक कारणों से हो रहे हैं नतीजा यह हुआ कि काम ठप्प होगए। राष्ट्रपति शासन के अन्दर काम बन्द हुए। एक कमेटी बीच में और आगई और एक एम० पी० हैं जिन्होंने दिल्ली में भाषण फेंक डाला और कहा कि डूंगरपुर और बांसवाड़ा में पैसा बहाया जा रहा है सभानेत्री महोदया, मैं आपकी मार्फत कहना चाहता था कि कोई भी बात अगर शिड्यूल्ड एरिया के बारे में कही जाती है तो इन प्रावीजन्स को और संवधान की धाराओं को समझकर कहनी चाहिये और उसी दृष्टि से सोचें कि जो काम हो रहे हैं या नहीं। इस प्रकार के प्रावीजन से कि वहां पर मनी लेंडिंग को कन्ट्रोल किया जाये और कर्जे की चीज को राज्य सरकार को हलका करना चाहिये और इस प्रकार की चर्चा कई जगह आदिवासी सम्मेलनों में और जो वैलफेयर सोसाइटीज हैं उनकी तरफ से सुझाव आते हैं इसलिए सभानेत्री महोदया मैं निवेदन करना चाहता था कि कल कहा गया कि एक सरपंच है। मैं कहता हूं कि कोई भी आदमी है अगर बुरा करता है तो चाहे वह इस पार्टी का हो या उस पार्टी का, चाहे इस दल का हो या उस दल का उसको बराबर सजा होनी चाहिये। उसके लिए सरकार को पूरा कदम उठाना चाहिये। मैं इसमें विश्वास रखता हूं कि चाहे वह व्यक्ति वरिष्ट हो, चाहे कनिष्ट हो, चाहे किसी भी स्थिति में हो, हमको ऐसे व्यक्ति के लिए हमदर्दी नहीं हो सकती किसी के साथ। तो हमारे विरोधी दल के नेता ने एक बात यह कही।

दूसरी बात उन्होंने ट्रक के बारे में कही। मैं समझता हूं कि ट्रक किसी ने पकडा है और तस्करी का व्यापार करता है तो उसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर आयत नहीं होती है। उन्होंने कहा कि वन मन्त्री की हैसियत से क्या भाड़ भौंका। तो सभा

(श्रीभीखाभाई)

नेत्री महोदया, मैं आपकी मार्फत यह कहना चाहूंगा और जो माननीय सदस्य हैं उनका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि राजस्थान की विधान सभा के अन्दर जो जो प्रोसिडिंग्स हुई है वन विभाग के सम्बन्ध में और जो जो भी हमारे महारावल साहब बोले हैं उनको देखें तो बिल्कुल उलटा पायेंगे। उन्होंने क्या क्या कहा है उसके बिलकुल प्रतिकूल वह बोले है। मैं यह निवेदन करना चाहता था कि यह तथ्य से परे हैं और जो बातें हुई हैं वह ठीक नहीं हैं।

सभानेत्री महोदया, मैं एक बात कहना चाहता था समाज कल्याण विभाग के सम्बन्ध में।

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

अभी खत्म कर रहा हूं दो मिनट में।

सभानेत्री महोदया, यहां पर आदिवासी और हरिजनों के बारे में भी बहुत सी बातें कही गयी कि उनका बराबर ध्यान नहीं दिया जाता है सर्विसेज के अन्दर उनका स्थान नहीं है। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि सबसे बड़ी प्रतिनिधित्व फाम पोलीटीकल रिप्रेजेन्टेशन है और उसके अन्दर मैं यह समझता हूं कि उसके बाद में सामाजिक स्थिति अच्छी हो जाती है और आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाती है तो वह किसी का भी मुकाबला करने के लिए हो सकते हैं। इसलिये सभानेत्री महोदया, आपने जो समय दिया है उसके लिए धन्यवाद देता हूं और धन्यवाद प्रस्ताव है उसका समर्थन करते हुए मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्रीमती सभानेत्री : श्री मूलचन्द डागा।

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : सभानेत्री महोदया, यदि कुछ मिले नहीं तो आंसू नहीं बहाना चाहिए क्योंकि आंसू बहाने से जो तारे हैं वह भी नजर नहीं आयेंगे। मैं नहीं चाहता कि आपमें निराशा और ना उम्मीदी इस प्रकार से छा गयी हो कि आप क्या बोलना चाहते है और क्या बोल रहे हैं। ठीक है, जनता जनार्दन ने जो निर्णय कर लिया.....

श्री लादूराम जुलानियां : किसी के घर में चोरी हो जाये तब कहेगा ही।

श्री मूलचन्द डागा :....जनता जनार्दन ने ही निर्णय कर दिया और सरदार हुक्मसिंह ने फैसला कर दिया। उस दिन क्या हुआ। यह हुआ कि आपको बहादुरी से पीछे हटना तो था ही और हट भी गये और ऐसी हार मान ली लेकिन जब जनता जनार्दन ने फैसला दे दिया है और उसने यह फैसला किया कि राजा और महाराजा सेठ और साहूकार अपनी दौलत को लेकर सड़कों पर घूम सकते हैं, राजा और महा-रानी महलों से उतरकर घूम सकती हैं लेकिन उन्होंने माना और कबूल किया कि कांग्रेस एक ऐसी शक्तिशाली संस्था है, मजबूत संस्था है जो गरीबों को राहत पहुंचा सकती है और इसीलिए राजस्थान की जनता ने कांग्रेस को शासन दिया। इस प्रकार की जो आपमें निराशा आ गयी है, नाउम्मीदी आ गयी है मैं ठीक कहता हूं कि माननीय सुखाड़ियाजी ने 13 मार्च को ठीक निर्णय लिया था। मुझे उम्मीद और डर है क्योंकि आपकी जिस प्रकार की बातें

(श्री मूलचन्द डागा)
और हरकतें होती हैं, जिस प्रकार आप बोलते हैं मैं कहता हूं कि 13 मार्च को सुखाड़ियाजी ने मानवता का निर्णय लिया । जब राजनैतिक नेता में मानवता नहीं होती है तो वह डकेत बन जाता है । सुखाड़िया जी ने सोचा कि सारी ताकतें लड़ने के बाद राजा और महाराजा लड़ने के बाद दौलत, लड़ने के बाद, पूंजी-पति लड़ने के बाद, सारी पार्टीज लडने के बाद बहुमत नहीं बना सकीं, शायद ऐसा नहीं हो कि पुलिस का इन्तजाम कुओं पर करना पड़े, गलियों पर करना पड़े कि आत्म हत्यायें नहीं हो जायें । इसलिए उन्होंने ठीक ही समझा कि एक महीने का समय और वे बढ़ा दें, उनको एक महिने का मौका और दें । जब ये यहां पर भाषण करते हैं कि लोकतन्त्र की हत्या करना चाहते हैं तो मैं आप से कहता हूं कि अपने बलराज मधोक से पूछो, जसवन्तराज जी, एक्स. एम. पी. से पूछो कि उन्होंने कहा था . . .

श्री भगवानदास शास्त्री (अजमेर पश्चिम) : जो यहां पर मौजूद नहीं है उसका नाम कैसे लिया जा रहा है ।

(व्यवधान) (अशव्य)

श्री **मूलचन्द डागा** : राष्ट्पति शासन के लिए कहने को कौन गया था । किसने अपने शब्दों से वहां जाकर कहा था कि हम राजस्थान में राष्ट्पति शासन चाहते हैं । सुखाड़ियाजी ने बखूबी कहा कि जो कुछ समय के लिए इस मैदान में लड़ चुके हैं, जिन्होंने जिन्दगी की दौड़ में लड़ाई नहीं की है, जो आज महलों को छोड़ कर सड़कों पर आए हैं उनको निराश मत होने दो, उनको नाउम्मीद न होने दो, थोड़ा मौका और दो । निराशा एक मानसिक आवरण है, एक हत्या है जीवन की, इसलिए राजनैतिक हत्या न करने की दृष्टि से कुछ अधिक समय दिया और इसी कारण राष्ट्पति के शासन का निर्णय उन्होंने किया और इस तरह का निर्णय करके प्रजातंत्र की हत्या नहीं की बल्कि उसको और मजबूत किया है । ऐसा करके हम गिरते नहीं हैं, हम जमते हैं । आप अगर अपनी परीक्षा में ना काम-याब हुए हैं तो आप समझ लीजिए कि आप में काम करने की शक्ति की कमी है तो जो शक्ति प्रभू ने काम करने की दी है उस शक्ति को इस लोकतन्त्र रूपी पौधे की जड़ों में, जिस पौधे को कांग्रेस ने लगाया है, उस पौधे की जड़ों को अपने रचनात्मक कार्य रूपी जल से सिंचित कीजिए । यह नहीं कि गडबड़ा गए, एक ही हार में घबरा गए । एक ही मुकाबले में जिन्होंने अपनी दौलत लगा दी, जिन्होंने अपनी इज्जत आबरू दांव पर लगा दी, माणक चौक की चौपड़ पर खड़े होकर प्रतिज्ञाएं ले ली मंत्री महा मंत्री और गृह मंत्री की प्रतिज्ञाएं कर लीं उनसे मैं कहना चाहूँगा कि हिम्मत हारने से काम नहीं चलेगा, हौंसला रखो, जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है ।

एक बड़े यहां के कवि हैं, हृदय से कवि हैं मगर काम से वकील हैं उन्होंने एक बार नहीं अनेकों बार गृह मंत्रीजी के दरवाजे खटखटाए हैं, सुखाड़ियाजी का बारबार नाम रटते हैं, वे कहने लगे कि आप ही हमारी इच्छाएं पूरी कर सकते हैं । हमारी सारी इच्छएं तो कांग्रेस के राज्य में ही पूरी हो सकती हैं ।

(श्री मूलचन्द डागा)

कांग्रेस ही आज उनकी आवाज सुन सकती है और जब कभी विरोधियों की बात नहीं सुनना चाहते हैं तो उनके पास रह गया है बोलना बोलना और बोलना। और हम में ताकत है कि आपकी आवाज को सुनते रहें। इधर कामराजजी का आर्डर आ गया है कि सुनो सुनो और सुनो और हम सुनना चाहते हैं। हमने हमारी सीमाएं बहुत चौड़ी कर ली हैं। आज हम किसी प्रकार की अनर्गल बकवास को सुनते हैं। आखिर हमें राज करना है। आज हमारी उम्मीदें बढ गई हैं। कांग्रेस एक चीज है दुनियां के पर्दे पर। राजस्थान. हिन्दुस्तान के लिए एक बड़ी चीज थी। राजस्थान को मुल्क में पिछड़ा हुआ हिस्सा मानते थे, जिसे अल्प विकसित प्रान्त मुल्क में कहा जाता है और इसी अल्प विकसित मुल्क का काश्तकार आज ट्रेक्टर के ऊपर बैठकर रासायनिक खाद की मांग करता है। आज अपने लिए दूसरी दूसरी चीजों की मांग करता है। वह पंपिग सैट को लेना चाहता है। वह आगे बढना चाहता है। एक मजदूर ट्रांजिस्टर को अपने कन्धे पर लेकर सुखाड़िया जी की हुकूमत के प्रोग्राम को सुनना चाहता है। आज दुनियां में लोगों की उम्मीदें बढ गई हैं और इन उम्मीदों के बढने का एक नतीजा यह हुआ है कि वे अपनी मांगों को पूरा करना चाहते हैं। और ये जो बनते हैं हिमायती उनके, कहते हैं कि अनुसूचित जातियों के लिए क्या किया। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति के लिए तो वह किया कि वे इस मैदान में आए, इस धारा सभा में आकर बैठे जिससे उनकी इज्जत बढ गई, उनकी शोभा बढ गई। आज तो उनकी इतनी शोभा बढ गई कि चारों तरफ बन्दूक वाले चलते हैं। और किस शान से वे चलते हैं, उनके चारों तरफ पहरेदार रहते हैं। क्या होम मिनिस्टर और सुखाड़ियाजी की मोटरें चलेंगी जो इनकी मोटरें चल रही हैं और इनकी इज्जत बढ गई है। किस कदर इनकी मांग पैलेसों में बढ गई है। वे यहां पर कितनी ही अनर्गल बातें बोलें उनकी बातें सुनी जाती हैं। अभी कुछ समय पहले ही एक माननीय सदस्य ने कहा कि भूमि वितरण के लिए किया गया। अलाटमेंट के मामले में उन्होंने कहा कि अलाटमेंट कमेटी इस बात का निर्णय करे कि इस गांव में रहने वाले कौन २ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन-जाति के लोग हैं उनको पहले जमीन दी जाय। मुझे मालूम नहीं कि वे किस तरह से बातें कर रहे हैं। क्या उनको मालूम नहीं है कि इनको पहले जमीनें दी जाती हैं। या तो एम. एल. ए. बनने के बाद कमेटी में कभी जाते नहीं हैं। यह उनको अधिकार दिया गया है कि वे अलाटमेंट कमेटी की मीटिंगों में जायं लेकिन शायद ये जाने का कष्ट नहीं करते हैं। अगर जाते होते तो इनको मालूम होता कि भूमि वितरण के कार्य में हमेशा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन-जाति को प्राथमिकता दी जाती है।

श्री खेत सिंह : नियमों से अनभिज्ञ हैं।

श्री मूलचन्द डागा : हां, यह सही है। नियमों से अनभिज्ञ हैं। मुझे दुख है और मैं कहना नहीं चाहता था, लेकिन कहना पड़ता है कि जब महाराजा हरिश्चन्द्रजी की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव आया तो उस वक्त भी इस प्रस्ताव की गरिमा को भंग करने के लिए

(श्री मूलचन्द डागा)
कुछ न कुछ कह बैठे । इस प्रकार के प्रस्ताव की गरिमा को खोकर भी विरोधी पार्टी कुछ न कुछ बात कहती है तो मैं उनसे कहता हूं कि उनको मालूम होना चाहिए कि मैदान में हारे हुए आदमी को बहुत सहनशील होना चाहिए । इस प्रकार से संतुलन खोने से काम नहीं चलने वाला है, हिम्मत के साथ बैठिए, कांग्रेस अभी दो हजार साल तक और कितने ही सालों तक कायम रहने वाली है ।

श्री लादूराम सुलानिया (फागी) : पोइन्ट आफ आर्डर ।

श्रीमती सभानेत्री : इस समय कोई पोइन्ट आफ आर्डर नहीं ।

श्री लादूराम सुलानिया : मेरा पोइन्ट आफ आर्डर है ।

श्रीमती सभानेत्री : अच्छा बताईए क्या है आपका पोइन्ट आफ आर्डर ।

श्री लादूराम सुलानिया : मैं माननीय सदस्य से अर्ज करना चाहता हूं

श्री मथुरादास माथुर : अर्ज नहीं, पोइन्ट आफ आर्डर कहिए ।

श्रीमती सभानेत्री : माननीय सदस्य का पोइन्ट आफ आर्डर है तो उसे मुझ से कहिए माननीय सदस्य की तरफ मत कहिए ।

श्री लादूराम सुलानिया : मैं सभानेत्रीजी, आपके द्वारा माननीय सदस्य को अर्ज कर देना चाहता हूं कि अनुसूचित जाति के लिए जो कुछ किया गया वह तो उनका अधिकार था । उनके नानाजी का राज नहीं था कि अपनी मर्जी आती वही करते ।

(शोरगुल) (अव्यव)

श्रीमती सभानेत्री : यह कोई पोइन्ट आफ आर्डर नहीं है ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : यह तो पोइन्ट आफ डिस-आर्डर है ।

श्री मूलचन्द डागा : सभानेत्रीजी, ये घबराए हुए हैं । इनको इल्म नहीं है कि पोइन्ट आर्डर कब और कैसे उठाएं । हमारा काम तो सुनना है और हम इनकी हर अनर्गल बात को सुनने के लिए तैयार हैं ।

सभानेत्री महोदया, राज्यपाल महोदय ने जो भाषण दिया वह भाषण हमारी आकांक्षाओं का और आशाओं का प्रतिबिम्ब है । मैं चाहता हूं कि इस भाषण में कुछ शब्द देखें जिनमें कहा गया है कि हमारे प्रयत्न जारी हैं, प्रयास हो रहे हैं, सक्रिय कदम उठाए जा रहे हैं । माननीय मंत्री महोदय, आज कल जमाना बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है तो हमें भी उसी तेजी के साथ आगे बढ़ना होगा । लोगों की उमंगें बहुत बढ़ गई हैं, लोगों की आदतें बहुत ऊंची हो गई हैं । वे जल्दी ऊंचे आना चाहते हैं । आपने गांव2 में बिजली पहुंचा दी है, उसका परिणाम यह हुआ है कि हर एक गांव में जागृति हुई है, उनमें विद्युत गति पैदा हो गई है । वे तो चाहते हैं कि अलाउद्दीन का चिराग पैदा किया जाय । एक अलाउद्दीन का चिराग उनके पास हो जाय जिससे एक ही दिन के अन्दर सारी समस्याओं का निराकरण हो जाय । इस प्रकार की इन्कलाबी किसानों के अन्दर हो रही है, तो आप भी उसी तरह से सक्रिय रूप से लग जाइए । आपके मुकाबले के लिए किस किस तरह के समझौते हो रहे हैं । एक दीपक और एक तारा । एक हिन्दी में बोलता है और एक अंग्रेजी में जवाब देता है । कहां की ईंट और कहां का रोडा....

श्री **खेत सिंह** : एक झोंपडी, एक तारा ।

श्री **मूलचन्द डागा** : यह क्या स्टेबल गवर्नमेंट राजस्थान को दे सकते थे । मुझे दुख है कि अगर राजस्थान की हुकूमत इनके हाथ में हो जाती तो इसका खुदा ही हाफिज था । मैं तो समझता हूं कि यह राजस्थान की ढाई करोड़ जनता का सौभाग्य है कि उनकी गवर्नमेंट इन कांग्रेस भाईयों के हाथ में पड़ी । कांग्रेस, जो एक मजबूत पार्टी है जिनकी सेवा और त्याग की परम्परा है, उनके हाथों में सत्ता सौंपी गई । यहां पर इस प्रकार के भाषण दिए जाते हैं कि अस्पताल में दवाईयां नहीं मिलतीं, दवाईयों के लिए आवाज उठाई जाती है । एक वह भी जमाना था जब यह भी नहीं जानते थे कि दवाई क्या होती है । (व्यवधान)

विरोधी पक्ष के कुछ माननीय सदस्य : वाह वाह, वाह, वाह ।

श्री **मूलचन्द डागा** : सभानेत्रीजी, वाह वाह करने से क्या होगा । जब सही बात कही जाती है तो कहते हैं कि कांग्रेस की तारीफ मत करो ।

अब मैं आपको खेती के मामले में कुछ कहना चाहता हूं । हम खेती के मामले में विकास करना चाहते हैं । हिन्दुस्तान की जो खाद्य की समस्या है कृषि मंत्रीजी कुछ मेरी बात पर आप ध्यान दीजिये । मैं समझता हूं कृषि मंत्रीजी कि जो आपके विकास खण्ड हैं, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट हैं उनमें जो बी. डी. ओज. हैं वे मुख्य रूप से सब के सब कृषि विशेषज्ञ होने चाहिए । आप कृपा करके ऐसा न करिए कि एस. डी. ओ. या उनके कैडर के लोगों को पंचायतों और पंचायत समितियों में मुकर्रर कर दें । जो एग्रीकल्चर का काम करने वाले हों या जो खेती में विशेषज्ञ हों उनको ही आपको यहां नियुक्त करना चाहिए । मैं आपको बता देता हूं कि ग्राम स्तर पर आप जिन युवकों को नियुक्ति देते हैं वे काम नहीं करना चाहते हैं । आप एक-एक इंच भूमि पर कृषि कराना चाहते हैं तो काम करने वाले लोगों के हाथों में इसको दें जो कि एग्रीकल्चर के विशेषज्ञ हों । तो जिन जवान लोगों का जनता विश्वास नहीं कर पाती तो उनसे काम नहीं लिया जा सकता । अगर आप चाहते हैं कि आपके प्रोजेक्ट्स सफल हों तो उन प्रोजेक्ट्स के अन्दर उन लोगों को काम पर लिया जाय जो खेती के विशेषज्ञ हों । जिस प्रकार से एक वकील सारे सबजेक्ट्स जैसे इकोनामिक ला, लेबर ला या क्रिमिनल ला में तरक्की करना चाहता है तो वह कामयाब नहीं हो सकता है । इसी प्रकार आपके एग्रीकल्चर के महकमें में जो फूड का काम करना चाहता है उनको उसके लिए भेजें, जो सब्जी का काम करना चाहता है उसको वह काम दें । इस प्रकार से आपको काम का ठीक बंटवारा करना चाहिए । यदि आप देश की खाद्य-समस्या को हल करना चाहते हैं तो उन प्रोजेक्ट्स में उन लोगों को काम पर लें जो उसके जानकार हों । आप अपनी धनराशि उन गरीब लोगों को लम्बे समय के लिए इतनी धनराशि दें कि वे तरक्की के काम आसानी से कर सकें । आपको प्रशासन की शिथिलता को खत्म कर देना चाहिए । हमारे एग्रीकल्चर मिनिस्टर साहब जो कि नये हैं वे ताजगी और जवानी के साथ काम करेंगे । इस खाद्य-समस्या का निराकरण करने के

(श्री मूलचन्द डागा)
लिए खास तरीके से खेतों को पूरी धनराशि देकर, पानी के बान्ध बनवा कर उसको करें।

अकाल-राहत के जो हम काम करवाना चाहते हैं उनमें जो रोड का काम देते हैं, सड़क का काम देते हैं उन मामलों को भी सोचना पड़ेगा। जो रास्ते चल रहे हैं जो खाई हैं उन रास्तों को मिटाकर सड़कें मत दो। उन सड़कों को मेन्टेन करने में कठिनाई पैदा होती है। इससे अच्छा तो यह है कि सारी दौलत, सारी धनराशि, सारा पैसा खेतों को मेड़बन्दी और चाहरदीवारी बनाने में खर्च किया जाय। इस प्रकार से एक सड़क खडी करने के बाद उसके मेन्टीनेन्स का प्रश्न होगा। इस अकाल में कामों के मामले में जो आदर्श रहा है वह सराहनीय है और सरकार इसके लिए धन्यवाद की पात्र है, लेकिन ज्यादा अच्छा यह है कि सड़कों के बजाय सारी दौलत खेतों के काम में खर्च करें। छोटे-मोटे तालाब बनावें और सिंचाई की योजनाओं को बड़ी तेजी के साथ पूरी करें क्योंकि इधर जन-संख्या बड़ती जा रही है।

जहां तक शिक्षा का सवाल है और चाहते हैं कि ज्यादे से ज्यादा स्कूल खुलें, लेकिन उनके साथ-साथ खेलने के मैदान भी तैयार हों। यह एक बड़ी कमी सारे राजस्थान के अन्दर है कि कालेज और स्कूल खुलने के बाद भी उनके लिए खेलने के मैदान नहीं हैं जहां कि वे अपना चरित्र-निर्माण कर सकें। खेल की महत्ता को हमारे शिक्षा मंत्रीजी जानेंगे। कोई स्कूल, कोई पाठशाला और कोई कालेज ऐसा नहीं होना चाहिए जहां कि एन. सी. सी. की ट्रेनिंग देने के लिए और चरित्र-निर्माण के लिए हम धनराशि नहीं देना चाहते हों वहाँ स्कूलों के लिए खेलने के मैदान भी तैयार कराये जायं और हर स्कूल के बच्चे को वहां खड़ा किया जाय। इस बात के लिए हमारी जिम्मेदारी है।

सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारी आर्थिक हालत सुधारने की है। उसका तरीका राज्यपाल महोदय ने बताया है तो उसको शान्ति के साथ काम में लाना होगा। बड़े ताज्जुब की बात है कि गोली से मरने वालों को शहीद कहा जायेगा, जो गोली से मारे गये हैं उनको शहीद के नाम से पुकारा जाता है। मैं समझता हूं कि जहां अराजकता हो उसका दमन और शमन किया जाय। यह गवर्नमेंट की ताकत होनी चाहिए। गवर्नमेंट इस तरह से मजबूत हो कि अराजक तत्वों को न बढ़ने दे। इन अराजक तत्वों को रोकने का एक ही तरीका है कि गवर्नमेंट सख्ती के साथ में उनका मुकाबला करे। जो छोटी छोटी बातें होती हैं उनमें पुलिस उदासीन रहती है और पुलिस वाले केसेज रजिस्टर नहीं करते हैं। तो मेरी आपसे यह अपील है कि जो छोटे छोटे काश्तकारों को प्रभाव वाले लोग बेदखल कर देते हैं उनके मामले में पुलिस को हस्तक्षेप करना चाहिए, और उन लोगों को जो अराजक तत्व हैं उनको रोकना चाहिए। यहां कहा गया कि 2000 बार गोली चली तो गोली चलने का सवाल नहीं है, सवाल तो शान्ति कायम रखने का है। 25 करोड़ लोगों ने हिन्दुस्तान के लोगों ने चौथी बार वोट डाले हैं। यह हिन्दुस्तान के लिये शान की बात है। शान की बात यह थी कि 25 करोड़ मतदाता शान्ति के साथ वोट देने के लिए आये। कांग्रेस सत्ता में होते हुए चाहती तो चुनाव को रोक सकती थी। अभी क्या हुआ कि इस प्रकार के लोगों ने आन्दोलन किये लेकिन अब वे

(श्री मूलचन्द डागा)

सारे आन्दोलन भूल गये और आज गाय की आवाज नहीं आती है। मैं यह चाहता हूं कि और सबसे बड़ा सवाल यह है कि गाय मामले हैं ··

श्री विजयसिंह (नसीराबाद) : आपने कहा कि कांग्रेस सत्तारूढ़ पार्टी होने के कारण चुनाव को रोक सकती थी तो मैं, आपके द्वारा यह निवेदन करना चाहता हूं कि सत्तारूढ़ पार्टी यह सोच सकती है····

श्री मूलचन्द डागा : हम लोकतन्त्र में विश्वास रखते हैं और आज भी हमारी हुकूमत कायम है। आप कहते हैं अफसरों के बारे में तो माननीय सदस्य को मालूम होना चाहिये कि ज्यादातर अफसर लोग वे ही थे जो कि राजा-महाराजाओं के समय के हैं जिन्होंने उनका नमक खाया था, वे आज भी मौजूद हैं और उनकी वफादारी आपके प्रति ज्यादा है। इस प्रकार की बातें मुझसे मत कराइये कि चुनाव कैसे हुआ। आज यहां आप नहीं बोल रहे हैं बल्कि सोमानी और तापड़िया की दौलत बोल रही है जिसके कारण की आप आये हैं। मानवता को खरीदने की बातें करते हैं आप मानवता को गुमराह करने की नीति में पैदा होने वाले हैं और भ्रष्टाचार के आधार पर चुनाव में आये हैं। जो भ्रष्टाचार का नारा लगाते हैं उनको मालूम होना चाहिए कि उनकी पैदायश ही भ्रष्टाचार में हुई है। उनके पास कौन सा प्रोग्राम है, कौनसा इकानोमिक प्रोग्राम है, कौनसी उनकी घोषित नीति थी। आपकी गलतियों को जनता माफ नहीं कर सकती है। जिन आदमियों ने गलतियां की हैं उनको उनकी गलती के लिए जनता जिन्दगी भर माफ नहीं कर सकती है और इसके लिए इनको 5 साल तक अफसोस करना होगा और फिर भी वे संयम रख नहीं सके तो आने वाले 50 साल में भी उठ नहीं सकेंगे।

ये जो भ्रष्टाचार की बातें करते हैं और जो बातें समझाना चाहते हैं तो हम यह चाहते हैं कि जो हमारी टैक्सेशन की पालिसी है उसमें मजबूती से काम करें। मेरे खयाल से हिन्दुस्तान में इतना टैक्स मौजूद है कि अगर मजबूती से ही उसको वसूल किया जाय तो पूंजीपतियों ने मजदूरों का शोषण करके पैसा इकट्ठा किया है और जिनके पास लाखों मन अनाज पैदा हुआ है उनसे उस टैक्स को वसूल किया जाय। उस टैक्स को पूरी तरह से वसूल किया जाय और जो समाज कल्याण के काम है उन समाज कल्याण के कामों में उस रकम को लगाया जाय तो राजस्थान एक तरह से चमक उठेगा। आज जिस तरह की टैक्स वसूल करने की धीमी नीति है, मैं उस टैक्स को वसूल करने के लिए कहना चाहता हूं कि सख्ती के साथ सारा इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स और दूसरे टैक्स वसूल किये जायं। मैं कहता हूं कि इनके जो इस प्रकार के चोचले हैं, इन लोगों की जो मानवता के साथ खिलवाड़ करने की आदत है वह खत्म हो जायगी। अब यह आपकी रीति नीति नहीं चलेगी क्योंकि अब नई जिन्दगी आ गई है, अब कांग्रेस वह नहीं रही है....

श्री मदनसिंह दांता : (शोरगुल के कारण अश्रव्य)

श्री मूलचन्द डागा : कांग्रेस वह अब पहले की ताकत नहीं रह गई है····

श्रीमती सभानेत्री : आप (श्री मदनसिंह दांता) पाइन्ट आफ आर्डर उठा रहे हैं ?

श्री रघुनाथ विश्नोई : कुछ नया उठाया। कोई बात कही है।

श्री मूलचन्द डागा : फौलाद बनाने के लिए पहले लोहे को आग में तपाना पड़ता है, देश को मजबूत बनने के लिए युद्ध की आग में गुजरना पड़ता है। इसी तरह से आपको गुजरना पड़ेगा कठिनाइयों के बीच में से, मुसीबतों के बीच में से और देश को आगे बढ़ाने में सबकी मदद होनी चाहिए।

श्री विजयसिंह : अफसोस इस बात का होता है कि आप युद्ध में गये नहीं थे।

श्री मूलचन्द डागा : अब यह टाई का जमाना नहीं रहा है।

श्री गिरधारीलाल व्यास : यह गुलामी की निशानी है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : आपके कितने वोटर टाई लगाते हैं।

श्री मूलचन्द डागा : जो लोग चुनाव में से विजयी होकर आये हैं, जो पार्टी निष्काम और बेदाग साबित हुई है, अगर उसके विरुद्ध आपके इस प्रकार की बातें करनी थीं, आप इस प्रकार की बातें करना चाहते थे तो आपके लिए इलेक्शन पिटिशन का रास्ता खुला हुआ था। आपको इलेक्शन पिटिशन के लिए गवर्नमेंट ने कब मना किया था कि जिस कारण आप इस तरह की गलत बातों का जिक्र करें और उनका प्रचार करें, और जो आपने बेबुनियाद बातें यहां कहीं उनको आप उछालना चाहें....

श्री आलमअली (फतहपुर) : एक पाइन्ट आफ आर्डर है साहब।

श्री रघुनाथ विश्नोई : क्यों टाइम खराब कर रहे हो दो मिनट का।

श्री आलमअली : माननीय सभानेत्री, वैसे सभी बराबर के साथी हैं लेकिन यह कहते हुए बिल्कुल शर्म नहीं आई......

(शोर गुल)

श्रीमती सभानेत्री : माननीय सदस्य ! यह पाइन्ट आफ आर्डर नहीं है। आप आसन ग्रहण कर लें। यह पाइन्ट आफ आर्डर नहीं बनता है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : अभी थोड़ी ट्रेनिंग ले लो दूसरे लीडर्स से।

श्री मूलचन्द डागा : यह तो यह किस्सा हुआ, जब यह मालूम हुआ कि इन्होंने जो 21 नाम दिये थे, वह हमारे कांग्रेस दल के सदस्यों के दे दिये थे कि हमें तो डूबेंगे ही सनम, लेकिन तुम्हें भी ले डूबेंगे। इन्होंने कांग्रेस दल के 21 सदस्यों के नाम की लिस्ट दे दी। लेकिन उसके बाद में क्या हुआ ? गवर्नर साहब के सामने उनके बयान हुए उनसे बातें हुई तो राजस्थान के अन्दर जयपुर की माणक चौक चौपड़ को भी शर्म आने लगी। जयपुर की माणक चौक चौपड़ भी यह समझने लगी कि यह लोग प्रतिज्ञा लेने के काबिल नहीं हैं क्योंकि यह उन प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं कर सकते हैं। इन लोगों ने किन-किन भावनाओं के कारण जो प्रतिज्ञायें ली थीं जयपुर की माणक चौक चौपड़ पर कि हम यह करेंगे, हम अपना राज्य बना कर आयेंगे। यह लोग प्रतिज्ञायें लेना तो चाहते हैं लेकिन प्रतिज्ञायें लेने के हकदार नहीं हैं क्योंकि इन्होंने उन प्रतिज्ञाओं

(श्री मूलचन्द डागा)

को पूरा नहीं किया। प्रतिज्ञायें इन्होंने हल्दी घाटी में आकर नही लीं, महलों में प्रतिज्ञायें लीं। जब कि प्रतिज्ञायें ली जाती हैं हल्दी घाटी में। मैं कहना चाहता हूं कि कांग्रेस काम करने वाली पार्टी है, यह निष्काम पार्टी है। आपकी यह पार्टी, दस, बीस, पच्चीस साल पहले पैदा हुई है, और किसी का निशान तारा हो गया और किसी का दीपक हो गया। और इन लोगों ने इतना शोर गुल मचाया कि जमीन और आसमान पर छा गया और यह लोग कहते रहे कि कांग्रेस को खत्म कर देंगे। लेकिन यह पार्टियां अप्रगतिशील पार्टियां हैं जो आने वाले जमाने में समाप्त हो जायेंगी और इनसे कोई भी बात नहीं होगी। जिस पार्टी के पास में इकानामिक प्रोग्राम है, जिसके पास में आर्थिक प्रोग्राम है वही पार्टी इस देश में टिक सकेगी। मैं इस बात को जानता हूं कि आपके पास में कोई प्रोग्राम नहीं है। क्या ऐसे लोग कांग्रेस को परास्त करके राज्य ले लेंगे जिन्होंने उम्र भर तक राज्य करना जाना नहीं है, लेकिन लोगों को पीसते रहे और घसीटते रहे.....

एक माननीय सदस्य : नवाब लोहारू !

श्री **मदनसिंह** : आपका मतलब नवाब साहब से है ?

श्री **मूलचन्द डागा** : इसलिए मैं कहना चाहता था, हां वह तो ठीक बात है...

श्री **विजयसिंह** : पसीना आ गया।

श्री **मूलचन्द डागा** : मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि यही बात हुई–

आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमां होंगे !
अब कहते हैं आखिरी वक्त कि हम आपकी सेवा करेंगे, हम मुसलमां होंगे। लोग सब आपको समझ चुके हैं। सेवा करने वाले जो भाई है वह अनर्गल प्रलाप नहीं करेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि राज्यपाल महोदय ने जो प्रोग्राम दिया है, जो मार्ग बताया है, जो मार्गदर्शन दिया है, उसके अनुसार हम शुद्ध भावना लेकर चलें तो आपको मालूम होगा कि आगे रोशनी–रोशनी है। विद्युत आ रही है तो और चांदना हो जायगा, और प्रकाश हो जायगा, पानी बहेगा और लहरें आयेंगी लेकिन सदाशयता के साथ। (हिअर हिअर)

श्री **लादूराम सुलानिया** : सभापति महोदया...

श्रीमती सभानेत्री : श्रीमती सुमित्रा।

श्रीमती सुमित्रा : आज मैं समाप्त नहीं कर पाऊंगी इसलिए कल भी कन्टीन्यू करने दिया जाय तो मैं बोलूंगी नहीं तो नहीं बोलूंगी।

श्रीमती सभानेत्री : क्या ?

श्रीमती सुमित्रा : कल भी कन्टीन्यू करने के लिए आश्वासन दें तो बोलूंगी नहीं तो नहीं।

श्रीमती सभानेत्री : सभा तो पांच बजे समाप्त हो जायगी। इच्छा हो तो बोलें।

श्रीमती सुमित्रा : फिर तो दूसरे को मौका दे दें।

श्रीमती सभानेत्री : मनोहरसिंहजी, निर्दलियों को १५ मिनट दिये गये हैं। आप चाहें तो बोलें।

श्रीमती सुमित्रा : पांच दस मिनट का समय और बढ़ा दीजिये ।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़) : माननीय सभापति महोदया, अभी जो माननीय सदस्य बोल रहे थे वह बहुत सुन्दर ढंग से बोल रहे थे । जब वे बोल रहे थे तो ऐसा लग रहा था कि मयूर जब नाचता है तो बहुत सुन्दर लगता है लेकिन नाच कर जब अपने पैरों की ओर देखता है तो उसकी आंखों में आंसू आ जाते हैं यहां बहुत प्रगति की बात कही गई है लेकिन वास्तव में बात यह है कि लोगों को यह कहना पड़ रहा है कि एक वक्त था कि जब हम मूणों में घी भरते थे और खाइयों में अनाज भरते थे लेकिन आज अनाज का दिखाई देना मुश्किल है

श्री मूलचन्द डागा : पहले जन संख्या कम थी ।

श्रीमती सभानेत्री : डिस्टर्ब मत कीजिये।

श्री मनोहरसिंह मेहता : मेरी प्रार्थना है कि मेरे लिए विधान सभा नई बात थी लेकिन जब से मैं यहां आया हूँ तब से सबकी बात बड़े ध्यान से सुनता हूँ और मैं चाहता हूँ कि मेरी बात भी आप ध्यान से सुने । अभी हमारे डागा साहब ने और दूसरे माननीय सदस्यों ने भाषण दिए मैं उनके बीच में एक भी शब्द नहीं बोला, चाहे विरोधी दल में से बोले और चाहे सरकारी पक्ष में से लेकिन मैंने उनके भाषण के बीच में एक शब्द नहीं कहा । मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपा कर ध्यान से सबकी बात सुनना सीखियेगा

कई माननीय सदस्य : बोलिये । बोलिये

श्री मनोहरसिंह मेहता : मैं आप से निवेदन कर रहा था, यह कहा गया आखिर :

मूणया में भरता घृता
खाइयां में भरता नाज
अब छुगल्या में नाज है
और शीशी में घी ।

आज देखिये कि स्थिति क्या हो गई है । यह कहा जाता है कि हमारा राज्य आगया है । हमारा राज्य तो आगया है लेकिन फर्क इतना ही आया है कि भारतवर्ष से अंग्रेज तो चले गये हैं और काले साहब राज करने वाले बन गये है :

गोरा गया काला लग्या
करने साहब राज्य
अरे दारू तो सोरो कर्यो
दोर्यो कर्यो अनाज

आज स्थिति यह है कि अनाज के दर्शन तो दुर्लभ हो रहे हैं लेकिन शराब सुलभ हो रही है । अभी अभी मैं भीलवाड़ा से आ रहा था तो मैंने देखा कि एक मोटर के अन्दर माइक फिट हो रहा था और वह आवाज लगा रहा था–शराब के भाव में भारी कमी । यह कहा जाता है कि जयपुर नल एक घंटे के लिए खुलता है । खुलता होगा नल एक घंटे के लिए लेकिन राजस्थान में शराब के नल खूब खुलते है । आज हिन्दुस्तान के अन्दर राजस्थान प्रान्त ही ऐसा है जिसमें गारन्टी के ऊपर शराब के ठेके दिये जाते हैं । शराब के ठेके लेने वाले ठेकेदार को कहा जाता है कि तुझे अधिक से अधिक शराब बेचनी पड़ेगी । यदि कोई ठेकेदार गारन्टी से कम शराब बेचता है तो उसको नोटिस इश्यू किया जाता है कि शराब कम क्यों बेची, इतनी शराब बेचनी बकाया है इसलिए गारन्टी पूरी करो । अब वह क्या

(श्री मूलचन्द डागा)

करता है, उसे तो गारन्टी पूरी करनी है, अगर वह गारन्टी पूरी नहीं करता है तो जितनी शराब कम बिकी है उसका पैसा उससे वसूल होता है। वह फिर घर घर जाता है पीने वाले के, और आवाज देता है। पीने वाला आदमी बाहर आता है, पूछता है-क्या है भाई ? वह कहता है कि मैं शराब की बोतल लाया हूं। पीने वाला कहता है कि मेरे पास तो पैसे नहीं है। वह कहता है कि तुम पैसे की चिन्ता मत करो, मैं उधार देता हूं। शराब में एक प्रकार का टेम्पटेशन होता है। एक तो घर बैठे शराब मिले और फिर उधार मिल जाय तो पीने वाला अपने को नहीं रोक सकता है। क्योंकि मैं शराब को बुरा मानता हूं इसलिए जिसकी आदत शराब पीने की पड़ जाती है उससे वह आदत में प्रेम के साथ में छुड़वाना चाहता हूं। जिस तरह से रोगी के साथ में स्नेह रखा जाता है उसी तरह से शराब छुड़वाने के लिए भी स्नेह से कोशिश करनी चाहिए। कई बार शराबी औरतों के जेवर चुरा कर ले जाते हैं। वह अपनी औरतों के पीछे और भी सब कुछ करते हैं। अगर उन्हें घर बैठे शराब मिल जाय तो वह कैसे अपने आपको रोक सकते हैं। इसलिए मैं आपसे और आप सब साथियों से निवेदन करना चाहता हूं कि आप और प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास करें या न करें, कृपा करके शराब बन्दी का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास करिये ताकि राजस्थान के माथे से यह कलंक का टीका मिट जाय। यह विचार रखना चाहता हूं कि सब मंत्रीगण और आप सब कृपा करके एक हो जायं और इस प्रस्ताव को पास करने की हिम्मत करिये। हो सकता है कि राज्य करने वाले लोग यह मानें और उनके मन में यह खटका आ जाय कि आखिर इतना पैसा कहा से लायेंगे······

मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आखिर गुजरात और मद्रास ने क्या किया ? उन्होंने शराब बन्दी की। मद्रास में गांधी की सरकार चलाने वाले लोग नहीं हैं लेकिन फिर भी वहां की सरकार ने कहा है कि इसका कड़ाई के साथ पालन करेंगे। गुजरात में इसके कारण मजदूर खुशहाल हो गये और अब उनकी क्रय शक्ति बढ़ गई है। आप यह कहते हैं कि इससे जो आमदनी होती है उसका घाटा रहेगा लेकिन मैं यह कहूंगा कि आप घाटे में नहीं रहेंगे क्योंकि इससे जो उनकी क्रय शक्ति बढ़ेगी उससे आपको काफी आमदनी होगी और आप किसी भी हालत में घाटे में नहीं रहेंगे। इसके साथ साथ फौजदारी के जुर्म भी कम होंगे और लोगों में बीमारी भी कम होगी और कई आदमी और औरतें आपको दुआ देंगी। लाखों मजदूरों की औरतें कहेंगी कि भला करे भगवान इनका। कांग्रेस ने और तो कोई अच्छा काम किया हो या नहीं किया हो लेकिन हम लोगों को तो उन्होंने शराब बन्द करके खुशहाल कर दिया। आज आपकी सरकार महात्मा गांधी के नाम पर चल रही है। जब आप महात्मा गांधी के नाम पर अपनी सरकार चला रहे हैं तो आपको चाहिये कि काम भी वैसे ही करें जैसा महात्मा गांधी चाहते थे लेकिन वैसे काम नहीं हो रहे हैं। काम वही हो रहे हैं जिनको महात्मा गांधी नहीं चाहते थे। महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि एक घंटे के लिए भी मुझे डिक्टेटर बना दिया जावे तो सबसे पहला काम मैं करूंगा वह शराब बन्दी का होगा।।

एक माननीय सदस्य : आप संयुक्त मोर्चे के हैं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : आप कृपा करके बाद में बोलें तो ठीक होगा। मैं चाहूंगा कि आप पहले मुझे सुनलें।

महात्मा गांधी ने यह कहा था कि मैं भारत को कंगाल होना पसन्द करूंगा लेकिन मैं कभी भी यह नहीं चाहूंगा कि भारत में शराब बन्दी न हो। उन्होंने तो यह भी कहा था कि यह जुवा और व्यभिचार की जननी है। जब आपने शराब को अपनाया तो फिर आप उसके पुत्र और पुत्रियों को भी अपना लीजिये।

आज आप महात्मा गांधी शताब्दी मनाने जा रहे हैं।····

श्री मदनसिंह : महात्मा गांधी की तस्वीर के पीछे पीने वाले हैं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : नक्शा तो यही दिखता है कि आप महात्मा गांधी को अंगूर की शराब से नहाना चाहते हैं और उनके मुंह पर अंगूर की शराब डाल कर उनसे यह कहें कि ए बुड्ढे तेरे बाप दादों ने भी ऐसी शराब नहीं पी होगी जो हमारे राजस्थान की सरकार के लोग पिला रहे है।

इसलिये सभापति महोदया, मैं आपके द्वारा सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि किसी प्रकार की हिम्मत आप करके आज जो यह कलंक का टीका हमारे सिर पर लगा हुआ है उसको धोइये। आप महात्मा महात्मा गांधी के प्रान्त के हैं, आप महाराना प्रताप और सांगा के प्रान्त के हैं इसलिये उनसे प्रेरणा लेकर भक्ति, शक्ति और हिम्मत से तीनों का समन्वय बना कर बढ चलिये और यह कहिये कि शराब का उत्पादन नहीं बढेगा। मै आपको बताना चाहता हूं कि शराब के कारण लोगों की क्या स्थिति है। मै आपको ज्यादा दूर नहीं ले जाना चाहता, मेरी कोन्सटीटूएन्सी में हर साल अकाल पड़ता है और उसका मूल कारण शराब है। वहां के लोग शराब पी कर नशे में धूत होकर पड़े रहते हैं और औरतें काम करती हैं। औरतें कितना काम कर सकती हैं। मै यह कहूंगा कि शराबी किस तरह से देश की रक्षा करेगा किस तरह से शराबी देश में उत्पादन बढ़ाएगा।

हो सकता है कि आप यह कहें कि हमने इतने भवन बना लिये, भवन तो बना लिये ठीक है लेकिन वे ऐसे ही हैं जैसे अगर किसी मनुष्य में मानवता नहीं है तो यह मनुष्य किस काम का, तो वे भवन तो ऐसे है जैसे मृतक मनुष्य के शव होते हैं। मैं यह चाहूंगा कि सच्चाई निकलनी चाहिये मगर दुःख इस बात का है कि दुर्भाग्य से सब जगह कुए में भांग पड़ गई है। दूध बेचने वाला भी दूध में पानी मिला कर बेचता है और व्यापारी अधिकांश इन्कम टैक्स को पूरा नहीं देते और उस इनकम टैक्स की चोरी करते हैं और पूरा जमा नहीं कराते। मै यह नहीं कहता कि सभी दूध वाले दूध में पानी मिलाते हैं या सभी व्यापारी सेल्स टैक्स की चोरी करते हैं। आप देखेंगे कि मैंने अधिकांश शब्द कहा है।

अभी अभी आपने सुना होगा कि एक एक परमिट में 10 हजार रुपये दिये जाते हैं। मानलें कि पहले किसी व्यक्ति ने 8 हजार देने का तय किया और दूसरे दिन कोई 10 हजार देने वाला आ गया तो उस

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

व्यक्ति के 8 हजार रुपये वापिस लौटा दिये जाते हैं इतनी तो ईमानदारी अभी है। लेकिन मैं इसमें भी किसी कर्मचारी को दोष नहीं देता इसमें भी अधिकारियों का ही दोष है। क्योंकि यदि आप उनसे एक भी नाजायज काम करावेंगे तो वे 10 काम अपने निश्चित रूप से करेंगे और अधिकारियों का डर नहीं रहेगा और इससे सारे राजस्थान को दुःख होगा।

इसलिए मै यह निवेदन करूंगा कि आप और हम यहां पर एक दूसरे पर किसी प्रकार का कीचड़ उछालने के बजाय हम दो करोड़ जनता के प्रतिनिधि यहां पर हैं उनके हित की बात करें और हमारे एक दूसरे पर कीचड़ उछालने से कोई काम नहीं होगा। यदि हमें देश का निर्माण करना है और जूझना है तो मै यह करूंगा कि अभी आबकारी मंत्री यहां पर नहीं हैं

एक माननीय सदस्य: बैठे हैं। (मंत्री महोदय की तरफ संबोधित करते हुए)

श्री मनोहरसिंह मेहता: आप नहीं हैं।

एक माननीय सदस्य: अभी तो आप ही हैं।

श्री मनोहरसिंह मेहता: आप क्षमा करें मुझे मालूम नहीं था।

मै उनसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूं कि जब आपने मंत्री पद की शपथ ली है। आप दिल्ली पहुंचिये और महात्मा गांधी के सामने प्रतिज्ञा लीजिये कि हे बापू। अब तो अक्टूबर के पहले पहले फौरन शराब बन्दी होगी और इसके प्रथम चरण में गारन्टी सिस्टम को समाप्त कर दीजिये। बोर्डर के लिये कहा जाता है और कई बार यह कहा जाता है कि बम्बई में शराब बन्दी असफल रही। मैं यह कहूंगा कि शराब बन्दी वहां पर बिल्कुल असफल हुई हो ऐसी बात नहीं है।

यदि आप चाहें कि शराब बन्दी केवल कानून से सफल हो तो यह सफल हो नहीं सकती। यह सुधार से भी सफल नहीं होगी क्योंकि अगर इससे सफल होगी तो हमारे मुनि और साधु और संत हजारों वर्षों से इसको रोकने के लिये उपदेश दे रहे हैं। भगवान बुद्ध ने कहा था कि तुम्हारी गर्दन भी अगर कटवानी पड़े तलवार के नीचे हो तो भी भयभीत मत होना क्योंकि वह बलिदान की कसौटी है। वह स्वर्ण कसौटी है। मगर शराब से हमेशा भयभीत रहना क्योंकि वह पाप की जननी है। वह तो २।। हजार वर्षों की बात हो गई जब महात्मा बुद्ध ने कहा था मगर अभी आप देखें तो आपको मालूम होगा कि महात्मा गांधी ने इसके लिये क्या कहा है। आप और हम इस बात को सभी जानते हैं। आप और हम इस बात को भी जानते हैं कि जिस व्यक्ति ने महात्मा गांधी को गोली मारी थी उसको भी उन्होंने हाथ जोड़ दिया और भगवान से प्रार्थना की कि भगवान उसको भी क्षमा करे। महात्मा गांधी कहते थे कि शराब की किसी की आदत पड़ गई है तो उसको इसी प्रकार से छुड़ाना चाहिये और रोकना चाहिये जैसे कोई बढ़ती हुई नदी है और उसके बीच में जाता है या कोई बच्चा हो और आग में जाता है तो बल प्रयोग करके भी उसको रोकना चाहिये। इससें शरीर और बुद्धि का नाश होता है। सभापति

(श्री मनोहरसिंह मेहता)
महोदया, समय समाप्त हो गया है इसलिये मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं ।

एक माननीय सदस्य : आप अपने साथियों को तो संभालें ।

श्री मनोहरसिंह मेहता : मैं इस पर भी निवेदन करना चाहता हूं ।

श्रीमती सभानेत्री : सदन का समय समाप्त हो गया है आप बाद में निवेदन करते रहना । सदन की कार्यवाही सोमवार दिनांक 8–5–67 को प्रातः 11 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है ।

(तदन्तर सदन की कार्यवाही 5 म. प. पर सोमवार 8–5–67 को प्रातः 11 बजे तक के लिये स्थगित की गई) ।

शुद्धि-पत्र

(कार्य-विवरण, दिनांक 6 मई, 1967)

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
5	11	गई हैं, अगर ?	गई हैं ? अगर
,,	18	जन्दा	जिन्दा
7	अन्तिम से 7	मवेशियों	मवेशियां
8	6	दिमा	दिया
10	19	मालूम हैं	मालूम है . . .
13	अन्तिम से 9	म	में
15	अन्तिम से 9	कि	
18	4	श्री खेतसंह	श्री खेतसिंह
25	अन्तिम से 6 व 8	वुटियां	त्रुटियां
29	9	मे	से
31-32	शीर्षक	तारांकित-6 मई, 1967 प्रश्नोत्तर	तारांकित प्रश्नोत्तर-6 मई, 1967-अ० स० के तारांकित प्रश्नोत्तर
31	अन्तिम से 4 व 5 के बीच में		अनुपस्थित सदस्यों के तारांकित प्रश्नोत्तर
35 से 40	शीर्षक	कार्य सलाहकार समिति के प्रतिवेदन—6 मई, 1967 पर विचार	स्थगन प्रस्तावों-6 मई, 1967 पर व्यवस्था
35	अन्तिम से 9 शीर्षक	श्री नदलाल	श्री नन्दलाल
36	10	श्री महन्द्रसिंह	श्री महेन्द्रसिंह
45	8	विधायक	विधायक, जो
46	18	ओपजिशन	अपोजिशन
,,	22	बद	बदल
,,	25	निकल कर	निकाल कर
,,	अन्तिम से 3	गद्दो	गद्दी
48	अन्तिम से 11	थह	यह
50	अन्तिम से 5	कह	कहा

1	2	3	4
51	3	सामान्म	सामान्य
54	अन्तिम से 10	नेब,	मेव,
,,	अन्तिम से 7	मैं	में
55	8	गवर्नमट	गवर्नमेंट
,,	14	ससे	इससे
56	14	वाद	वाद
,,	62	जुम्मेदार	जिम्मेदार
58	20	जादा	ज्यादा
,,	अन्तिम से 4	के	के लिये
60	16	के रूप	के रूप में
,,	20	कितना	
61	11	एक्स्केकर	एक्स्चेकर
,,	13	तक की	तक कि
,,	20	यह कर	यह कहकर
62	5	मन्त्रो	मन्त्री
,,	अन्तिम से 6	ममले	मामले
,,	अन्तिम से 5	कई कार	कई बार
63	9	मंत्र	मंत्री
65	10	ठेवेदारों	ठेकेदारों
66	10	ओैर	और
67	शीर्षक	7 मई,	6 मई,
,,	18	किये	किये
68	अन्तिम से 5	मन का	मन की
69	6	हिन्दुस्तान	हिन्दुस्तान
,,	10	करवय	करवाया
70	17	मन्त्रि	मन्त्रि-
,,	अन्तिम से 8	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा
72	3	बाच	बीच
73	12	ओर	और
74	15	ती	तो
,,	16	उसको	उसकी
76	10	मैं	में

1	2	3	4
77	5	कंया	किया
,,	13	तैयार	तैयार
78	2	jagrdars	jagirdars
81	2	श्रव	श्रब
82	अन्तिम से 3	हुँ	हूं
85	अन्तिम	××× अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाले गये।	---
86	अन्तिम	----	××× अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाले गये।
87	अन्तिम से 13	(जारी)	–
89	17	ता	तो
91	अन्तिम	भाई	सफाई
91	4, 7,	श्री विश्वम्वरनाथ जोशी	श्री विशम्वर नाथ जोशी
94	अन्तिम से 9	श्रीर	श्रीर
96	4	नाकामय व	नाकामयाव
102	13	श्री गिरधारेलाल व्यास	श्री गिरधारी लाल व्यास
106	6	आाने	आपने
108	4	बनी	बनती
109	शीर्ष	श्री वद्रीप्रसाद	श्री वद्रीप्रसाद गुप्ता
,,	20	एक मानर्नय	एक माननीय
110	18	श्री गिरधारीलाल शर्मा	श्री गिरधारीलाल व्यास
111	18	,,	
113	17	प्रनुमति	अनुमति
117	17	सुन	सुना
,,	23	म रात म	में रात मे
119	अन्तिम से 4	वटरी	क्टरी
120	19	पोटोग्राफ	फोटोग्राफ
122	अन्तिम से 11	ब तें	बातें
124	14	श्री भानुकुमार शास्त्री (अजमेर)	श्री भगवानदास शास्त्री (अजमेर पश्चिम)
127	12	14	में
131	1	मैं	में
,,	16	अग	अगर

1	2	3	4
131	25	माना ीय	माननीय
,,	अंतिम पंक्ति	स	से
133	11	विवान सभा	विधान सभा
135	14	उ ही	उन्हीं
,,	19	मे	से
136	19	सोवना	सोचना
;	अंतिम से 5	लोकाप्रय	लोकप्रिय
137	12	ड	हैं
,,	13	म	में
,,	अंतिम से 9	किम	किस
141	,,	बेब	बेच
142	4	कग्ना	करना
,,	18	जो हैं बूढे	जो बूढे
143	अंतिम से 9	ारेटर्स	आपरेटर्स
,,	,, 6	कग्ने	करने
144	19	श्री गोवुलप्रसाद	श्री गोकुलप्रसाद
146	अंतिम से 11	बोने	बोले
,,	,, 9	हए	हुए
147	अंतिम से 10	मा	मत
148	अंतिम से 6	कहीं	कहो
149	शीर्ष	(श्री गोकुल प्रसाद शर्मा)	(श्री श्रवणलाल)
,,	7	श्री विजयसिंह	श्री विजयसिंह
152	अंतिम से 9	भी वह वहं	भी वह
154	3	भी कमी	भी कभी
157	8	विट्टियें	चिट्ठियें
,,	14	ग्रोर	और
158	19 व 20	एक्पंच रिकर्ड पर नहीं रखा कर दिया जावे और	एकसपंज कर दिया जावे और रिकर्ड पर नहीं रखा
160	20	हारे 270 वोटों	हारे, 260 वोटों
161	14	को	की
167	23	होड्स	होल्ड्स
169	22	कि।	कि
176	23	पहले पहजे	पहले

1	2	3	4
176	25	हुबा	हुवा
177	6	की	को
177	8	की	ही
177	30	डेवीलाल जी	देवीलाल जी
179	8	एरिया नही देखा	एरिया को नहीं देखा
181	28	चाहता चाहता था	चाहता था
181	22 व 23 के बीच में		(सूची विस्तृत होने से विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)
182	10	कि जो काम	कि काम
183	20	सबसे बडी	सबसे बडा
186	9	उसको ओर	उसको ओर
187	9	किसी प्रकार	किसी भी प्रकार
190	6	पाइन्ट आर्डर	पाइन्ट आफ आर्डर
195	3	कि और सबसे	जी सबसे
195	3	कि गाय	कि जो गाय
195	20	कारण की आप	कारण कि आप
197	20	विरुद्ध आप के	विरुद्ध आपको
198	14	कि हमें तो	कि हम तो
203	1	(श्री मूल चन्द डागा)	(श्री मनोहरसिंह मेहता)
205	शीर्षक	6 मई, 1976	6 मई, 1967
206	9	घृत	धुत्त
207	17	यह करूंगा	कह करूंगा
209	शीर्षक	6 मई, 1960	6 मई, 1967